3 राजधानी
होटल, कॉम्पलेक्स समेत छह अवैध निर्माण सील

6 अभिमत
शहरों में बाढ़ की समस्या

11 विदेश
भारत और अमेरिका में दो अहम समझौते

12 स्पोर्ट्स
जैमी स्मिथ की शतकीय पारी से इंग्लैंड मजबूत

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 299
लखनऊ, शनिवार, 24 अगस्त, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

राष्ट्रपति ने अंतरिक्ष में बढ़ते मलबे पर चिंता व्यक्त की

राष्ट्रीय-10

साथ बैठकर हल खोजें यूक्रेन और रूस: मोदी

● प्रधानमंत्री ने जेलेंस्की से की वार्ता, गले लगकर नरेंद्र मोदी का यूक्रेन के राष्ट्रपति ने किया स्वागत

पीटीआई। कीव

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को यहां राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के साथ व्यापक वार्ता की और यूक्रेन तथा रूस के बीच जारी संघर्ष का समाधान निकालने के लिए एक-दूसरे से बातचीत की जरूरत पर बल दिया और कहा कि भारत, शांति के हर प्रयास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार है। मोदी ने चर्चा के दौरान एक ऐसा अभिनव समाधान विकसित ॅकरने के लिए सभी हितधारकों के बीच व्यावहारिक बातचीत की आवश्यकता जताई जो व्यापक स्वीकार्यता बनाने में मदद करे और क्षेत्र में शांति तथा स्थिरता में योगदान दे सके। वार्ता के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, दोनों पक्षों को एक साथ बैठना चाहिए और उन्हें इस संकट से बाहर आने के रास्ते तलाशने होंगे। आज मैं यूक्रेन की धरती पर आपके साथ शांति और आगे बढ़ने के मार्ग पर विशेष रूप से चर्चा करना चाहता हूं।

प्रधानमंत्री ने जेलेंस्की को भरोसा दिलाते हुए कहा, भारत, शांति के हर प्रयास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार है। अगर मैं व्यक्तिगत रूप से इसमें योगदान दे सकता हूं तो मैं ऐसा जरूर करना चाहूंगा। एक मित्र के रूप में, मैं आपको इसका

यूक्रेन के कीव पहुंचने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भारतीय समुदाय ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

विश्वास दिलाता हूं। उन्होंने कहा कि यूक्रेन के लोग भी जानते हैं कि भारत का शांति प्रयासों में सक्रिय योगदान रहा है और उसका दृष्टिकोण लोगों पर केंद्रित रहा है। उन्होंने कहा, मैं आपको और पूरे विश्व समुदाय को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यह भारत की प्रतिबद्धता है और हम मानते हैं कि संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान हमारे लिए सर्वोपरि है और हम इसका समर्थन करते हैं।

प्रधानमंत्री ने जेलेंस्की की मौजूदगी में अपनी रूस यात्रा और उस दौरान राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से हुई वार्ता का भी जिक्र किया और कहा कि उन्होंने रूस के राष्ट्रपति से स्पष्ट शब्दों में कहा था कि यह युद्ध का समय नहीं है। उन्होंने कहा, मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि किसी भी समस्या का समाधान कभी भी रणभूमि में नहीं होता है। समाधान केवल बातचीत, संवाद और कूटनीति के माध्यम से होता है और हमें समय बर्बाद किए बिना उस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने आज के दिन को ऐतिहासिक बताया और कहा कि भारत का प्रधानमंत्री आज पहली बार यूक्रेन की धरती पर आया है। यूक्रेन के 1991 में स्वतंत्र होने के बाद यह भारतीय प्रधानमंत्री की देश की पहली यात्रा है और यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है, जब यूक्रेन ने हाल में रूसी क्षेत्र में आक्रामक सैन्य अभियान चला रखा है। युद्ध की शुरुआत में भारतीय छात्रों की सुरक्षित वापसी में मदद के लिए मोदी ने जेलेंस्की का आभार जताया। रूस ने 24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन पर हमला किया था। तब से लेकर अभी तक दोनों देशों के बीच युद्ध जारी है। इस युद्ध में अब तक दोनों तरफ के बड़ी संख्या में लोग मारे जा चुके हैं जबकि लाखों की संख्या में लोग यूक्रेन छोड़कर चले गए हैं। मोदी और जेलेंस्की की वार्ता का ब्योरा देते हुए विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि प्रधानमंत्री ने जेलेंस्की को यूक्रेन में शांति बहाली के लिए हर संभव तरीके से योगदान करने की भारत की इच्छा से अवगत कराया। (शेष पृष्ठ 9)

अनिल अंबानी को प्रतिभूति बाजार से पांच साल के लिए किया बैन

पीटीआई। नई दिल्ली

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने उद्योगपति अनिल अंबानी तथा रिलायंस होम फाइनेंस के पूर्व प्रमुख अधिकारियों समेत 24 अन्य को कंपनी से धन के हेर-फेर के मामले में प्रतिभूति बाजार से पांच साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया है। सेबी ने अंबानी पर 25 करोड़ रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अंबानी को किसी भी सूचीबद्ध कंपनी या बाजार नियामक के साथ पंजीकृत किसी भी इकाई में निदेशक या प्रमुख प्रबंधकीय पद (केएमपी) लेने से भी पांच साल के लिए रोक लगा दी है। इसके अलावा 24 इकाइयों पर 21 करोड़ रुपए से लेकर 25 करोड़ रुपए तक का जुर्माना लगाया गया है। साथ ही नियामक ने रिलायंस होम फाइनेंस को छह महीने के लिए प्रतिभूति बाजार से प्रतिबंधित कर दिया है और उसपर छह लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। अनिल अंबानी नीत रिलायंस समूह की कंपनी को इस संबंध में भेजे ई-मेल का कोई जवाब नहीं मिला है।

रिलायंस होम फाइनेंस लिमिटेड के धन की कथित हेरा-फेरी की कई शिकायतें मिलने के बाद सेबी ने किसी भी नियामकीय उल्लंघन का पता लगाने के लिए वित्त वर्ष 2018-19 की अवधि के लिए जांच की। सेबी ने जांच में पाया कि अनिल अंबानी ने आरएचएफएल के केएमपी अमित बापना, रवींद्र सुधालकर और पिंकेश आर. शाह की मदद से कंपनी से धन निकालने के लिए एक धोखाधड़ी की योजना बनाई। इसमें इस पैसे को कंपनी से जुड़ी इकाइयों को कर्ज के रूप में दिखाया गया था। आरएचएफएल के निदेशक मंडल ने हालांकि इस तरह की ऋण देने की प्रथाओं को रोकने के लिए कड़े निर्देश जारी किए थे और कॉरपोरेट ऋणों की नियमित समीक्षा की थी, लेकिन कंपनी के प्रबंधन ने इन आदेशों की अनदेखी की। नियामक ने कहा कि इसके अलावा, शेष इकाइयों ने या तो अवैध रूप से हासिल कर्ज के प्राप्तकर्ता की भूमिका या आरएचएफएल से धन को अवैध रूप से कहीं और पहुंचाने की प्रक्रिया को अंजाम देने में भूमिका निभाई है। (शेष पृष्ठ 9)

नेपाल में भारतीय पर्यटक बस नदी में गिरी, 27 की मौत

नेपाल के तनहुन जिले के आइना पहाड़ा में शुक्रवार को भारतीय पर्यटक बस के पलटने के बाद जारी राहत और बचाव कार्य

पीटीआई। काठमांडू, लखनऊ

मध्य नेपाल में एक भारतीय पर्यटक बस शुक्रवार को राजमार्ग से पलटकर 150 मीटर नीचे तेज बहाव वाली मर्स्यांगदी नदी में गिर गई, जिससे कम के कम 27 लोगों की मौत हो गई, जबकि 16 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर की यह बस पोखरा से काठमांडू की ओर जा रही थी, तभी यह तनहुन जिले के आइना पहाड़ा में राजमार्ग से पलट गई। बस में चालक और सह-चालक समेत 43 लोग सवार थे। सशस्त्र पुलिस बल (एपीएफ) के उप प्रवक्ता शैलेन्द्र थापा ने पीटीआई-भाषा को बताया कि 16 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 11 ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। उन्होंने बताया कि 16 लोग घायल हुए हैं, जिन्हें हवाई मार्ग से काठमांडू लाया गया है और त्रिभुवन विश्वविद्यालय शिक्षण अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

समाचार पोर्टल माई रिपब्लिका की खबर के मुताबिक, बस में सवार यात्री 104 भारतीय तीर्थयात्रियों के एक समूह का हिस्सा थे, जो दो दिन पहले हिमालई देश की 10-दिवसीय यात्रा के लिए तीन बसों में सवार होकर महाराष्ट्र से नेपाल पहुंचे थे। तीर्थयात्री जलगांव जिले के भुसावल और आसपास के गांव से आए थे। पोखरा में दो दिन घूमने के बाद तीनों बस शुक्रवार सुबह राजधानी काठमांडू के लिए रवाना हुईं। कुरिन्तार के सशस्त्र पुलिस बल (एपीएफ) के प्रमुख माधव प्रसाद पौडेल ने कहा कि तीनों बस में यात्रा करने वाले ज्यादातर यात्री परिवार के सदस्य और रिश्तेदार थे। दुर्घटनाग्रस्त बस में सवार 43 यात्रियों के नामों की सूची जारी कर दी गई है। भारतीय दूतावास ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, पोखरा से काठमांडू जा रही एक भारतीय पर्यटक बस में लगभग 43 भारतीय सवार थे। यह बस आज मर्स्यांगदी नदी में गिर गई।

इस बीच, उत्तर प्रदेश सरकार ने नेपाल में भारतीय यात्रियों को ले जा रही एक बस के नदी में गिर जाने के बाद घटना का संज्ञान लेते हुए राहत पहुंचाने के लिए एक उप जिलाधिकारी (एसडीएम) को नेपाल भेजा है और एक अपर जिलाधिकारी (एडीएम) को समन्वय की जिम्मेदारी सौंपी है। पहाड़ी इलाकों की वजह से नेपाल की नदियों में आमतौर पर बहाव तेज होता है। पिछले कुछ दिनों में हुई भारी बारिश के कारण जलस्रोत उफान पर हैं। मानसून के मौसम में जून से सितंबर तक नेपाल में भारी बारिश होती है, जिससे अक्सर इस पर्वतीय हिमालई देश में भूस्खलन की घटनाएं होती हैं। पिछले महीने 65 यात्रियों को ले जा रही दो बस नेपाल में भूस्खलन के कारण उफनती त्रिशूली नदी में बह गईं थीं। इस हादसे के बाद भारत के राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की 12 सदस्यीय टीम की तैनाती सहित व्यापक खोज अभियान के बावजूद अभी तक दोनों बसों और भूस्खलन में बह गए कई यात्रियों का पता नहीं चल पाया है। केवल पांच भारतीय नागरिकों के शव बरामद किए जा सके थे औ दो अब भी लापता हैं। (पृष्ठ 4 भी देखें)

जनता के बीच रहें और संवाद-समन्वय बनाए रखें: योगी

● गाजियाबाद उपचुनाव के दृष्टिगत मुख्यमंत्री ने भाजपा कार्यकर्ताओं से किया संवाद

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गाजियाबाद

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि र्यकर्ता अतिआत्मविश्वास से बचें। आमजन के बीच रहकर संवाद और समन्वय अवश्य स्थापित करें। केंद्र व प्रदेश सरकार ने बिना भेदभाव के हर वर्ग के लिए शासन की योजनाएं उपलब्ध कराई हैं। सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों की जानकारी देकर मतदाताओं से भारतीय जनता पार्टी के लिए वोट की अपील करें। सभी को अपने-अपने टीम में 10-10 व्यक्तियों को जोड़कर बूथ पर डेरा डाल देना है ।'बूथ जीता चुनाव जीता' ही जीत का मूल मंत्र है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को गाजियाबाद विधानसभा उपचुनाव के मद्देनजर कार्यकर्ताओं के साथ संवाद कर रहे थे। सीएम ने सभी मोर्चा व प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों से संवाद किया। सीएम ने पहले सभी पदाधिकारियों की सुनी, फिर गाजियाबाद विधानसभा उपचुनाव में फतह का मूलमंत्र दिया। सीएम ने कार्यकर्ताओं को मंत्र दिया कि बूथ पर काम करें। बूथ जीत गए तो चुनाव जीत गए। सीएम ने वोटर लिस्ट की चर्चा की। बोले कि वोटर

लिस्ट को लेकर संजीदगी रहे। सही वोटर बनें। वोटर लिस्ट फाइनल होने तक इसका पुनरीक्षण करते रहें। सीएम योगी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि कोई भी मतदाता वोट देने से वंचित न रहे, इसके लिए घर-घर जाकर मतदाताओं से संपर्क करें और उन्हें सरकार द्वारा दी जा रही समस्त लाभकारी योजनाओं के बारे में बताएं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आरक्षण व संविधान के मुद्दे पर विपक्ष ने खूब अफवाह फैलाई। उपचुनाव में विपक्षी दल फिर वोट मांगने आएंगे, उनके नेताओं से पूछिए कि आखिर एक-एक लाख कहां हैं। अपने वोट के जरिए उनके झूठ का पर्दाफाश कीजिए। सपा-कांग्रेस ने आमजन को गुमराह करने की कोशिश की है। उनके झूठ का पर्दाफाश होना चाहिए। वहीं आमजन को भी बताइए कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संविधान की मूल प्रति को सिर पर रखकर संसद तक गए थे। (शेष पृष्ठ 9)

सीबीआई ने कोर्ट से कहा, केजरीवाल कर सकते हैं सबूतों से छेड़छाड़

राजेश कुमार। नई दिल्ली

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया कि अगर अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत पर रिहा किया गया तो वह सबूतों के साथ छेड़छाड़ कर सकते हैं और आबकारी शुल्क नीति घोटाला मामले में चल रही जांच में बाधा डाल सकते हैं। आबकारी नीति घोटाला मामले में गिरफ्तारी को चुनौती देने और जमानत की मांग करने वाली केजरीवाल की याचिकाओं का विरोध करते हुए सुप्रीम कोर्ट में दायर जवाबी हलफनामे में, सीबीआई ने कहा है कि आबकारी शुल्क नीति के निर्माण में सभी महत्वपूर्ण निर्णय केजरीवाल के आदेश पर लिए गए थे और इसके पर्याप्त सबूत हैं। उसकी संलिप्तता की ओर इशारा कर रहा है। पीठ ने इस मामले में सीबीआई को अपना जवाबी हलफनामा दायर करने की अनुमति दी और केजरीवाल को जवाब दाखिल करने के लिए दो दिन का समय दिया तथा मामले को 5 सितंबर तक के लिए टाल दिया। सीबीआई ने अपने हलफनामे में कहा, याचिकाकर्ता के पास आबकारी शुल्क सहित कोई भी मंत्री पद नहीं है। हालांकि, समय के साथ यह सामने आया कि नई आबकारी शुल्क नीति के निर्माण में सभी महत्वपूर्ण निर्णय याचिकाकर्ता के आदेश पर, उनकी तत्कालीन उपमुख्यमंत्री और आबकारी शुल्क मंत्री मनीष सिसौदिया की मिलीभगत से लिए गए थे। केजरीवाल की गिरफ्तारी को सही ठहराते हुए, सीबीआई ने दावा किया कि 25 जून, 2024 को उनसे पूछताछ के बाद यह जरूरी हो गया था क्योंकि वह टालमटोल कर रहे थे और सहयोग नहीं कर रहे थे। उन्होंने रची गई आपराधिक साजिश के संबंध में अपनी और अन्य सह-आरोपियों की भूमिका के बारे में गोलमोल जवाब दिए। सीबीआई ने कहा, उनके जवाब जांच के दौरान सीबीआई द्वारा एकत्र किए गए मौखिक और दस्तावेजी सबूतों के विपरीत थे (शेष पृष्ठ 9)

सभी जगह शांतिपूर्ण ढंग से हुई पुलिस भर्ती परीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के इतिहास की सबसे बड़ी पुलिस भर्ती परीक्षा की शुरुआत हो गई। पहले दिन प्रदेश के 67 जिलों के 1174 परीक्षा केंद्र पर परीक्षा सकुशल संपन्न कराई गई। दो पालियों में आयोजित परीक्षा में करीब 4 लाख 50 हजार अभ्यर्थी शामिल हुए। सभी अभ्यर्थी कड़ी सुरक्षा और कई चरणों की चेकिंग के बाद परीक्षा में शामिल हुए। परीक्षा के दौरान एसटीएफ, यूपी पुलिस और पीएसी के जवान चप्पे-चप्पे पर नजर आए। इसके अलावा सीसीटीवी और ड्रोन कैमरों से भी पल-पल की नजर रखी गयी। वहीं डीजीपी ने भी ग्राउंड जीरो पर उतरकर स्थितियों का जायजा लिया। सभी सेंटर के अंदर और बाहर चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था के चलते प्रदेश में कहीं भी किसी तरह की अप्रिय घटना नहीं घटित हुई। सीएम योगी की मंशा के अनुरूप परीक्षा को पूरी शुचिता और पारदर्शिता के साथ संपन्न कराने में प्रशासन सफल रहा। राजधानी लखनऊ में 81 परीक्षा केंद्रों पर दो पालियों में 56,674 परीक्षार्थी इसमें शामिल हुए। (विस्तृत समाचार पृष्ठ 3)

डीजीसीए ने एयर इंडिया पर 99 लाख का लगाया जुर्माना

पीटीआई। नई दिल्ली

नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने अयोग्य चालक दल के सदस्यों के साथ उड़ान का संचालन करने के लिए एयर इंडिया पर 90 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। विमानन नियामक ने एयरलाइन के प्रशिक्षण निदेशक को छह माह के लिए निलंबित भी कर दिया है। इसके अलावा, नियामक ने इस चूक के लिए एयर इंडिया के परिचालन निदेशक पंकुल माथुर पर छह लाख रुपए तथा प्रशिक्षण निदेशक मनीष वासवदा पर तीन लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। डीजीसीए ने शुक्रवार को बयान में कहा कि उसने संबंधित पायलट को आगाह किया है कि भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो। इसमें कहा गया, एयर इंडिया लिमिटेड ने एक गैर-प्रशिक्षक लाइन कैप्टन की अगुवाई में एक गैर-लाइन-रिलीज़ प्रथम अधिकारी के साथ मिलकर एक उड़ान संचालित की। नियामक ने इसे एक गंभीर घटना माना है। यह एक बड़ी सुरक्षा चूक है। डीजीसीए ने उल्लंघन के लिए एयर इंडिया पर 90 लाख रुपए, परिचालन निदेशक पर (शेष पृष्ठ 9)

अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस पर किया जवाबी हमला

मोहित कंधारी। जम्मू

कांग्रेस पार्टी को मुश्किल में डालते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को 18 सितंबर से शुरू होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों में जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ गठबंधन करने के अपने फैसले पर जवाबी हमला किया। सबसे पुरानी पार्टी पर सत्ता के लालच में देश की एकता और सुरक्षा को बार-बार खतरे में डालने का आरोप लगाते हुए, केंद्रीय गृह मंत्री ने माइक्रोब्लॉगिंग साइट एक्स पर कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी के लिए 10 सीधे सवाल पोस्ट करते हुए स्पष्टीकरण भी मांगा।

ग्राउंड जीरो पर पार्टी के चुनाव अभियान को शुरू करने से पहले, भाजपा के शीर्ष अधिकारी जम्मू कश्मीर की 90 विधानसभा सीटों के लिए पार्टी उम्मीदवारों के नामों को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में भी हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एनसी-कांग्रेस गठबंधन ने अपने सीट बंटवारे के फॉर्मूले को लगभग अंतिम रूप दे दिया है। अंदरूनी रिपोर्टों से पता चलता है कि नेशनल कॉन्फ्रेंस कम से कम 60 विधानसभा सीटों (कश्मीर से 41 और जम्मू प्रांत से 19) पर अपना दावा कर रही है और कांग्रेस को 30 सीटें (जम्मू से 24 और कश्मीर घाटी से 6) की पेशकश कर रही है। गठबंधन सहयोगियों ने अभी तक सीट-बंटवारे की अंतिम व्यवस्था की औपचारिक घोषणा नहीं की है।

नई दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 25 अगस्त को केंद्रीय चुनाव समिति की अंतिम बैठक से पहले पार्टी के उम्मीदवारों के रिपोर्ट कार्ड की समीक्षा के लिए शुक्रवार को कोर ग्रुप की बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में अमित शाह और कोर ग्रुप के सभी सदस्य, केंद्रीय मंत्री और चुनाव प्रभारी जी किशन रेड्डी और राम माधव सहित अन्य नेता, राष्ट्रीय महासचिव और भाजपा जम्मू-कश्मीर प्रभारी तरुण चुघ, सह-प्रभारी आशीष सूद, सांसद जम्मू जुगल किशोर, प्रदेश महासचिव (संगठन) अशोक कौल, प्रदेश अध्यक्ष रविंदर रैना, केंद्रीय मंत्री और जम्मू से सांसद डॉ. जितेंद्र सिंह भी शामिल हुए।

इस बीच, नेशनल कॉन्फ्रेंस के घोषणापत्र का जिक्र करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने पूछा, क्या कांग्रेस नेशनल कॉन्फ्रेंस के जम्मू-कश्मीर के लिए अलग झंडे के वादे का समर्थन करती है? क्या राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी अनुच्छेद 370 और 35ए को बहाल करने के जेकेएनसी के फैसले का समर्थन करते हैं? जिससे जम्मू-कश्मीर को अशांति और आतंकवाद के युग में वापस धकेल दिया जाएगा? केंद्रीय गृह मंत्री ने पूछा कि क्या कांग्रेस कश्मीर के युवाओं के बजाय पाकिस्तान के साथ बातचीत करके अलगाववाद को फिर से बढ़ावा देने और पाकिस्तान के साथ एलओसी व्यापार शुरू करने के नेशनल कॉन्फ्रेंस के फैसले का समर्थन करती है, जिससे सीमा पार आतंकवाद और उसके पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा मिलता है। कांग्रेस और राहुल गांधी से पूछे गए उनके अन्य प्रश्नों में यह भी शामिल था कि क्या पार्टी आतंकवाद और पथराव में शामिल लोगों के रिश्तेदारों (शेष पृष्ठ 9)

जनता को जनार्दन मानकर आगे बढ़ने वाली सत्ता के निर्णय होते हैं लोकप्रिय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गाजियाबाद

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने के लिए भले ही हमने देश में संसदीय लोकतंत्र को अपनाया हो पर न्यायपालिका, कार्यपालिका व विधायिका की भी अपनी लक्ष्मण रेखा है, लेकिन चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया की भूमिका को कोई नजरअंदाज नहीं कर सकता है। लोगों को सही तथ्यों से अवगत कराना, सही जानकारी उपलब्ध करवाना, आवश्यकता पड़ने पर किसी बड़े ऑपरेशन का नेतृत्व करना और अगर लेखनी के माध्यम से किसी का पोस्टमार्टम भी करना है तो मीडिया की भूमिका दिखती है। हमने आजादी के बाद भी अलग-अलग समय, अलग-अलग स्तर पर इसे महसूस किया है।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को गाजियाबाद में एक निजी चैनल के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। योगी ने कहा कि भारत को लोकतंत्र की जननी के रूप में जाना जाता है। हम सभी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में रह रहे हैं। ऐतिहासिक व पौराणिक कालखंड में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं, जब आम जनभावनाओं को सर्वोपरि रखकर उस समय की राजसत्ता ने निर्णय लेने में कोई संकोच नहीं किया। जनता को जनार्दन मानकर जब भी शासन सत्ता आगे बढ़ती है तो उसके निर्णय लोकप्रिय, सर्वमान्य व सर्वग्राह्य बनते हैं।

सीएम योगी ने कहा कि हमें समय के अनुरूप बदलना और चलना होगा। समाज, युवा, सामान्य गृहस्थ, किसान, आधी आबादी की आवश्यकता क्या है, मीडिया उनके पसंद के अनुरूप जानकारी उपलब्ध करा सके। एक समय था, जब लोग रेडियो, समाचार पत्रों के माध्यम से देश-दुनिया की घटनाओं को देखते थे। बाद में मीडिया में अनेक चैनल आए, जितनी तेजी के साथ प्रचार-प्रसार किया, उतनी तेजी से उनके सामने चुनौतियां भी आईं। इसके बाद सोशल मीडिया समेत अलग-अलग प्लेटफॉर्म भी बन गए।

सीएम ने कहा कि इस चुनाव में हमने देखा कि डिजिटल व सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म कैसे प्रभावित कर रहे थे। अगले दो-पांच वर्ष में जब हम चुनाव में जाएंगे तो हो सकता है कि प्रिंट व विजुअल मीडिया की भूमिका कुछ गौण हो, डिजिटल मीडिया और प्रभावी हो जाए। इन सबको समाहित करते हुए आज इस चैनल का शुभारंभ हो रहा है। मुझे विश्वास है कि भारत के डीएनए के अनुरूप खबरों को प्रत्येक भारतवासी तक प्रभावी-निष्पक्ष ढंग से पहुंचाने के लिए कलम की ताकत का अहसास कराने में यह मीडिया संस्थान सफल होगा। सीएम ने विश्वास जताया कि यह ग्रुप लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए मीडिया का प्रभावी स्तंभ बनने के साथ-साथ आम जनमानस के विश्वास का प्रतीक भी बनेगा। इस अवसर पर प्रदेश सरकार के मंत्री जेपीएस राठौर, पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. वीके सिंह समेत अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर किसी भी नई परंपरा की अनुमति कदापि न दी जाए: प्रशांत कुमार

● प्रदेश में प्रभावी पुलिस प्रबंध के संबंध में कई बिन्दुओं पर डीजीपी ने जारी किए विस्तृत निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर प्रदेश में प्रभावी पुलिस प्रबंध किए जाने के संबंध में कई बिन्दुओं पर विस्तृत निर्देश दिए हैं। उन्होंने फील्ड में तैनात पुलिस के सभी आला अधिकारियों को जारी अपने निर्देशों में कहा है कि प्रत्येक थाने पर उपलब्ध त्यौहार रजिस्टर तथा रजिस्टर नं-8 में उपलब्ध प्रविष्टियों का अध्ययन कर लिया जाए तथा किसी नई परम्परा की अनुमति कदापि न दी जाए। असामाजिक/अवांछनीय तत्वों की सूचियों को अद्यावधिक कर लिया जाय तथा आवश्यकतानुसार उनके विरुद्ध कड़ी निरोधात्मक कार्यवाही सुनिश्चित की जाये। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से सम्बन्धित समस्त आयोजन, लीला स्थल, पंडाल, मंदिर एवं जुलूसों को सूचीबद्ध कर योजनाबद्ध तरीके से पुलिस व्यवस्थापन किया जाये। समस्त आयोजनों/कार्यक्रमों में आने वाले श्रद्धालुओं की सम्भावित संख्या का आंकलन करते हुये तद्नुसार सुदृढ़ सुरक्षा एवं यातायात प्रबन्धन किया जाये।

जनपदों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के विभिन्न कार्यक्रमों, आयोजकों / प्रबन्धकों तथा धर्मगुरुओं के साथ गोष्ठी कर ली जाये तथा संज्ञान में लायी गयी समस्याओं का सम्बन्धित विभाग से समन्वय स्थापित कर समय से निस्तारण कराया जाये। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व से सम्बन्धित जिन-जिन स्थानों पर विगत वर्षों में अथवा इस वर्ष किसी प्रकार का विवाद परिलक्षित हुआ हो, वहां पुलिस एवं राजस्व विभाग के राजपत्रित अधिकारियों द्वारा स्थिति का अध्ययन कर विवाद को सुलझाने तथा संवेदनशीलता को दूर करने के लिये कार्यवाही सुनिश्चित की जाये। बीट भ्रमण के दौरान द्वारा सभी प्रकार के विवाद आदि की गहनता से जांच कर ली जाय एवं बीट सूचना प्राप्त होते ही वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मौके पर जाकर समय रहते विवाद का निस्तारण कराया जाय तथा आवश्यकतानुसार विवाद स्थलों, मार्गो का भ्रमण जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, उपजिलाधिकारी, क्षेत्राधिकारी द्वारा भी कर लिया जाये।

उप राष्ट्रपति ने की सीएम योगी और उनके नेतृत्व में यूपी के विकास मॉडल की सराहना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ नई दिल्ली

● मुख्यमंत्री ने उपराष्ट्रपति से मिलकर जताया आभार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को दिल्ली में उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से शिष्टाचार भेंट की। सीएम योगी ने सुबह उप राष्ट्रपति के आवास पर पहुंचकर उनका हालचाल जाना। वहीं उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सीएम योगी की सराहना की। उप राष्ट्रपति ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के विकास मॉडल की प्रशंसा की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा कि उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से नई दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की। अपना बहुमूल्य समय प्रदान करने के लिए आपका हार्दिक आभार। दूसरी तरफ, उपराष्ट्रपति के 'एक्स' हैंडल से भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मुलाकात की फोटो पोस्ट करते हुए जानकारी दी गई।

देश के सबसे युवा राज्य में मुख्यमंत्री का सर्वाधिक जोर स्वरोजगार पर

● युवाओं को प्रशिक्षण देकर कौशल निखारने और आत्मनिर्भर बनाने के लिए यूपी में चल रहीं कई योजनाएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी का शुरू से ही जोर स्वरोजगार पर रहा है। चूंकि प्रदेश की आबादी सर्वाधिक है, इसी लिहाज से यूपी देश का सबसे युवा राज्य भी है। यहां के युवाओं को उनकी रुचि के अनुसार प्रशिक्षण देकर उनके कौशल को निखारा जा सकता है, उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इसके कई लाभ होंगे। प्रशिक्षित युवाओं की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में श्रम की कीमत बढ़ जाएगी। प्रशिक्षण प्राप्त जो युवा स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार स्थापित करना चाहते हैं उनकी भी सरकार उदार शर्तों पर वित्तीय मदद के साथ पैकेजिंग, ब्रांडिंग और बाजार उपलब्ध कराने तक में मदद कर रही है। एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी), कौशल विकास कार्यक्रम, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना, स्टार्टअप पॉलिसी, एमएसएमई को प्रोत्साहन ऐसी ही योजनाएं हैं जिनके जरिये उत्तर प्रदेश अपनी अर्थव्यवस्था का कायाकल्प कर रहा है। एक तरफ प्रदेश में इन्वेस्टर्स समिट के जरिये कई नामचीन इंडस्ट्रियल घराने और खुद सरकार भी उद्योगों में भारी भरकम निवेश कर रही है। देश का दूसरा डिफेंस सेक्टर इसका प्रमाण है। दूसरी तरफ सीएम योगी की मंशा है कि क्षेत्र विशेष के उद्योगों के अनुसार ही युवाओं के कौशल का भी विकास हो। इससे वह स्थानीय स्तर पर रोजगार पाकर या खुद का रोजगार कर घर परिवार की जिम्मेदारी देखते हुए अधिक खुशहाल रह सकते हैं। हाल ही में सहारनपुर के रोजगार मेले में मुख्यमंत्री योगी ने बताया कि सरकार युवाओं के रोजगार और स्वरोजगारइसी के लिए दक्ष बनाने के मकसद से प्रदेश के 150 आईटीआई (इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स) को प्रशिक्षण और बुनियादी स्तर की सुविधाओं के मामले में वैश्विक स्तर का बना रही है।

व्यापार मंडल के प्रतिनिधिमंडल ने की दिल्ली में राजनाथ सिंह से मुलाकात

● रक्षा मंत्री को पत्र सौंपकर की राजधानी के गऊ घाट पर पक्का पुल बनवाए जाने की मांग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

रक्षा मंत्री व लखनऊ के सांसद राजनाथ सिंह से दिल्ली स्थित उनके आवास पर शुक्रवार को भारतीय किसान-उद्योग-व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष व भाजपा नेता अजय त्रिपाठी मुन्ना के नेतृत्व में पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस दौरान अजय त्रिपाठी मुन्ना ने लखनऊ वासियो की तरफ से राजनाथ सिंह का शाल पहना कर स्वागत और सम्मान किया। रक्षामंत्री ने सभी का हाल-चाल जाना और लखनऊ में चल रहे विकास कार्य की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि लखनऊ में और भी विकास कार्य जल्द-से-जल्द प्रारम्भ कराए जाएंगे। मुलाकात के दौरान अजय त्रिपाठी मुन्ना ने पुराने लखनऊ को फैजुल्लागंज से जोड़ने वाले गोमती नदी के गऊ घाट पर बने पीपे वाले पुल की जगह पक्का पुल बनाए जाने के सम्बन्ध में रक्षा मंत्री को अवगत कराते हुए पत्र भी सौंपा।

देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री बने योगी

● 'मूड ऑफ द नेशन' सर्वे में योगी देश में नंबर वन, केजरीवाल, ममता बनर्जी, एम के स्टालिन और चंद्रबाबू नायडू बहुत पीछे

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बीते साढ़े सात साल में उत्तर प्रदेश की दिशा और दशा को बदलने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक बार फिर देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री बनकर उभरे हैं। 'मूड ऑफ द नेशन' सर्वे में योगी को नंबर वन सीएम के तौर पर जनता ने चुना है। देशभर में 1.36 लाख से अधिक जनता के बीच हुए सर्वे में 33 प्रतिशत से अधिक लोगों ने योगी को बेस्ट सीएम माना है। योगी इस सर्वे में लगातार तीसरी बार देश के बेस्ट चीफ मिनिस्टर चुने गये हैं। वहीं दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी, तमिलनाडु के सीएम एम के स्टालिन और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से बहुत पीछे हैं। सर्वे में देश के 30 राज्यों की जनता से सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के बारे में पूछे गये सवालों में योगी आदित्यनाथ को सर्वाधिक मत मिले हैं। जनता से पूछा गया कि वो किसे देश का सबसे बेहतरीन मुख्यमंत्री मानते हैं, इसपर 33 प्रतिशत से अधिक लोगों ने योगी आदित्यनाथ के नाम पर अपनी मुहर लगाई है। इस सर्वे में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को मात्र 13.8 प्रतिशत लोगों ने लोकप्रिय माना है, जबकि पश्चिम बंगाल की सीएम लिस्ट में तीसरे स्थान पर हैं। उन्हें 9.1 प्रतिशत लोगों ने समर्थन दिया। वहीं चौथे नंबर पर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन हैं, जिन्हें 4.7 प्रतिशत मत मिला। इसी तरह पांचवें नंबर पर आंध्र प्रदेश के सीएम चंद्रबाबू नायडू हैं, जिन्हें 4.6 फीसदी लोगों ने समर्थन दिया। इस लिस्ट में महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे, कर्नाटक के सीएम सिद्दारमैया, असम के हिमंता बिस्वा सरमा, उत्तराखंड के पुष्कर सिंह धामी और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भी कुछ हद तक समर्थन मिला है।

कार्यालय अपर जिलाधिकारी (वि०रा०)/विशेष विवाह अधिकारी, प्रयागराज।
पत्र संख्या
वाद लि०/विवाह/2024 दिनांक अगस्त 2024
सार्वजनिक नोटिस अन्तर्गत धारा-5
सुश्री नंदिता त्रिपाठी पुत्री श्री विजय कुमार त्रिपाठी निवासिनी-96बी, नेवादा, अशोक नगर प्रयागराज एवं श्री अंकित आर्थर विलियम्स पुत्र श्री सुशील थियोडोर विलियम्स निवासी अपार्टमेंट नं०-303, पूनम अपार्टमेंट, फेज-2, 7/7, लूकरगंज, प्रयागराज द्वारा विशेष विवाह अधिनियम-1954 की धारा-05 के अन्तर्गत विवाह करने हेतु इस कार्यालय में उपस्थित होकर प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया गया है। यदि इस विवाह के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति 30 दिन के अन्दर किसी भी कार्यदिवस में अधोहस्ताक्षरी के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।
अपर जिलाधिकारी (वि०/रा०)
विशेष विवाह अधिकारी, प्रयागराज।
दिनांक: 17 अगस्त, 2024

एससी/एसटी के हित के मामले में इण्डी गठबंधन की भी चुप्पी घातक: मायावती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एससी एसटी रिजर्वेशन में कैटेगरी और क्रीमीलेयर को लेकर बसपा प्रमुख मायावती ने केंद्र सरकार पर हमला बोला है। साथ ही समाजवादी पार्टी और कांग्रेस की चुप्पी को लेकर भी निशाना साधा। बसपा सुप्रीमो ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि बीजेपी का एससी/एसटी आरक्षण विरोधी रवैया बरकरार है। सपा व इनके इण्डी गठबंधन की भी चुप्पी उतनी ही घातक है। इससे यह फिर से साबित है कि एससी एसटी वर्गों के सही हित, कल्याण व उत्थान के मामले में दोनों ही पार्टियाँ व इनके गठबंधन एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। शुक्रवार को बसपा सुप्रीमो मायावती ने सोशल मीडिया पर लिखते हुए कहा कि एससी/एसटी आरक्षण में वर्गीकरण व क्रीमीलेयर का नया नियम लागू करने के मा. सुप्रीम कोर्ट के 1 अगस्त 2024 के निर्णय के विरुद्ध जन अपेक्षा के अनुसार पुरानी व्यवस्था बहाल रखने के लिए केन्द्र द्वारा अभी तक भी कोई ठोस कदम नहीं उठाया जाना यह अति-दु:खद व चिन्ताजनक। इसको लेकर 21 अगस्त के भारत बंद के बावजूद अगर केन्द्र इसमें जरूरी सुधार के लिए गंभीर नहीं तो यह सोचने वाली बात है। पहले मा. कोर्ट में लचर पैरवी और अब उसको लेकर संविधान संशोधन बिल नहीं लाने से साबित है कि बीजेपी का एससी/एसटी आरक्षण विरोधी रवैया पूर्व की तीव्रता के साथ बरकरार है।

भाजपा कार्यकर्ता हताश होकर बूथ छोड़कर भाग चुका है: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि अब जब भाजपा के संगी-साथी कह रहे हैं कि वो बूथ पर जाकर व्यवस्था संभालेंगे तो इसका मतलब साफ है कि वो लोकसभा चुनाव में हुई ऐतिहासिक पराजय को देखते हुए, ये मानकर चल रहे हैं कि भाजपा का कार्यकर्ता हताश होकर बूथ छोड़कर भाग चुका है या फिर अब भाजपा के मुखौटाधारी केवल सत्ता लोलुप संगी-साथियों को भाजपा के कार्यकर्ताओं पर भरोसा नहीं रहा है।

अखिलेश यादव ने कहा कि दरअसल चुनावी हार के बाद भाजपाई गुटों ने आपस में विश्वास खो दिया है। इसका एक और पहलू यह भी है कि भाजपा का 'संगी-साथी' पक्ष ये दिखाना चाहता है कि हार का कारण वो नहीं था, वो तो अभी भी शक्तिशाली हैं, कमज़ोर तो भाजपा हुई है। इन दोनों ही परिस्थितियों में यह तो साबित होता है कि भाजपाइयों ने हार स्वीकार कर ली है और अब भविष्य के लिए बेहद चिंतित हैं, लेकिन आपस में दोषारोपण करके, न तो ये एक-दूसरे का भरोसा जीत पाएंगे और न ही कोई आगामी चुनाव। बांटने की राजनीति करनेवाले लोग ख़ुद बंट गये हैं। यादव ने कहा कि भाजपा अपनी तथाकथित चाणक्य नीति के तहत जिन 'पन्ना प्रमुखों' की बात करती थी, अब क्या वो इतिहास बन गये? आज अगर वे उपलब्ध नहीं हैं तो उसके पीछे कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं। अब भाजपा के जो गिने-चुने कार्यकर्ता बाक़ी है। वे ये सोचकर हताश हैं कि वर्तमान परिस्थिति में, जबकि समाज का 90 प्रतिशत पीडीए समाज जाग उठा है और पीडीए की बात करने वालों के साथ खड़ा है तो फिर वे किसके पास जाकर वोट मांगें और 90 प्रतिशत पीडीए समाज के सामने आकर क्यों उनके विरोधी होने का ठप्पा ख़ुद पर लगाएं, आख़िरकार उन्हें भी तो उसी 90 प्रतिशत समाज के बीच ही रहना है। ऐसे भूतपूर्व भाजपाई पन्ना प्रमुख ये सच्चाई भी जान चुके हैं कि भाजपा में किसी की कोई सुनवाई नहीं है, तो ऐसे दल में रहकर कभी भी कोई मान-सम्मान-स्थान उन्हें मिलने वाला नहीं है। वे ऐसे दलों की सच्चाई भी जान चुके हैं जो भाजपा की राजनीति के मोहरे बनकर काम कर रहे हैं।

कांग्रेस ने किया दिव्यांग महागठबंधन का गठन, मनीष श्रीवास्तव बने अध्यक्ष

● नवनियुक्त अध्यक्ष ने कहा, प्रदेश के दिव्यांगजनों के अधिकारों के लिए सड़कों पर होगा संघर्ष

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी निशक्तजन प्रकोष्ठ के चेयरमैन मनीष प्रसाद श्रीवास्तव के नेतृत्व में आज कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश दिव्यांगजनों को एकजुट करने की दिशा में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में प्रदेश के कई दिव्यांग संगठनों के प्रमुखजन भी शामिल रहे। बैठक में प्रदेश के सभी दिव्यांग संगठनों को एक मंच पर लाने के लिए 'दिव्यांग महागठबन्धन' की कार्यकारिणी का ऐलान किया गया। जिसमें कांग्रेस निशक्तजन (विकलांग) प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष मनीष श्रीवास्तव को 'दिव्यांग महागठबन्धन' का अध्यक्ष तथा प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष जितेन्द्र कुमार वर्मा को कोषाध्यक्ष बनाया किया गया। 'दिव्यांग महागठबन्धन' के अध्यक्ष मनीष श्रीवास्तव ने उन सभी संगठनों से जो अभी तक दिव्यांग महागठबन्धन में शामिल नहीं है, उनसे अपील किया है कि दिव्यांगजन के हक व अधिकार दिलाने के लिए महागठबन्धन का हिस्सा बने और प्रदेश के दिव्यांगजन के अधिकारों की लड़ाई में अपना सहयोग प्रदान करें।

औद्योगिक क्षेत्रों में स्थापित किए जाएंगे रूफ टॉप सोलर प्लांट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ कानपुर

उत्तर प्रदेश में ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा दे रही योगी सरकार की इस पहल से न सिर्फ पर्यावरण को लाभ हो रहा है, बल्कि सरकारी विभागों के विद्युत खपत पर होने वाले खर्च में भी बड़ी राहत मिली है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) भी ग्रीन एनर्जी के उपयोग को और विस्तार दे रहा है। यूपीसीडा ने अपने कानपुर मुख्यालय में रूफ टॉप सोलर प्लांट की सफलता को देखते हुए अब अपने अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में भी रूफ टॉप सोलर प्लांट, ग्रीन बेल्ट्स और सोलर पथ बनाने की योजना तैयार की है। योजना के अनुसार, प्राधिकरण ने अपने औ ?द्योगिक क्षेत्रों में स्थित विभिन्न सार्वजनिक सुविधाओं जैसे प्रशासनिक भवनों, नागरिक केंद्रों, कॉमन फैसिलिटी सेंटर (सीएफसी), ट्रांजिट हॉस्टल, कॉमन एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट्स (सीईटीपी) और क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालयों पर सोलर रूफटॉप प्लांट्स लगाने का प्रस्ताव रखा है। उल्लेखनीय है कि कानपुर मुख्यालय में रूफ टॉप सोलर प्लांट के माध्यम से प्राधिकरण ने पिछले कुछ महीनों में कुल 27.35 लाख रुपए की बिजली बिल में बचत की है। प्राधिकरण का आंकलन है इस पहल से अगले 23 वर्षों में यूपीसीडा को लगभग 1104 लाख रुपए की शुद्ध बचत हो सकेगी।

कॉर्बन उत्सर्जन को कम करने और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए यूपीसीडा ने जनवरी 2024 में अपने मुख्यालय कानपुर में 150 किलोवॉट का सोलर रूफटॉप ऑनबिड प्लांट स्थापित किया था। यह परियोजना उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) की सहायता से कैपेक्स मॉडल पर 82.98 लाख रुपए की लागत से पूरी की गई थी। इस सोलर प्लांट के स्थापित होने के बाद से प्राधिकरण ने जनवरी और फरवरी 2024 में 35 प्रतिशत ऊर्जा की बचत की, जबकि मार्च 2024 में 32.42 प्रतिशत, अप्रैल और मई 2024 में 56.92 प्रतिशत और जून-जुलाई 2024 में 34.95 प्रतिशत की ऊर्जा बचत दर्ज की गई। इस तरह, कुल लागत का लगभग 33 प्रतिशत पहले ही रिकवर किया जा चुका है। इस परियोजना के तहत, लगभग दो वर्षों में प्राधिकरण को लगभग पूरी लागत वसूल हो जाएगी, जबकि इन सोलर पैनलों की समय सीमा अवधि लगभग 25 वर्ष है। इस प्रकार, अगले 23 वर्षों तक यह सोलर प्लांट यूपीसीडा को लगभग 1104 लाख रुपए की शुद्ध बचत प्रदान करने में मदद करेगा।

यूपीसीडा की ग्रीन पहल

ग्रीन एनर्जी के विस्तार को लेकर यूपीसीडा की योजना के अनुरूप विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में यूपीनेडा की सहायता से किए गए सर्वेक्षण में 53 महत्वपूर्ण स्थानों की पहचान की गई है, जिनका कुल विद्युत भार लगभग 2000 किलोवॉट है। इनमें एमजी रोड (हापुड़), बेगराजपुर (सिकंदराबाद), सूरजपुर साइट-बी (गौतम बुद्ध नगर), साइट 5 कासना (सूरजपुर), सिकंदराबाद (बुलंदशहर), ईपीआईपी कासना, टीडीएस सिटी (बागपत), फाउंड्री नगर (आगरा), कोसी कोटवान (मथुरा), भोगांव (आगरा), चिनहट (लखनऊ), रायबरेली, सण्डीला (हरदोई), कुर्सी रोड (बाराबंकी), जैनपुर (कानपुर देहात), मलवान (फतेहपुर), नैनी (प्रयागराज), करखियाव (वाराणसी), बरगढ़ (चित्रकूट), उन्नाव, बंथर, परसाखेडा (बरेली), गजरौला-2 (जेपी नगर) और शाहजहांपुर जैसे स्थान शामिल हैं। इसके अलावा, यूपीसीडा अपने औ ?द्योगिक क्षेत्रों में ग्रीन बेल्ट्स के साथ सोलर पथ मार्ग बनाने की भी योजना बना रहा है। ये पथ मार्ग न केवल बाहरी स्थानों की सुंदरता को बढ़ाएंगे, बल्कि एक स्थायी प्रकाश समाधान भी प्रदान करेंगे, जो बिजली ग्रिड पर निर्भर नहीं करता है। यह सोलर पथ मार्ग पार्क, खेल के मैदान और आसपास के रास्तों के लिए आदर्श होंगे, जो पर्यावरणीय स्थिरता और औद्योगिक क्षेत्रों के सौंदर्यीकरण में योगदान देंगे।

यूपीसीडा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी मयूर माहेश्वरी ने बताया की भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार की सौर ऊर्जा नीति 2022 के अनुरूप प्राधिकरण मुख्यालय कानपुर, समेत समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों व परियोजना इत्यादि में भी सोलर रूफटॉप प्लांट जल्द स्थापित करेगा। साथ ही यूपीसीडा औ ?द्योगिक क्षेत्रों में स्थापित इकाइयों के उद्यमियों को भी अपनी फैक्ट्री में सोलर रूफटॉप लगाने व उससे होने वाले लाभ के संबन्ध मैं जागरूक करते हुए उनको अपनी इकाइयों में सोलर प्लांट लगाने के लिए प्रेरित कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप उद्यमी इस ओर आकर्षित भी हो रहे हैं। इससे विद्युत बिल तो कम होंगे ही साथ ही साथ ऊर्जा उत्पादन में भी योगदान बढ़ेगा।

पायनियर वर्गीकृत

Required

Required
Adharshila Law College of Professional Courses (ALC) Raj Nagar NH-232 Raibareli
Posts:- Principal-01 Asst. Professors for L.LB 3 years-03 & B.A. L.LB-5 years Economics-01, English-01, Sociology-01 & Law-04
Eligibility:- Principal 15 years experience in any Law college/University with Ph.D. as per BCI and Lucknow University norms. Asst. Professors 55% in L.LM with NET/Ph.D.
Pay scale:- As per Bar Council Of India / Lucknow University norms. **Contacts:-** 9454855857, 9453848622, 8299214485,
Manager : Chandra Prabha Singh

कॉन्टिनेंटल केमिकल्स लिमिटेड
सीआईएन: L24123UP1984PLC014111
पंजीकृत कार्यालय: ए-7, सेक्टर-VII, नोएडा, जिला: गौतम बुद्ध नगर, यू.पी. - 201301
वेबसाइट: www.continentalchemicalsltd.com; ईमेल: info@continentalsoft.com;
फोन नं. 91-120-2423316

कॉन्टिनेंटल केमिकल्स लिमिटेड की 39वीं वार्षिक आम बैठक के संबंध में जानकारी

एतद्द्वारा सूचना दी जाती है कि कॉन्टिनेंटल केमिकल्स लिमिटेड ('कंपनी') के सदस्यों की उनतालीसवीं (39वीं) वार्षिक आम बैठक (एजीएम) शुक्रवार, 20 सितंबर, 2024 को शाम 04.00 बजे आईएसटी पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग ('वीसी')/अन्य ऑडियो वीडियो साधन ('ओएवीएम') सुविधा के माध्यम से, बैठक में सदस्यों की भौतिक उपस्थिति के बिना, कंपनी अधिनियम, 2013 और उसके तहत बनाए गए नियमों और सेबी (लिस्टिंग दायित्वों और प्रकटीकरण आवश्यकताओं) के सभी लागू प्रावधानों के अनुपालन में आयोजित की जाएगी कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी परिपत्र संख्या 14/2020 दिनांक 8 अप्रैल, 2020, परिपत्र सं.17/2020 दिनांक 13 अप्रैल, 2020, परिपत्र सं.20/2020 दिनांक 5 मई, 2020, परिपत्र संख्या 02/2021 दिनांक 13 जनवरी, 2021 और परिपत्र संख्या 02/2022 दिनांक 05 मई, 2022 और सामान्य परिपत्र संख्या 9/2023 दिनांक 25 सितंबर, 2023 के साथ पठित विनियम, 2015 ('एमसीए परिपत्र') और सेबी परिपत्र सं. SEBI/HO/CFD/CMD1/CIR/P/2020/79 दिनांक 12 मई, 2020, SEBI/HO/CFD/CMD2/CIR/P/2021/11 दिनांक 15 जनवरी, 2021, SEBI/HO/CFD/CMD2/CIRP/P/2022/62 दिनांक 13 मई, 2022, SEBI/HO/CFD/POD-2/P/CIR/2023/4 दिनांक 5 जनवरी, 2023 और SEBI/HO/CFD/CFD-POD-2/P/CIR/2023/167 दिनांक 7 अक्टूबर, 2023 (सामूहिक रूप से 'सेबी परिपत्र' के रूप में संदर्भित) और मास्टर परिपत्र SEBI/HO/CFD/POD2/CIR/P/2023/120 दिनांक 11 जुलाई, 2023 ('सेब परिपत्र') एजीएम की सूचना में निर्धारित व्यवसायों को संचालित करने हेतु
उक्त परिपत्रों के अनुपालन में, वार्षिक आम बैठक की सूचना तथा वित्तीय वर्ष 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट ('वार्षिक रिपोर्ट') केवल उन सदस्यों को इलेक्ट्रॉनिक मोड के माध्यम से भेजी जाएगी, जिनकी ईमेल आईडी कंपनी/रजिस्ट्रार और ट्रांसफर एजेंट ('आरटीए') और डिपॉजिटरी प्रतिभागियों ('डीपी') के पास पंजीकृत हैं, जिन सदस्यों ने अभी तक अपना ईमेल पता पंजीकृत नहीं कराया है, उनसे अनुरोध है कि वे कंपनी से वार्षिक रिपोर्ट, नोटिस, परिपत्र आदि सहित सभी संचार इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता पंजीकृत करा लें।
यदि आपने डिपॉजिटरी के साथ अपना ईमेल आईडी पंजीकृत नहीं कराया है, तो आप अपना ईमेल आईडी निम्नलिखित तरीके से पंजीकृत करा सकते हैं:

भौतिक होल्डिंग	कंपनी को info@continentalsoft.com; compliance@continentalsoft.com पर एक हस्ताक्षरित अनुरोध भेजें, जिसमें फोलियो नंबर, शेयरधारक का नाम, शेयर प्रमाणपत्र की स्कैन की गई प्रति (सामने और पीछे), पैन (पैन कार्ड की स्व-सत्यापित स्कैन की गई प्रति), आधार (आधार कार्ड की स्व-सत्यापित स्कैन की गई प्रति) ईमेल पता पंजीकृत करने हेतु प्रदान करें।
डीमैट होल्डिंग	कृपया अपने डिपॉजिटरी पार्टिसिपेंट (डीपी) से संपर्क करें और डीपी द्वारा बताई गई प्रक्रिया के अनुसार अपना ईमेल पता पंजीकृत करें।

वार्षिक आम बैठक की सूचना और वार्षिक रिपोर्ट कंपनी की वेबसाइट www.continentalchemicalsltd.com, स्टॉक एक्सचेंजों की वेबसाइट अर्थात बीएसई लिमिटेड की वेबसाइट www.bseindia.com और सीडीएसएल (वार्षिक आम बैठक के दौरान रिमोट ई-वोटिंग सुविधा और ई-वोटिंग प्रणाली उपलब्ध कराने वाली एजेंसी) की वेबसाइट www.evotingindia.com पर भी उपलब्ध कराई जाएगी। कंपनी अपने सदस्यों को वार्षिक आम बैठक से पहले रिमोट ई-वोटिंग सुविधा और वार्षिक आम बैठक के दौरान ई-वोटिंग सुविधा प्रदान कर रही है, ताकि वे नोटिस में निर्धारित और वार्षिक आम बैठक में प्रस्तावित सभी प्रस्तावों पर इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अपने वोट के अधिकार का प्रयोग कर सकें। वोट डालने की सुविधा सीडीएसएल द्वारा प्रदान की जाएगी।
जिन सदस्यों ने एजीएम से पहले रिमोट ई-वोटिंग द्वारा अपना वोट डाल दिया था, वे भी वीसी/ओएवीएम के माध्यम से एजीएम में उपस्थित/भाग ले सकते हैं, लेकिन उन्हें एजीएम में फिर से अपना वोट डालने का अधिकार नहीं होगा। रिमोट ई-वोटिंग की विस्तृत प्रक्रिया और तरीके, एजीएम में ई-वोटिंग और वीसी/ओएवीएम के माध्यम से एजीएम में भाग लेने के निर्देश एजीएम के नोटिस में दिए जा रहे हैं।
सदस्य एजीएम की सूचना में दिए गए निर्देशों का पालन कर सकते हैं, जैसे कि एजीएम में ई-वोटिंग के साथ-साथ रिमोट ई-वोटिंग। यदि आपके पास सीडीएसएल ई-वोटिंग सिस्टम से एजीएम में भाग लेने और ई-वोटिंग के संबंध में कोई प्रश्न या समस्या है, तो आप helpdesk.evoting@cdslindia.com पर ईमेल लिख सकते हैं या 1800 21 09911 पर संपर्क कर सकते हैं।
स्वतंत्र निदेशकों की नियुक्ति के लिए उम्मीदवारी- इसके साथ ही यह भी सूचित किया जाता है कि कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 160 के साथ कंपनी (निदेशकों की नियुक्ति और योग्यता) नियम, 2014 के नियम 13 के अनुसार निदेशक मंडल को लिखित रूप में एक नोटिस प्राप्त हुआ है, जिसमें कंपनी की 39वीं एजीएम में कंपनी के स्वतंत्र निदेशक के रूप में नियुक्ति के लिए श्री राघव नैथानी (डीआईएन: 01463692) और श्री गौरव सचदेवा (डीआईएन: 10746363) की उम्मीदवारी का प्रस्ताव है।
कॉन्टिनेंटल केमिकल्स लिमिटेड हेतु
हस्ता/-
नरेश कुमार चिब्बा
प्रबंध निदेशक
डीन 00376963
दिनांक: 23.08.2024
स्थान: नोएडा

पुलिस परीक्षा का जायजा लेने ग्राउंड जीरो पर उतरे डीजीपी, सभी जगह हुई शांतिपूर्ण परीक्षा

प्रदेश के 67 जिलों के 1174 केंद्रों पर दो पालियों में 4 लाख 50 हजार अभ्यर्थियों ने दी परीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के इतिहास की सबसे बड़ी पुलिस भर्ती परीक्षा की शुरुआत हो गई। पहले दिन प्रदेश के 67 जिलों के 1174 परीक्षा केंद्र पर परीक्षा सकुशल संपन्न कराई गई। दो पालियों में आयोजित परीक्षा में करीब 4 लाख 50 हजार अभ्यर्थी शामिल हुए। सभी अभ्यर्थी कड़ी सुरक्षा और कई चरणों की चेकिंग के बाद परीक्षा में शामिल हुए। परीक्षा के दौरान एसटीएफ, यूपी पुलिस और पीएसी के जवान चप्पे-चप्पे पर नजर आए। इसके अलावा सीसीटीवी और ड्रोन कैमरों से भी पल-पल की नजर रखी गयी। वहीं डीजीपी ने भी ग्राउंड जीरो पर उतरकर स्थितियों का जायजा लिया। सभी सेंटर के अंदर और बाहर चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था के चलते प्रदेश में कहीं भी किसी तरह की अप्रिय घटना नहीं घटित हुई। सीएम योगी की मंशा के अनुरुप परीक्षा को पूरी शुचिता और पारदर्शिता के साथ संपन्न कराने में प्रशासन सफल रहा।

राजधानी लखनऊ में 81 परीक्षा केंद्रों पर दो पालियों में 56,674 परीक्षार्थी शामिल हुए। सभी केंद्रों पर नकल विहीन परीक्षा सम्पन्न कराने के उद्देश्य से सेक्टर मजिस्ट्रेट व जोनल मजिस्ट्रेट की ड्यूटी लगाई गई। साथ ही समस्त केंद्रों पर मोबाईल जैमर की व्यवस्था को सुनिश्चित कराया गया। डीजीपी प्रशांत कुमार ने राजकीय बालिका इंटर कॉलेज गोमतीनगर और राजकीय पॉलीटेक्निक लखनऊ स्थित परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने परीक्षा को पारदर्शी एवं शुचितापूर्ण सम्पन्न कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। वहीं लखनऊ में पुलिस भर्ती परीक्षा को लेकर डीएम सूर्यपाल गंगवार ने विभिन्न केंद्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने व्यवस्था की पड़ताल की। लखनऊ यूनिवर्सिटी के बाद जिलाधिकारी ने बाबूगंज स्थित रामाधीन सिंह इंटर कॉलेज की व्यवस्था जानी। डीएम ने निरीक्षण के दौरान सभी केंद्र व्यवस्थापकों को नकल विहीन, पूरी पारदर्शिता के साथ शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षा संपन्न कराने के निर्देश दिए। इसके बाद जिलाधिकारी ने नेशनल पीजी कॉलेज पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। राजकीय पॉलीटेक्निक और राजकीय महिला पालीटेक्निक में सीसीटीवी कैमरों के जरिए परीक्षा की मॉनिटरिंग को भी उन्होंने देखा। वहीं सुरक्षा की दृष्टि से एक हजार सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई। लखनऊ में 8 एसीपी और 62 इंस्पेक्टर को शांतिपूर्ण माहौल में परीक्षा व्यवस्था में लगाया गया। इनके अलावा 184 सब इंस्पेक्टर, 173 हेड कॉन्स्टेबल, 519 कॉन्स्टेबल, 81 सेक्टर मजिस्ट्रेट और 162 सशस्त्र बलों को भी तैनात किया गया है। सुबह से ही परीक्षा केंद्रों के बाहर सुरक्षा बलों की तैनाती रही। डीजीपी प्रशांत कुमार ने बताया कि पूरे प्रदेश में 48 लाख से ज्यादा बच्चे लगभग 10 पालियों में परीक्षा देंगे। प्रदेश के 67 जनपदों में ये परीक्षा 5 दिनों में 2-2 पालियों में संपन्न होगी। सभी जगह पुलिस के अधिकारी तैनात हैं। इस बार ऐसी व्यवस्था की गई है कि किसी को कोई असुविधा ना हो। जहां-जहां से भी गड़बड़ी की सूचनाएं मिल रही हैं, सभी जगह एफआईआर की गई है। उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। अभी तक कहीं से भी प्रश्न पत्र लीक होने की कोई सूचना नहीं है, जो लोग भी भ्रामक खबरें फैला रहे हैं, उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। प्रयागराज के 63 परीक्षा केंद्रों पर दो पालियों में 45 हजार 744 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। योगी सरकार के निर्देश पर अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्र तक नि:शुल्क यात्रा की सुविधा देने के लिए मंडल में 624 रोडवेज बसों का संचालन किया गया। इसका लाभ पूरे मंडल में 57 हजार से अधिक अभ्यर्थियों ने उठाया। इसके अलावा अभ्यर्थियों को सिटी बसों में भी निशुल्क यात्रा की सुविधा प्रदान की गयी। योगी सरकार के प्रयास पर रेलवे ने संगम रेलवे स्टेशन से चलने वाली 6 ट्रेन में दो-दो अतिरिक्त कोच जोड़े। नोडल अधिकारी डीसीपी आशुतोष द्विवेदी ने बताया कि 63 परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा के लिए 600 से अधिक पुलिस कर्मी और 950 सीसीटीवी लगाए गए।

जिलाधिकारी ने परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

● लखनऊ में 81 केंद्रों की प्रतिपाली में कुल 39072 परीक्षार्थी हुए सम्मिलित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ में आयोजित हुई उप्र पुलिस आरक्षी नागरिक पुलिस पदों पर सीधी भर्ती-2023 की लिखित परीक्षा के तहत जिलाधिकारी सूर्य पाल गंगवार द्वारा विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी निरीक्षण की शुरुआत लखनऊ विश्विद्यालय स्थित परीक्षा केंद्रों से की गई। परीक्षा केंद्र पहुंच कर परीक्षा के सुचारू संचालन के संबंध में एग्जामिनेशन रूम, परीक्षा पर्यवेक्षकों की व्यवस्था को देखा गया। जनपद के कुल 81 केंद्रों की प्रतिपाली में कुल 39072 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। वहीं, जिलाधिकारी द्वारा सभी केंद्र व्यवस्थापको को नकल विहीन परीक्षा कराने का निर्देश दिया गया।

सरकार के इंतजामों पर परीक्षार्थियों ने जताया संतोष, सीएम को दिया धन्यवाद

● पुलिस भर्ती परीक्षा के लिए मुफ्त आवागमन की सुविधा दिए जाने पर परीक्षार्थियों में दिखी खुशी

मोहनलालगंज। यूपी पुलिस भर्ती परीक्षा के लिए मुफ्त यात्रा की सुविधा परीक्षार्थियों के लिए बेहद कारगर रही। जिसकी मदद से परीक्षार्थी अपने जिलों से परीक्षा केंद्रों तक आसानी से पहुंच गए। उधर परीक्षा केंद्रों पर सख्ती के बीच सकुशल परीक्षा संपन्न कराई गई। जिसे लेकर परीक्षार्थियों ने सीएम योगी आदित्यनाथ का आभार जताया।

मोहनलालगंज के नवजीवन इंटर कॉलेज और काशीश्वर इंटर कॉलेज में शुक्रवार को दोनों पालियों में क्रमश: 705 और 678 परीक्षार्थियों ने यूपी पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा दी। जौनपुर और सुल्तानपुर समेत प्रदेश के कई जिले से परीक्षार्थी यहां मंगलवार की रात ही पहुंच गए। कुछ परीक्षार्थियों ने कस्बे और पीजीआई के आसपास कमरा लेकर रात बिताई तो कई परीक्षार्थियों ने रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन पर ही झपकी लेकर रात काट दी। कस्बे के कालेबीर बाबा मंदिर में भी देर रात से ही परीक्षार्थियों की भीड़ जुटी नजर आई। शुक्रवार को पहली पाली की सिपाही भर्ती परीक्षा देकर निकले जौनपुर के राजबहादुर यादव और दुर्गेश यादव ने बताया बस में किराया नही पड़ने से परीक्षा केन्द्र तक पहुंचने में कोई परेशानी नहीं हुई। दोनों ने केन्द्र पर कड़ी सुरक्षा और सख्ती के बीच परीक्षा संपन्न कराने को लेकर सरकार की सराहना की। राजबहादुर ने पेपर अच्छा होने की बात कही। जौनपुर के विशाल ने भी सरकार के इंतजामों को लेकर संतोष जताया। उन्होंने अच्छी तैयारी करने वालों के लिए पेपर बढ़िया ढंग से होने की बात कही। सुल्तानपुर से आए अंकुर शर्मा और दर्शन यादव ने यूपी पुलिस भर्ती परीक्षा को लेकर इस बार की तैयारियों और सख्ती पर बेहद संतोष जताया। दोनों ने परीक्षा के लिए यात्रा मुफ्त किए जाने को सरकार का बेहतर फैसला करार दिया। अंकुर और दर्शन ने पेपर में गणित के प्रश्न कठिन आने की बात कही। एसीपी रजनीश वर्मा ने बताया पहले दिन दोनों परीक्षा केन्द्रों पर शांतिपूर्ण परीक्षा संपन्न हो गई। पुलिस और प्रशासन की टीम चप्पे चप्पे पर मुस्तैद रही। 31 अगस्त तक इसी तरह पूरी टीम पर कठिन परिश्रम कर सकुशल पुलिस भर्ती परीक्षा संपन्न कराने की अहम जिम्मेदारी है।

एलडीए ने होटल व कॉम्पलेक्स समेत 6 अवैध निर्माण किए सील

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शहर में अवैध निर्माण के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान में प्रवर्तन टीम ने गोमती नगर, मडियांव व सआदतगंज क्षेत्र में कार्यवाही की। इस दौरान अवैध रूप से निर्मित किये जा रहे अपार्टमेंट, होटल व शॉपिंग कॉम्पलेक्स समेत 6 बिल्डिंगों को सील किया गया।

शुक्रवार को राजधानी में सआदतगंज क्षेत्र, गोमतीनगर, मंडियांव में एलडीए ने होटल, अपार्टमेंट पर सीलिंग कार्रवाई की गयी। प्रवर्तन जोन.1 की जोनल अधिकारी वन्दना पाण्डेय ने बताया कि अनमोल तोमर व अन्य द्वारा गोमती नगर के विकास खण्ड में भूखण्ड संख्या.1/54 पर लगभग 200 वर्गमीटर क्षेत्रफल में व्यावसायिक निर्माण कराया जा रहा था। इसी तरह सुभाष यादव द्वारा विकास खण्ड में भूखण्ड संख्या.5/601 पर लगभग 300 वर्गमीटर क्षेत्रफल में ममता पैलेस नाम से होटल का निर्माण कराया जा रहा था। वहीं, सिराज अहमद व अन्य द्वारा विजय खण्ड में भूखण्ड संख्या.2/313, 2/314 पर लगभग 200 वर्गमीटर क्षेत्रफल में अपार्टमेंट का निर्माण करवाया जा रहा था। इसके अलावा गोविंद यादव व अन्य द्वारा विशाल खण्ड में भूखण्ड संख्या.5/22 पर लगभग 300 वर्गमीटर क्षेत्रफल में कॉम्पलेक्स का निर्माण कराते हुये व्यावसायिक गतिविधियां संचालित की जा रही थीं। उक्त अवैध निर्माणों के विरूद्ध विहित न्यायालय द्वारा सीलिंग के आदेश पारित किये गये थे। शुक्रवार को सहायक अभियंता उदयवीर सिंह के नेतृत्व में अवर अभियंता संजय भाटी द्वारा प्रश्नगत स्थलों को सील कर दिया गया।

आत्महत्या के लिए उकसाने वाले पति को सजा

विधि संवाददाता। लखनऊ

पत्नी को आत्महत्या के लिए मजबूर करने वाले आरोपी पति अनिल कुमार कश्यप को सत्र अदालत ने सात वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। एडीजे नरेन्द्र कुमार, तृतीय ने इस पर 20 हजार रुपए का जुर्माना भी ठोका है। सरकारी वकील अरुण पांडेय के मुताबिक इस मामले की रिपोर्ट मृतका निन्नी के पिता मटरू कश्यप ने थाना पारा में दर्ज कराई थी। वर्ष 2012 में निन्नी की शादी अनिल से हुई थी। निन्नी बचपन से जिद्दी स्वभाव की थी। वो बात-बात पर झगड़ा कर लेती थी। 27 मई 2016 की सुबह उसकी अपने पति अनिल से लड़ाई हुई। इसके बाद उसने अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर आग लिया। उसे सिविल अस्पताल ले जाया गया। वहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

एकेटीयू से जुड़े एलयू सहित तीन सरकारी कालेजों की सभी सीटें भरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्याल की ओर से प्रदेश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश प्रक्रिया के तहत शुक्रवार को तीसरे राउंड की सीट आवंटित कर दी गयी। जिसके चलते विवि से जुड़े लखनऊ विश्वविद्यालय सहित तीन सरकारी कालेजों आईईटी लखनऊ, बीआईटी झांसी एवं केएनआईटी सुल्तानपुर की सभी सीटें भर गयी हैं। तीसरे चरण के अंतर्गत जारी आवंटन सूची में विभिन्न संस्थानों में नयी 2180 सीट आवंटित हुई है। अब तक कुल 28267 सीट सीटों का आवंटित की गयी है। नई आवंटित सीटों के लिए अभ्यर्थियों को 25 अगस्त तक शुल्क जमा करना है। जबकि 26651 ने फीस जमा कर दिया है। वहीं, यूपीटीएसी की की ओर से करायी जा रही काउंसलिंग में लखनऊ विश्वविद्यालय के बीटेक की सभी सीटें भर गयी हैं। नये बने राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बस्ती, गोण्डा, मिर्जापुर एवं प्रतापगढ़ में पिछले बार की अपेक्षा इस बार ज्यादा सीटें भर रही हैं।

मरीजों एवं तीमारदारों की सुविधा हेतु ट्रामा सेंटर में नियुक्ति शुरू

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के ट्रामा सेंटर पर बढ़ते लोड की वजह से मरीजों के इलाज व तीमारदारों की सुविधा हेतु संस्थान प्रशासन ने 20 जन सम्पर्क इक्सीक्यूटिव एवं 10 सिंक अटेंडेन्ट की नियुक्ति प्रक्रिया शुरू कर दी है। ट्रामा सेंटर में अभी तक प्रत्येक शिफ्ट में 1 एपीआरओ एवं 1 जेआरओ ही नियुक्त है। जिससे मरीजों एवं तीमारदारों को जाँच एवं विभागों की जानकारी में बहुत असुविधा होती है। जिसको देखते हुए यह निर्णय लिया गया था कि तीमारदारों की सुविधा हेतु 20 जन सम्पर्क इक्सीक्यूटिव एवं 10 सिंक अटेंडेन्ट की नियुक्ति की जाये। आज इन दोनों पदों पर संविदा से नियुक्ति साक्षात्कार के माध्यम से आयोजित किया गया एवं नियुक्ति प्रारम्भ हो गयी। इनकी नियुक्ति प्रक्रिया तत्काल प्रभाव से प्रारम्भ की जा रही है, जिससे मरीजों एवं उनके तीमारदारों को विभागों तथा जाँचो की जानकारी होने में और एम्बूलेंस से वार्ड में शिफ्ट करने हेतु बहुत सुविधा हो जायेगी।

Piramal Capital & Housing Finance

पीरामल कैपिटल एण्ड हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालय पता: यूनिट नं. 601, 6वीं मंजिल पीरामल अमिटी बिल्डिंग, पीरामल अगस्त्य कॉर्पोरेट पार्क, कमानी जंक्शन, फायर स्टेशन के सामने, एलबीएस मार्ग, कुर्ला (पश्चिम), मुंबई-400070
सीआईएन: L65910MH1984PLC032639, वेबसाइट : www.piramalfinance.com
शाखा का पता: धीरज बाग, बिल्डिंग "ए" भूतल और प्रथम तल, एक्सिस बैंक के साथ में, मोनालिसा बिल्डिंग के समाने, आगरा रोड, हरि निवास सर्कल, नौपाड़ा, ठाणे (पश्चिम)-400602

मांग सूचना

वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित अधिनियम, 2002 की धारा 13(2) के तहत, सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3(1) के साथ पठित। अधोहस्ताक्षरी वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित अधिनियम, 2002 (उक्त अधिनियम) के प्रवर्तन के तहत पीरामल कैपिटल एंड हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड (पीसीएचएफएल) का प्राधिकृत अधिकारी है। सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, प्राधिकृत अधिकारी ने उक्त अधिनियम की धारा 13(2) के तहत मांग नोटिस जारी कर आह्वान किया है निम्नलिखित उधारकर्ता(ओं) ("उक्त उधारकर्ता") को जारी किए गए संबंधित मांग नोटिस में उल्लिखित राशि चुकाने के लिए नीचे दिया गया है। उपरोक्त के संबंध में, एक बार फिर उक्त उधारकर्ता को इस नोटिस के प्रकाशन से 60 दिनों के भीतर पीसीएफएल को भुगतान करने का नोटिस दिया जाता है। नीचे दी गई तारीखों से भुगतान और/या वसूली की तारीख तक, अन्य दस्तावेजों/लेखों के साथ पठित ऋण समझौते के तहत देय, उक्त मांग नोटिस में बताए गए अतिरिक्त ब्याज के साथ, नीचे दर्शाई गई राशियाँ, यदि कोई हो, उक्त उधारकर्ता(ओं) द्वारा निष्पादित। ऋण के उचित पुनर्भुगतान के लिए सुरक्षा के रूप में, निम्नलिखित परिसंपत्तियों को क्रमश: उक्त उधारकर्ता द्वारा पीसीएफएल को गिरवी रखा गया है।

उधारकर्ता/गारंटर्स का नाम	मांग सूचना की तिथि और राशि साथ में एन पी ए की तिथि	सम्पत्ति का पता
(लखनऊ - एमएमएम मार्ग शाखा का एलसी नं. M0049749) ब्रजेश पांडे (उधारकर्ता) पिंकी पांडे (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 15,69,086.8 (रु. पन्द्रह लाख उनहत्तर हजार छियासी और पैसे अस्सी मात्र) एनपीए (04-06-2024)	प्लॉट नं. 34, खसरा नं. 321 गा मिंज का भाग, कुसी रोड इंटीग्रल यूनिवर्सिटी लखनऊ उत्तर प्रदेश 226026
(गाजियाबाद शाखा का एलसी नं. M0079613) महाराज महाराज (उधारकर्ता) कोषेर कोषेर (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 11,92,460.2 (रु. ग्यारह लाख बान्वे हजार चार सौ साठ तथा पैसे बीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 760 884 का हिस्सा, मौजा गांव जहलवा परगना जलालबाद मोदीनगर जिला गाजियाबाद उत्तर प्रदेश 201004
(नोएडा - सेक्टर 2 शाखा का एलसी नं. M0081647) भूपेंद्र कुमार (उधारकर्ता) भावना गुप्ता (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 26,43,777.32/-(रु. छब्बीस लाख तैंतालीस हजार सात सौ सत्तर मात्र तथा बत्तीस पैसे) एनपीए (04-07-2024)	प्लॉट नं. 44, खसरा नं. 773 मिन का हिस्सा, ग्राम बिसरख जलालपुर, गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश 201306
(फैजाबाद शाखा का एलसी नं. M0089002) ओम प्रकाश (उधारकर्ता) देवेंद्र सिंह (सह-उधारकर्ता 1) शिव पट्टा (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 26,26,356/-(रु. छब्बीस लाख छब्बीस हजार तीन सौ छप्पन मात्र) एनपीए (04-07-2024)	क्षेत्रफल 2152 वर्ग फुट, गाटा सं. 743 मिन डोभराई तहसील घाट का पुरवा चंदवतपुर घाट गोंडा उत्तर प्रदेश 271001
(सीतापुर शाखा का एलसी नं. HLSA0000E3DE) सौरभ दीक्षित (उधारकर्ता) रानी दीक्षित (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 8,44,637/-(रु. आठ लाख चौवालीस हजार छह सौ सैंतीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	पुरव वार्ड 2, नैमिसराय, खसरा सं. 411 का भाग, मोहल्ला, उत्तर वार्ड, सीतापीर- 261402, उत्तर प्रदेश में स्थित
(झांसी का एलसी नं. M0116689 शाखा) मुस्तरी बानो (उधारकर्ता) मोहम्मद नौशाद खान (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.4,74,387/-(रु. चार लाख चौहत्तर हजार तीन सौ सत्तासी मात्र) एनपीए (04-07-2024)	प्लॉट जोकि भुसुंडी आश्रम के पास, बल्लमपुर रोड, मौजा बिजौली अवधी राजगढ़, झाँसी उत्तर प्रदेश 284003 में स्थित
(सीतापुर शाखा का एलसी नं. HLSA00060E40) इशरार अहमद (उधारकर्ता) अस्तबुन निशा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 7,50,297/-(रु. सात लाख पचास हजार दो सौ सतान्वे मात्र) एनपीए (04-07-2024)	गाटा सं. 1091 एवं 1102, जोकि मोहल्ला- सीताकुंड वार्ड नं. 5, श्री राम चंद्र मिष्ठान भंडार मिश्रिख उत्तर प्रदेश 261401
(सीतापुर शाखा का एलसी नं. M0160509) इशरार अहमद (उधारकर्ता) अस्तबुन निशा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 7,77,781/-(रु. सात लाख सत्तर हजार सात सौ इक्यासी मात्र) एनपीए (04-07-2024)	गाटा सं. 1091 एवं 1102 जोकि मोहल्ला- सीताकुंड वार्ड नं. 5, श्री राम चंद्र मिष्ठान भंडार मिश्रिख उत्तर प्रदेश 261401 में स्थित
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000000716) सुधाकर शर्मा (उधारकर्ता) रुचि शर्मा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 7,47,273/-(रु. सात लाख सैंतालीस हजार दो एक सौ तिहत्तर मात्र) एनपीए (10-07-2024)	फ्लैट नं. बी-063, 6वीं मंजिल, टॉवर-बी मीडोज विस्टा एनएच-58, राज नगर एक्सटेंशन गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश - 201011
(प्रयागराज शाखा का एलसी नं. M0170131) मुन्ना लाल (उधारकर्ता) मनोज कुमार निषाद (सह-उधारकर्ता 1) नेहा निषाद (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 8,90,574/-(रु. आठ लाख नब्बे हजार पांच सौ चौहत्तर मात्र) एनपीए (04-06-2024)	आराजी नं. 889 का हिस्सा, वायु सेना स्टेशन के पास, मौजा बम्हरौली ऊपरहार परगना सदर प्रयागराज उत्तर प्रदेश 211012
(गोरखपुर शाखा का एलसी नं. HLSA00002D05) देवीशंकर लाल श्रीवास्तव (उधारकर्ता) आशा श्रीवास्तव (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 4,69,867/-(रु. चार लाख उनहत्तर हजार आठ सौ सड़सठ मात्र) एनपीए (04-10-2023)	आराजी नं. 206, मोहल्ला-जंगल तिनकोनिया नं. 1 पप्पू पेट्रोल पंप के पास गोरखपुर उत्तर प्रदेश 273003
(लखनऊ शाखा का एलसी सं. 06000001768) मुकेश कुमार (उधारकर्ता) श्री कमलेश (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 10,34,544/- (रु. दस लाख चौंतीस हजार पांच सौ चौवालीस मात्र) एनपीए (08-11-2022)	प्लॉट नं. 197 खसरा नं. 472 और 474 गौरभीथ वार्ड फैजुल्लागंज लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(लखनऊ शाखा का एलसी सं. 06000008398) मुकेश कुमार (उधारकर्ता) नेहा यादव (सह-उधारकर्ता 1) कमलेश आर (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 3,14,434.91/-(रु. तीन लाख चौदह हजार चार सौ चौंतीस तथा इक्यान्वे पैसे) एनपीए (08-11-2022)	प्लॉट नं. 197 खसरा नं. 472 और 474 गौरभीथ वार्ड फैजुल्लागंज लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(ग्रेटर नोएडा शाखा का एलसी सं. 27900000222) हरविंदर सिंह जग्गी (उधारकर्ता) गुरप्रीत कौर जग्गी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.20,80,761/-(रु. बीस लाख अस्सी हजार सात सौ इकसठ मात्र) एनपीए (10-07-2024)	यूनिट नं.- सी0901, 9वीं मंजिल, टॉवर - सी, स्प्रिंगव्यू हाइट्स क्रिसेंट पार्क टाउनशिप, एनएच-24, गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश - 201002
(कानपुर शाखा का एलसी सं. 24000000542) ब्रजेश कुमार प्रजापति (उधारकर्ता) लक्ष्मी प्रजापति (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 41,71,500/-(रु. इकतालीस लाख इकहत्तर हजार पांच सौ मात्र) एनपीए (05-04-2017)	प्लॉट नं. 70ए आराजी नं. 1222 दामोदर नगर कानपुर कानपुर शहरी उत्तर प्रदेश - 208027
(आगरा शाखा का एलसी सं. 23400000325) नरेश कुमार शर्मा (उधारकर्ता) दुर्गेश नंदनी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 15,06,283/-(रु. पन्द्रह लाख छह हजार दो सौ तिरासी मात्र) एनपीए (10-07-2024)	खेत नं. 89/2 का हिस्सा, अशोक विहार कॉलोनी खैर बाईपास रोड, एचपी पेट्रोल के पास पंप, अलापुर गरिया अलीगढ़ अलीगढ़ उत्तर प्रदेश- 202001
(वाराणसी शाखा का एलसी नं. 12000001241) नीरज कुमार शर्मा (उधारकर्ता) राकेश शर्मा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 1,76,691/-(रु. एक लाख छिहत्तर हजार छह सौ इक्यान्वे मात्र) एनपीए (10-07-2024)	आराजी नं. 37 झलवा परगना और तहसील सदर इलाहाबाद इलाहाबाद उत्तर प्रदेश- 211016
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000002897) दीपक सिंह (उधारकर्ता) सारिका सिंह (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 9,70,544/-(रु. नौ लाख सत्तर हजार पांच सौ चौवालीस मात्र) एनपीए (08-08-2023)	प्लॉट खसरा नं. 811 का हिस्सा, हरिहरपुर परगना बिजनौर तहसील लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(मेरठ शाखा का एलसी नं. M0178632) दीपक पाल (उधारकर्ता) कामिनी आर (सह-उधारकर्ता 1) अंकुर (सह-उधारकर्ता 2) बीर सिंह (सह-उधारकर्ता 3)	25-07-2024/रु. 37,98,872/-(रु. सैंतीस लाख अट्ठानबे हजार आठ सौ बहत्तर मात्र) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 440 और 441, बधाई कला मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश 251311
(नोएडा शाखा का एलसी नं. M0193868) महेश कुमार (उधारकर्ता) माया एम (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 9,93,450/-(रु. नौ लाख तिरान्बे हजार चार सौ पचास मात्र) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 1602, गांव जारचा गौतमबुद्ध नगर उत्तर प्रदेश 203207
(ग्रेटर नोएडा शाखा का एलसी नं. 27900000945) विक्रम कुमार (उधारकर्ता) अनुपमा झा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 7,80,356/-(रु. सात लाख अस्सी हजार तीन सौ छप्पन मात्र) एनपीए (10-07-2024)	फ्लैट नं.-जीएफ-3, भूतल (पिछला एल.एच.एस.) प्लॉट नं. सी-3/11 डीआईएफ अंकुर विहार, लोनी, गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश- 201001
(ग्रेटर नोएडा शाखा का एलसी नं. 27900000978) विक्रम कुमार (उधारकर्ता) अनुपमा झा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 2,37,528/-(रु. दो लाख सैंतीस हजार पांच सौ अट्ठाईस मात्र) एनपीए (10-07-2024)	फ्लैट नं.-जीएफ-3, भूतल (रियर एल.एच.एस), प्लॉट नं. सी-3/11 डीएलएफ अंकुर विहार, लोनी गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश-201001
(नेताजी सुभाष प्लेस शाखा का एलसी नं. 25500000634) अमित सागर (उधारकर्ता) कंचन सागर (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 28,14,679.85/- (रु. अट्ठाईस लाख चौदह हजार छह सौ उनासी और पैसे पिचासी मात्र) एनपीए (08-01-2023)	1) फ्लैट नं. सी 1006, 10वीं मंजिल ब्लॉक सी, फॉर्च्यून रेजीडेंसी राजनगर एक्सटेंशन गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश 201009 (2) फ्लैट नं. 1575, 15वीं मंजिल, टॉवर 19, रिवर हाइट्स सेकंड फेज राज नगर एक्सटेंशन एनएच-58 नूर नगर गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश- 201001
(ग्रेटर नोएडा शाखा का एलसी नं. 27900001871) अमित सागर (उधारकर्ता) कंचन सागर (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 21,24,458/-(रु. इक्कीस लाख चौबीस हजार चार सौ अट्ठावन मात्र) एनपीए (08-01-2023)	(1) फ्लैट नं. सी 1006, 10वीं मंजिल ब्लॉक सी, फॉर्च्यून रेजीडेंसी राजनगर एक्सटेंशन गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश- 201009 (2) फ्लैट नं. - 1575, 15वीं मंजिल, टॉवर 19, रिवर हाइट्स द्वितीय फेज राज नगर एक्सटेंशन एनएच -58 नूर नगर गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश- 201001
(कानपुर शाखा का एलसी नं. M0207474) जिशान रिजवी (उधारकर्ता) अच्छी बेगम (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 7,43,726/-(रु. सात लाख तैंतालीस हजार सात सौ छब्बीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	प्लॉट नं. 5/1, मोहल्ला अली नगर (आजाद नगर), मझरा पीपरखेड़ा अहतमाली, परगना हड़हा, तहसील एवं जिला-उन्नाव उत्तर प्रदेश-209862
(गोरखपुर शाखा का एलसी नं. 25700000770) हाकिम प्रसाद (उधारकर्ता) राधिका (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 17,69,083/-(रु. सत्रह लाख उनहत्तर हजार तिरासी मात्र) एनपीए (10-07-2024)	प्लॉट जोकि आराजी नं. 29, मौजा- उमरपुर, टप्पा- खुटहन, परगना-हवेली तहसील - सदर गोरखपुर गोरखपुर उत्तर प्रदेश - 273003
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000005011) भीम रे (उधारकर्ता) मोनिका देवी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 4,61,412.22/-(रु. चार लाख इकसठ हजार चार सौ बारह मात्र और पैसे बाईस) एनपीए (10-07-2024)	प्लॉट नं. 12ए का हिस्सा खसरा नं. 1217 1218 1215 1219 ग्राम कल्ली पश्चिम पारग बिजनोर तह सरोजनीनगर लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(नोएडा शाखा का एलसी नं. M0222022) जगदीश कुमार (उधारकर्ता) यशोदा कुमारी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 23,49,473/-(रु. तेईस लाख उनचास हजार चार सौ तिहत्तर मात्र) एनपीए (04-07-2024)	प्लॉट नं. 220 खसरा नं. 303, निकट एरा पब्लिक स्कूल गाजियाबाद उत्तर प्रदेश 201002
(लखनऊ - लालबाग शाखा का एलसी नं. 19300042083) अभिषेक अवधेश शुक्ला (उधारकर्ता) सुरभि शुक्ला (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.24,31,789/-(रु. चौबीस लाख इकतीस हजार सात सौ उनासी मात्र) एनपीए (10-07-2024)	मकान नं. 545केए/एमपी-690, प्लॉट नं. 1ए खसरा नं. 537 और 538 वार्ड आलमनगर मायापुरम पारा लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000005346) अंकित कुमार श्रीवास्तव (उधारकर्ता) कल्पना श्रीवास्तव (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 6,79,113/-(रु. छह लाख उनासी हजार एक सौ तेरह मात्र) एनपीए (10-07-2024)	प्लॉट नं. 1450 ए खसरा नं. 190 एसए का भाग, अली नगर सुनेहरा परगना बिजनोर वार्ड सरोजनी नगर लखनऊ, लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(आगरा शाखा का एलसी नं. 23400001661) प्रमोद कुमार कौशिक (उधारकर्ता) कुसुम कौशिक (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 10,21,101/- (रु. दस लाख इक्कीस हजार एक सौ एक मात्र) एनपीए (14-06-2024)	(ईडब्ल्यूएस) मकान ए-144 शास्त्रीपुरम योजना ब्लॉक -ए सिकंदरा, शास्त्रीपुरम रोड आगरा आगरा उत्तर प्रदेश - 282007
(आगरा शाखा का एलसी नं. 23400001780) प्रमोद कुमार कौशिक (उधारकर्ता) कुसुम कौशिक (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 4,50,180.02 (रु. चार लाख पचास हजार एक सौ अस्सी तथा पैसे दो मात्र) एनपीए (14-06-2024)	(ईडब्ल्यूएस) मकान ए-144 शास्त्रीपुरम योजना ब्लॉक-ए सिकंदरा, शास्त्रीपुरम रोड आगरा आगरा उत्तर प्रदेश - 282007
(कानपुर शाखा का एलसी नं. 24000002318) मनोज कुमार मिश्रा (उधारकर्ता) सुनीता मिश्रा (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 62,17,145/- (रु. बासठ लाख सत्रह हजार एक सौ पैंतालीस मात्र) एनपीए (06-06-2019)	प्लॉट आराजी नं. 1497/2 नई आराजी नं. 1404 मिन और 1171 के एच ए मिन, ग्राम मझरा पीपरखेड़ा गैर एहतमाली, परगना हड़हा उन्नाव उत्तर प्रदेश 209801
(आगरा शाखा का एलसी नं. M0236624) राकेश शुक्ला (उधारकर्ता) खुशीबू शुक्ला (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 24,89,030/-(रु. चौबीस लाख नवासी हजार तीस मात्र) एनपीए (04-06-2024)	खसरा नं. 391 और 394, प्लॉट नं. 40 का हिस्सा, बिल्डिंग देहतोर मोड बोदला, सौरभ नगर बोडला आगरा उत्तर प्रदेश 282007
(आगरा शाखा का एलसी नं. M0260153) जितेंद्र परमार (उधारकर्ता) डॉली परमार (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 13,26,983/-(रु. तेरह लाख छब्बीस हजार नौ सौ तिरासी मात्र) एनपीए (04-07-2024)	फ्लैट नं. 212, दूसरी मंजिल, खसरा नं. 631, राम नगर, खंडोली एत्मादपुर आगरा उत्तर प्रदेश 283126
(आगरा शाखा का एलसी नं. 23400002376) फारूक (उधारकर्ता) जैनब (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.12,17,501/-(रु. बारह लाख सत्रह हजार पांच सौ एक मात्र) एनपीए (10-07-2024)	पहली मंजिल, फ्लैट नं. ए-3 (एटीएस के अनुसार) प्लॉट नं. 2 पर, ख. नं. 545 का भाग, जियाउद्दीन अपार्टमेंट मौजा- धोर्रा माफी कोइल, अलीगढ अलीगढ उत्तर प्रदेश - 202001
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000006956) निर्भय कुमार सिंह (उधारकर्ता) आकांक्षा सिंह (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.22,35,549/-(रु. बाईस लाख पैंतीस हजार पांच सौ उनचास मात्र) एनपीए (09-06-2024)	मकान नं. 01, खसरा नं. 1156 मिंज, ग्राम- कमलाबाद बदौली, परगना- महोना, बीकेटी लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(मेरठ शाखा का एलसी नं. M0242094) मोहम्मद खान (उधारकर्ता) फैमिदा खातून (सह-उधारकर्ता 1) फिरोज खान (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 26,41,098/-(रु. छब्बीस लाख इकतालीस हजार अट्ठानबे मात्र) एनपीए (04-07-2024)	नगर पंचायत नं. 367, दुर्गा कॉलोनी, मवाना मेरठ उत्तर प्रदेश 250406
(गोरखपुर शाखा का एलसी नं. 25700001677) राम कुमार (उधारकर्ता) रीता शरम (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.8,14,763/-(रु. आठ लाख चौदह हजार सात सौ तिरेसठ मात्र) एनपीए (09-06-2024)	प्लॉट जोकि गाटा सं. 1101, मौजा गद्दीपुर, परगना हवेली अवध, फैजाबाद फैजाबाद गोरखपुर उत्तर प्रदेश 273002 में स्थित
(लखनऊ - लालबाग शाखा का एलसी नं. 19300043453) संजीव कुमार (उधारकर्ता) अहिबरन सिंह (सह-उधारकर्ता 1) गायत्री सिंह (सह उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 27,73,442/-(रु. सत्ताईस लाख तिहत्तर हजार चार सौ ब्यालीस मात्र) एनपीए (09-12-2022)	प्लॉट नं. 3 ख. नं. 141 मिन मोहम्मद. पुर अख्तर वार्ड- शंकर पुरवा लखनऊ उत्तर प्रदेश- 226016
(लखनऊ - लालबाग शाखा का एलसी नं. 19300044021) संजीव कुमार (उधारकर्ता) अभिबरन सिंह (सह उधारकर्ता 1) गायत्री सिंह (सह उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 4,18,795/-(रु. चार लाख अठारह हजार सात सौ पिचान्वे मात्र) एनपीए (09-12-2022)	प्लॉट नं. 3 ख. नं. 141 मिन मोहम्मद. पुर खत्र वार्ड- शंकर पुरवा लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226016
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000008524) प्रियंक त्रिपाठी (उधारकर्ता) सुचिता पटनायक (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 4,08,533/-(रु. चार लाख आठ हजार पांच सौ तैंतीस केवल) एनपीए (02-01-2021)	प्लॉट नं. 216 पर निर्मित मकान, खसरा नं. 244 मिन का हिस्सा, मोहल्ला-आदिल नगर, शंकरपुरवा वार्ड लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020
(आगरा शाखा का एलसी नं. 23400002562) अंकित अग्रवाल (उधारकर्ता) पिंकी अग्रवाल (सह उधारकर्ता 1) सचिन अग्रवाल (सह उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु.13,45,403/-(रु. तेरह लाख पैंतालीस हजार चार सौ तीन केवल) एनपीए (04-07-2024)	मकान प्लॉट नं. 37, खं. नं. 123, मुरारी विहार नगला अलबतिया लोहामंडी वार्ड आगरा आगरा उत्तर प्रदेश- 282001
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000007362) आंचल अग्रवाल (उधारकर्ता) दीपाली अग्रवाल (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.2,93,091/-(रु. दो लाख तिरानबे हजार इक्यानबे मात्र) एनपीए (04-06-2024)	फ्लैट नं. 09, तीसरी मंजिल पर, प्लॉट नं. 106/80 और 106/166 पर निर्मित, ग्राम नजरबाग, वार्ड- नजरबाग लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश- 226020 में स्थित
(लखनऊ - गोमती नगर शाखा का एलसी नं. M0266365) नफीस अहमद (उधारकर्ता) सबा बानो (सह उधारकर्ता 1) मोहम्मद रईस अहमद (सह उधारकर्ता 2) अनीस अहमद (सह उधारकर्ता 3)	25-07-2024/रु.15,25,132/-(रु. पन्द्रह लाख पच्चीस हजार एक सौ बत्तीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	फ्लैट नं. एफ 1, मकान नं. 105/96, प्रथम तल, फूलबाग नजर बाग, पोस्ट ऑफिस अम्मीनाबाद पार्क के पास, लखनऊ उत्तर प्रदेश 226010
(वाराणसी शाखा का एलसी नं. 12000004656) ओमप्रकाश पासवान (उधारकर्ता) सरिता देवी (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.6,78,061/-(रु. छह लाख अठहत्तर हजार इकसठ मात्र) एनपीए (10-07-2024)	आराजी नं. 552केएचए, 557केए, 556, 552 और 547 मौजा भुल्लनपुर परगना देहात अमानत वाराणसी वाराणसी उत्तर प्रदेश- 221108
(वाराणसी शाखा का एलसी नं. 12000004982) संजय मलिक (उधारकर्ता) प्रीति मलिक (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.27,93,619/-(रु. सत्ताईस लाख तिरानबे हजार छह सौ उन्नीस मात्र) एनपीए (09-06-2024)	फ्लैट नं. 103, पहली मंजिल, विष्णु विहार अपार्टमेंट, मौजा बिरदोपुर, परगना देहात अमानत, भेलूपुर वाराणसी वाराणसी उत्तर प्रदेश - 221010
(वाराणसी शाखा का एलसी नं. 12000005113) संजय मलिक (उधारकर्ता) प्रीति मलिक (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.8,01,861/-(रु. आठ लाख एक हजार आठ सौ इकसठ मात्र) एनपीए (09-06-2024)	फ्लैट नं. 103, पहली मंजिल, विष्णु विहार अपार्टमेंट, मौजा बिरदोपुर, परगना देहात अमानत, भेलूपुर वाराणसी वाराणसी उत्तर प्रदेश - 221010
(नोएडा-सेक्टर 2 शाखा का एलसी नं. 20000042926) अरुण कुमार (उधारकर्ता) सरोज (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.9,22,164/-(रु. नौ लाख बाईस हजार एक सौ चौसठ मात्र) एनपीए (10-07-2024)	फ्लैट नं. एसएफ -5, दूसरी मंजिल फ्रंट एलएचएस, प्लॉट नं. 32 केएच नं. 80मी कृष्णा वाटिका सुदामापुरी डूंडाहेड़ा, गाजियाबाद गाजियाबाद उत्तर प्रदेश- 201010
(कानपुर शाखा का एलसी नं. 24000003550) मैसर्स जी आर बैंक्वेट हॉल (उधारकर्ता) पूनम चड्ढा (सह उधारकर्ता 1) रविंदर चड्ढा (सह उधारकर्ता 2) अर्जुन चड्ढा (सह उधारकर्ता 3) मेसर्स जी आर सेकुरे (सह उधारकर्ता 4) मेसर्स रवींद्र वाइन (सह उधारकर्ता 5)	25-07-2024/रु. 3,75,96,207/-(रु. तीन करोड़ पचहत्तर लाख छियानबे हजार दो सौ सात मात्र) एनपीए (30-04-2021)	परिसर नं. 17 और 38 ब्लॉक-ओ, एसएच-1 गोविंद नगर कानपुर कानपुर कानपुर ग्रामीण उत्तर प्रदेश-208006
(लखनऊ - लालबाग शाखा का एलसी नं. 19300044536) अभिनेश कुमार (उधारकर्ता) क्षमा गुप्ता (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.5,76,326/-(रु. पांच लाख छिहत्तर हजार तीन सौ छब्बीस मात्र) एनपीए (10-07-2024)	प्लॉट नं. एच 124 केएचए नं. 3 मिन का भाग, जोकि ग्राम सिथौली खुर्द परगना एवं तह मोहनलाल गंज लखनऊ उत्तर प्रदेश - 226020 में स्थित
(कानपुर शाखा का एलसी नं. 24000003688) बेबी शर्मा (उधारकर्ता) शिखा शर्मा (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 5,80,149/-(रु. पांच लाख अस्सी हजार एक सौ उनचास मात्र) एनपीए (10-07-2024)	मकान नं. 460, ई डब्लू एस, बर्रा -2, ब्लॉक डी/एस, बर्रा कानपुर कानपुर शहरी उत्तर प्रदेश- 208001
(इलाहाबाद शाखा का एलसी नं. 29400001225) जय प्रकाश चौहान (उधारकर्ता) रंजना सिंह (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 26,09,462/-(रु. छब्बीस लाख नौ हजार चार सौ बासठ मात्र) एनपीए (10-07-2024)	पार्ट गाटा सं. 541 मि, मकान नं. 1370/12बी, ग्राम दरियापुर मोहल्ला खैराबाद वार्ड शास्त्री नगर, मीरांपुर, सुल्तानपुर सुल्तानपुर सुल्तानपुर उत्तर प्रदेश - 228001
(लखनऊ शाखा का एलसी नं. 06000009492) नवीन कुमार (उधारकर्ता) मधु पांडे (सह उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 10,57,498/- (रु. दस लाख सत्तावन हजार चार सौ अट्ठानबे केवल) एनपीए (10-07-2024)	प्लॉट नं. 4, खसरा नं. 385 का हिस्सा, ग्राम मडियांव, परगना- महोना तहसील- बी के टी जिला- लखनऊ लखनऊ उत्तर प्रदेश- 226020
(रासबिहारी शाखा का एलसी नं. 27000001935) विजय बहादुर (उधारकर्ता) केवला देवी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 17,43,448/- (रु. सत्रह लाख तैंतालीस हजार चार सौ अड़तालीस केवल) एनपीए (10-07-2024)	फ्लैट-2ए, द्वितीय तल, डाग-4341,4342, केएच-7473 केएच-7481, जे. I-8, मौजा-कोटरुंग, वार्ड-02 पीएस-उत्तरपारा, एचएल नं.- 94के-जी टी रोड पश्चिम बंगाल हुगली पश्चिम बंगाल
(अलीगढ़ शाखा का एलसी नं. BLSA0000543C) मोहम्मद शानू (उधारकर्ता) गुड़िया (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु.12,18,347/-(रु. बारह लाख अठारह हजार तीन सौ सैंतालीस केवल) एनपीए (04-06-2024)	खेत खसरा 3240 और 3242 का हिस्सा तुर्कमान रोड बाई पास रोड, परगना अलीगढ़ उत्तर प्रदेश 202001
(फैजाबाद शाखा का एलसी नं. HLSA00016B4A) दीपक शुक्ला (उधारकर्ता) नीलम (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 6,44,407/-(रु. छह लाख चौवालीस हजार चार सौ सात केवल) एनपीए (04-07-2024)	गाटा सं. 442 , गाटा सं. 271 मिन (पुराना) और 442 नया, चिरबेसना, आजाद नगर मार्केट, गोंडा, उत्तर प्रदेश
(लखनऊ - गोमती नगर शाखा का एलसी नं. BLSA000087D1) सीताराम (उधारकर्ता) नीलम गुप्ता (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 6,80,462/- (रु. छह लाख अस्सी हजार चार सौ बासठ केवल) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 1329 पर प्लॉट, यूनिक आईडी-164044-1329-000012 गांव फतेहपुर खास बाराबंकी उत्तर प्रदेश 225305 में स्थित
(बरेली शाखा का एलसी नं. HLSA00032C72) भुवनेश भारद्वाज (उधारकर्ता) शिल्पी शर्मा (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 29,77,591/-(रु. उनतीस लाख सतहत्तर हजार पांच सौ इक्यान्वे मात्र) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 577 का हिस्सा प्लॉट नं. 25, भाग 26, मॉर्डन गांव के पीछे, बिशप कॉनर्रेट स्कूल के पास, नैनीताल रोड, टोल प्लाजा के पास, धंघोरा पिपरियां, बरेली-243001
(सहारनपुर शाखा का एलसी नं. HLSA000356AF) ओम वीर (उधारकर्ता) पूजा डी (सह-उधारकर्ता 1) मंगेराम (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 16,38,059/- (रु. सोलह लाख अड़तीस हजार उनसठ मात्र) एनपीए (05-05-2024)	प्लॉट 19, खसरा नं. 1538, ग्राम शेखपुरा कदीम परगना श्री कृष्णपुरम कॉलोनी, सहारनपुर उत्तर प्रदेश 247001
(हाथरस शाखा का एलसी नं. HLSA0003A3F2) लवली कुमार (उधारकर्ता) अर्चना कुमारी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 8,26,189/-(रु. आठ लाख छब्बीस हजार एक सौ नवासी मात्र) एनपीए (04-07-2024)	प्लॉट नं. 16, गाटा नं. 846, सादाबाद पब्लिक स्कूल के पास, मौजा शेरपुर, भागीरथी धाम सलेमपुर रोड, कस्बा तहसील, सादाबाद जिला हाथरस 281306
(हाथरस शाखा का एलसी नं. HLSA0003A3F2TU) लवली कुमार (उधारकर्ता) अर्चना कुमारी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 4,40,043/-(रु. चार लाख चालीस हजार तैंतालीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	प्लॉट नं. 16, गाटा नं. 846, सादाबाद पब्लिक स्कूल के पास, मौजा शेरपुर, भागीरथी धाम सलेमपुर रोड, कस्बा तहसील, सादाबाद जिला हाथरस 281306
(शाहजहांपुर शाखा का एलसी नं. HLSA0003E402) बाल कृष्ण गुप्ता (उधारकर्ता) संगीता (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 21,70,757/- (रु. इक्कीस लाख सत्तर हजार सात सौ सत्तावन मात्र) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 81 के हिस्से पर निर्मित मकान, मोहल्ला गांधी नगर, यशोदा देवी धर्मशाला, परगना और तहसील जलालाबाद, जिला शाहजहाँपुर- 242221, उत्तर प्रदेश
(मुरादाबाद शाखा का एलसी नं. BLSA0001099B) संजीव सिंह (उधारकर्ता) शालू राघव (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 5,55,613/-(रु. पांच लाख पचपन हजार छह सौ तेरह मात्र) एनपीए (04-06-2024)	खसरा नं. 114 मुख्य वाके मौजा शिहोरा गोविंद भार चुंगी मोरादाबाद उत्तर प्रदेश 244001
(गाजियाबाद शाखा का एलसी नं. BLSA00010ABD) नवीन सिंह (उधारकर्ता) प्रियंका चौधरी (सह-उधारकर्ता 1) नेपाल सिंह (गारंटर 1) शिव चरण सिंह (गारंटर 2)	25-07-2024/रु. 3,50,848/- (रु. तीन लाख पचास हजार आठ सौ अड़तालीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	फ्लैट नं. बी-304, तीसरी मंजिल, पर्ल कोर्ट, रामप्रस्थ ग्रीन्स, सेक्टर 7, बीकानेरवाला के सामने, वैशाली एक्सटेंशन, गाजियाबाद 201010
(गाजियाबाद शाखा का एलसी नं. BLSA00014313) बीरेंद्र (उधारकर्ता) कोमल (सह-उधारकर्ता 1) श्री देवेंद्र कुमार (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 13,30,605/-(रु. तेरह लाख तीस हजार छह सौ पांच मात्र) एनपीए (04-07-2024)	मकान नं. 223, खसरा नं. 674, गांव बादशाहपुर, सिरौली परगना, बाबा मुखनाथ मंदिर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102
(मुरादाबाद शाखा का एलसी नं. BLSA00017F3A) मोहित परवेज (उधारकर्ता) रजिया खातून (सह-उधारकर्ता 1) श्रीमती कहकशा (सह-उधारकर्ता 2)	25-07-2024/रु. 9,04,033/-(रु. नौ लाख चार हजार तैंतीस मात्र) एनपीए (04-07-2024)	खसरा नं. 501 के ऊपर प्लॉट, मौजा भदौरा, गुलाम रसूल मस्जिद के पास, भदौरा बहार चुंगी, मोरादाबाद, उत्तर प्रदेश-244001 में स्थित
(अमेठी शाखा का एलसी नं. BLSA000184F5) सुरेश कुमार (उधारकर्ता) सुशीला (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 9,41,412/-(रु. नौ लाख इकतालीस हजार चार सौ बारह मात्र) एनपीए (04-07-2024)	गाटा सं. 341/1मि/1मि/341/3मि, परगना अल्देमऊ, तहसील- कादीपुर, लाले गंज बाजार, एवं 342/मि ग्राम- भूपतिपुर, सुल्तानपुर-228145, उत्तर प्रदेश
(आगरा शाखा का एलसी नं. HLSA00063D38) देवेंद्र (उधारकर्ता) सीमा देवी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 18,78,087/-(रु. अठारह लाख अठहत्तर हजार सत्तासी मात्र) एनपीए (04-07-2024)	मकान नं.1285, द और जिला- फिरोजाबाद, मौजा प्रेमपुर, रायपुरा (लाइन पार) सरकारी अस्पताल, राम नगर, फिरोजाबाद-283203
(लखनऊ - लालबाग शाखा का एलसी नं. 193LUK00950) मोहम्मद शमीम (उधारकर्ता) सीमा नईम (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 2,50,156/-(रु. दो लाख पचास हजार एक सौ छप्पन मात्र) एनपीए (10-07-2024)	फ्लैट नं.-4, मकान नं.-107/40, प्रथम तल, नजरबा जीएच लखनऊ उत्तर प्रदेश- 226003
(दिल्ली-सफदरजंग शाखा का एलसी नं. 196DEL36823) अजय कुमार त्यागी (उधारकर्ता) चंचल त्यागी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 60,66,223/-(रु. साठ लाख छियासठ हजार दो सौ तेईस मात्र) एनपीए (10-07-2024)	सेक्टर 50, मकान/फ्लैट नं. 310, फ्लोर नं. तृतीय, प्लॉट नं. 4 टावर-फेरारा महागुन मॉर्फियस विलेज एन ओइडा नोएडा उत्तर प्रदेश- 201301
(दिल्ली-सफदरजंग शाखा का एलसी नं. 196DEL36828) अजय कुमार त्यागी (उधारकर्ता) चंचल त्यागी (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 36,51,782/-(रु. छत्तीस लाख इक्यावन हजार सात सौ ब्यासी मात्र) एनपीए (10-07-2024)	सेक्टर 50, मकान/फ्लैट नं. 310, फ्लोर नं. तृतीय, प्लॉट नं. 4 टावर-फेरारा महागुन मॉर्फियस विलेज नोएडा नोएडा उत्तर प्रदेश- 201301
(लखनऊ-लालबाग शाखा का एलसी नं. 193LUK32048) शोभित कृष्ण (उधारकर्ता) श्री कृष्ण (सह-उधारकर्ता 1)	25-07-2024/रु. 1,95,16,798/-(रु. एक करोड़ पिचान्वे लाख सोलह हजार सात सौ अट्ठानवे मात्र) एनपीए 30-07-2017	मकान/फ्लैट नं.21/428, सेक्टर. विस्तार स्कीम, इंदिरा नगर, रिंग रोड लखनऊ उत्तर प्रदेश 226016

यदि उक्त उधारकर्ता उपरोक्तानुसार पीसीएचएफएल को भुगतान करने में विफल रहते हैं, तो पीसीएचएफएल अधिनियम की धारा 13(4) और लागू नियमों के तहत उपरोक्त सुरक्षित संपत्तियों के खिलाफ कार्रवाई करेगा, लागत और परिणामों के संबंध में पूरी तरह से उक्त उधारकर्ताओं के जोखिम पर होगा। अधिनियम के तहत उक्त उधारकर्ताओं को पीसीएचएफएल की पूर्व लिखित सहमति के बिना, बिक्री, पट्टे या अन्यथा उपरोक्त संपत्तियों को स्थानांतरित करने से प्रतिबंधित किया गया है। कोई भी व्यक्ति जो उक्त अधिनियम या उसके तहत बनाए गए नियमों के प्रावधानों का उल्लंघन करता है या उल्लंघन के लिए उकसाता है, अधिनियम के तहत प्रावधान के अनुसार कारावास और/या दंड के लिए उत्तरदायी होगा।

हस्ता/- (प्राधिकृत अधिकारी)
दिनांक: 24.08.2024, स्थान: उत्तर प्रदेश
पीरामल कैपिटल एण्ड हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड

महिलाएं आत्मनिर्भर, तो समाज स्वतः सशक्तः केशव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उपमुख्यमंत्री ने अमृत सरोवरों की देखरेख व सौन्दर्यीकरण पर विशेष फोकस रखने के दिए निर्देश

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने ग्राम्य विकास विभाग के उच्चाधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि अमृत सरोवरों की देखरेख व सौन्दर्यीकरण पर विशेष फोकस किया जाए। ग्राम चौपालों को और अधिक प्रबल व प्रभावी रूप से सफल बनाया जाए। पीएमजीएसवाई की सड़कों को शत् प्रतिशत एफडीआर तकनीक पर ही बनाने की कार्यवाही की जाए। ग्राम्य विकास विभाग की सोशल मीडिया की मजबूत विंग तैयार की जाए। ग्राम्य विकास विभाग के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर विभाग की उपलब्धियों को निरन्तर अपलोड किया जाए। निर्देश दिए कि पीएमजीएसवाई की सड़कों के अन्य सड़कों के मिलान स्थल को जन्कशन इम्प्रूवमेंट के रूप में विकसित किया जाए। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि ग्राम्य विकास विभाग के बजट का समय से सदुपयोग किया जाना सुनिश्चित किया जाए। लगातार समीक्षा व अनुश्रवण किया जाए। विकास कार्यों की जमीनी हकीकत परखने के लिए नियमित रूप से निरीक्षण किये जाए और प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। कहा कि विकास कार्य धरातल पर स्पष्ट रूप से नजर आने चाहिए। ग्राम्य विकास विभाग की उपलब्धियों व लाभार्थियों के फोटो व वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट कर हाइलाइट किया जाए।

केशव प्रसाद मौर्य शुक्रवार को अपने कैम्प कार्यालय पर आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में विभागीय कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि ग्राम्य विकास विभाग की उपलब्धियों को हाइलाइट किया जाए। सीएम डैस बोर्ड में विभाग के निर्धारित बिन्दुओं पर रिपोर्ट अपडेट रखी जाय। कहा कि समूहों के उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाने, उनकी बिक्री कराने के लिए उचित प्लेटफार्म दिलाने के प्रभावी प्रयास किए जाएं तथा उनके समूहों के उत्पादों के सर्टिफिकेशन का भी प्रयास किया जाए। उन्होंने कहा विभागीय कार्यों की प्रगति रिपोर्ट समय से उपलब्ध करायी जाय, इसके लिए जिम्मेदारी फिक्स की जाय। सीएम डैस बोर्ड में विभाग के निर्धारित बिन्दुओं पर रिपोर्ट अपडेट रखी जाय। उन्होंने निर्देश दिए कि मनरेगा के भुगतान समय से किये जाने की कार्यवाही की जाय। मनरेगा के श्रमिकों को समय से भुगतान होना ही चाहिए। निर्देश दिए कि मनरेगा श्रमिकों व समूहों की दीदियों को नियमानुसार विश्वकर्मा योजना का लाभ दिलाने की कार्यवाही की जाय। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि विभाग में भर्ती में आरक्षण के नियमों का अक्षरशः पालन किया जाना सुनिश्चित किया जाए। सभी पदों की सूची उपलब्ध करायी जाय।

उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि पीएमजीएसवाई (प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना) की सड़कों को शत् प्रतिशत एफडीआर तकनीक पर ही बनाया जाय। कहा कि एफडीआर तकनीक से बनाई गयी सड़कों से बचत की गयी धनराशि का हवाला देते हुए भारत सरकार से धनराशि उपलब्ध कराने हेतु पत्राचार किया जाय। पीएमजीएसवाई की सड़कों की नियमित चेकिंग की जाय।

नेपाल बस हादसा

सीएम योगी ने अफसरों को राहत कार्य के दिये निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नेपाल के तानाहुन जिले में शुक्रवार को पोखरा से काठमांडू जा रही भारतीय टूरिस्ट बस नदी में गिर गई। हादसे में महाराष्ट्र के 27 यात्रियों की मौत हो गयी, जबकि 16 लोगों का इलाज काठमांडू के एक अस्पताल में चल रहा है। वहीं एक व्यक्ति लापता है, जिसे रेस्क्यू टीम द्वारा ढूंढने का प्रयास किया जा रहा है। हादसे का शिकार हुए सभी यात्री महाराष्ट्र के बताये जा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे का संज्ञान लेते हुए राहत आयुक्त कार्यालय को राहत कार्यों के निर्देश दिये। इस पर राहत आयुक्त ने महराजगंज के एसडीएम और सीओ नौतनवा के साथ एसएचओ सनौली को मौके पर भेजा। साथ ही महाराष्ट्र सरकार से संपर्क किया। वहीं मृतकों के शवों को सड़क मार्ग से गोरखपुर एयरपोर्ट पहुंचाया जाएगा, जहां से एयरक्रॉफ्ट से महाराष्ट्र भेजा जाएगा।

महराजगंज के एसडीएम और सीओ मौके पर भेजे गये

राहत आयुक्त जीएस नवीन ने बताया कि दोपहर करीब 1 बजे नेपाल के तानाहुन जिले में एक भारतीय टूरिस्ट से भरी बस नदी में गिरने की सूचना मिली। इस पर उन्होंने तत्काल मदद के लिए नेपाल सरकार की बात की। साथ ही नेपाल में तैनात भारतीय पुलिस के सीनियर अधिकारियों से संपर्क किया गया। वहीं सीएम योगी ने हादसे का संज्ञान लेते हुए राहत आयुक्त कार्यालय को राहत कार्य के निर्देश दिये। राहत आयुक्त ने बताया कि सीएम योगी के निर्देश के बाद महराजगंज की नौतनवा तहसील के एसडीएम एनपी मौर्य, सीओ जय प्रकाश त्रिपाठी और सनौली एसएचओ अंकित सिंह को घटना स्थल के लिए रवाना किया गया। वहीं एडीएम पंकज वर्मा को टीम से कोआर्डिनेट करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही महाराष्ट्र सरकार से संपर्क स्थापित कर हादसे की जानकारी दी गयी। इस पर महाराष्ट्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने राहत आयुक्त से मदद की अपील की। राहत आयुक्त ने बताया कि महाराष्ट्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के आग्रह पर उत्तर प्रदेश राहत आयुक्त कार्यालय पूरे ऑपरेशन को अपने स्तर से अंजाम दे रहा है। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन के लिए महाराष्ट्र सरकार ने उत्तर प्रदेश राहत कार्यालय को नोडल बनाया है।

आज दो बजे पोस्टमार्टम के बाद भारतीय टीम को सौंपे जाएंगे शव

राहत आयुक्त ने बताया कि नेपाल सरकार से प्राप्त जानकारी के अनुसार बस में कुल 44 लोग सवार थे। इसमें 42 यात्री थे जबकि एक ड्राइवर और कंडेक्टर था। उन्होंने बताया कि बस तानाहुन जिले के पास हाईवे से लगभग 500 फीट नीचे नदी में गिर गई। हादसे की जानकारी होते ही नेपाल प्रशासन ने रेस्क्यू अभियान शुरू कर दिया। इसके बाद उत्तर प्रदेश के राहत आयुक्त कार्यालय को जानकारी दी गयी। उन्होंने बताया कि हादसे में 27 लोगों की मौत हो गयी जबकि 16 लोगों को काठमांडू के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। वहीं देर रात तक एक व्यक्ति लापता था, जिसकी रेस्क्यू टीम द्वारा तलाश की जा रही है। राहत आयुक्त ने बताया कि नेपाल प्रशासन ने शनिवार को दोपहर करीब 2 बजे पोस्टमार्टम के बाद शव सौंपे जाने की बात कही है। इसके बाद सभी 27 शव को सड़क मार्ग से गोरखपुर एयरपोर्ट लाया जाएगा, जहां एयरक्राफ्ट से महाराष्ट्र भेजा जाएगा। वहीं घायलों को इलाज के बाद सड़क मार्ग से वापस भारत लाया जाएगा।

इंफ्रास्ट्रक्चर व सोशल एक्टिविटी को लेकर अच्छा माहौल कैदियों में पॉजिटिविटी को बढ़ाएगाः मनोज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश के जेलों में निरुद्ध महिला कैदियों और उनके साथ रह रहे बच्चों के लिए विभिन्न कल्याणकारी उपाय किए जा रहे हैं। इनमें महिला कैदियों के लिए अलग आवास और बैरकों का निर्माण, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के साथ-साथ शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण पहल शामिल है।

मुख्य सचिव शुक्रवार को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के तत्वावधान में दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्री राम कॉलेज में पत्रकारिता विभाग की प्रमुख व जेल सुधारक डॉ. वर्तिका नंदा की 'उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में भारतीय जेलों में महिला कैदियों और उनके बच्चों की स्थिति और उनकी संचार आवश्यकताओं का अध्ययन' शीर्षक पर आधारित एक विस्तृत शोध रिपोर्ट का विमोचन करने के बाद समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने डॉ. वर्तिका नंदा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके द्वारा एक कठिन विषय को शोध के लिए चुना गया है। सिद्धदोष कैदियों के साथ विचाराधीन कैदियों को भी कारागार में निरुद्ध रहना पड़ता है। आमतौर पर लोग इस विषय पर चर्चा नहीं करना चाहते, क्योंकि उन्हें पॉजिटिव वाइब्स या फीलिंग महसूस नहीं होती। उन्होंने कहा कि जेलों में इंफ्रास्ट्रक्चर, संचार, सोशल एक्टिविटी को लेकर अच्छा माहौल कैदियों में पॉजिटिविटी को बढ़ायेगा और अपराध की पुनरावृत्ति दर को कम करेगा। शोध रिपोर्ट में जेलों में सुधार के लिए जो सिफारिशें की गई हैं, उन्हें प्रदेश की जेलों में लागू कराने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने डॉ. वर्तिका नंदा को इस कार्य को आगे भी जारी रखने के लिए शुभकामनायें दी। उल्लेखनीय है कि यह शोध जेल सुधारक और मीडिया शिक्षिका डॉ. वर्तिका नंदा द्वारा मीडिया, संस्कृति और समाज के डोमेन के तहत किया गया, जिसे आईसीएसएसआर द्वारा अनुमोदित करते हुए 'उत्कृष्ट' रूप में मूल्यांकित किया गया है।

अंतरिक्ष प्रधान देशों की श्रेणी में भारत शामिल

● राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा संबोधित कार्यक्रम का हुआ लाइव प्रसारण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में शुक्रवार को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस - 2024 के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस वर्ष प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस - 2024 का विषय चंद्रमा को छूते हुए जीवन को छूना: भारत की अंतरिक्ष गाथा रखा गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. एम. पी. वर्मा ने की। शुभारंभ में विभाग प्रमुख प्रो. सनातन नायक ने अतिथियों एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया। इसके पश्चात प्रो. वेंकटेश दत्ता ने सभी को कार्यक्रम के उद्देश्य एवं रुपरेखा से अवगत कराया। मंच संचालन का कार्य कैप्ट. (डॉ.) राजश्री द्वारा किया गया। कुलपति प्रो. एन. एम. पी. वर्मा ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि हमें देश की आर्थिक व्यवस्था का अध्ययन करते हुए लगभग 2 दशकों के लिए एक लक्ष्य को निर्धारित करना होगा। जिससे विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों को पूर्ण करने में विद्यार्थी अपना अहम योगदान दे सकें। क्योंकि अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रगति देश को वैश्विक स्तर पर एक अहम पहचान दिलाती है। मुख्य अतिथि प्रो. आलोक धवन ने अपने विचार रखते हुए कहा, कि अंतरिक्ष एवं सैटेलाइट के विकास के फलस्वरुप दूरसंचार, मौसम, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, कृषि एवं ऊर्जा आदि के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। साथ ही विद्यार्थियों को अपने आराम के क्षेत्र से निकलकर बाहरी दुनिया से जुड़ना चाहिये तभी उनका सर्वांगीण विकास संभव है। विशिष्ट अतिथि प्रो. इन्दिरा महरोत्रा ने चर्चा के दौरान कहा कि हमने अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक बहुत लंबी यात्रा तय की है।

मोहान रोड योजना की लांचिंग का रास्ता साफ

एलडीए की कमेटी ने ग्राम प्यारेपुर में कैम्प लगाकर किसानों की वार्ता

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एलडीए की मोहान रोड योजना (एजु सिटी) की लांचिंग का रास्ता साफ हो गया है। प्राधिकरण के उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार द्वारा गठित कमेटी ने ग्राम.प्यारेपुर में कैम्प लगाकर किसानों से सहमति के आधार पर अनुबंध कराना शुरू कर दिया है। बीते तीन दिनों में 15 किसानों ने अनुबंध पत्र पर साइन करके प्राधिकरण को जमीन का कब्जा सौंप दिया है। इससे 12 हेक्टेयर से अधिक भूमि जुटा ली गयी है। शुक्रवार को एलडीए उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने बताया कि मोहान रोड योजना के लिए काकोरी के ग्राम.प्यारेपुर व कलियाखेड़ा की कुल 785 एकड़ भूमि पूर्व में अर्जित की गयी थी। इसमें प्यारेपुर के किसानों को कलियाखेड़ा की तुलना में कम मुआवजा मिला था, जिसे लेकर किसानों द्वारा आपत्ति जतायी जा रही थी। हाल ही में हुई प्राधिकरण बोर्ड की बैठक में ग्राम.प्यारेपुर के भू.स्वामियों के लिए प्रतिकर की दर बढ़ाने का प्रस्ताव पारित किया गया है। जिसके आधार पर अब ग्राम. प्यारेपुर के किसानों को बढ़ी हुयी दर के हिसाब से मुआवजा दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्राधिकरण के अधिकारियों व अभियंताओं द्वारा ग्राम.प्यारेपुर में कैम्प लगाकर किसानों से वार्ता करके सहमति बनाने का कार्य किया जा रहा है। अब तक 15 किसानों ने अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर करके प्राधिकरण को अपनी जमीन का कब्जा दे दिया है। इसके अलावा कई अन्य किसान भी अनुबंध करने के लिए तैयार हो गये हैं। शीघ्र ही अर्जित भूमि पर भौतिक कब्जा लेते हुए योजना में सड़क, सीवर, जलापूर्ति, विद्युतिकरण व ड्रेनेज आदि का विकास कार्य शुरू करा दिया जाएगा। जिसके लिए प्रथम चरण में 225 करोड़ रूपये का टेंडर जारी किया गया है।

आईसीपीएस कार्यकारिणी के पुनः सदस्य बने दीपक मिश्र

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह ने प्रख्यात समाजवादी चिंतक और बौद्धिक सभा के अध्यक्ष दीपक मिश्र को सांविधानिक एवं संसदीय अध्ययन संस्थान की उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी का सदस्य मनोनित किया है। कार्यकारिणी में सह सभापति/ उपाध्यक्ष विधान सभा के अध्यक्ष सतीश महाना समेत 11 लोगों को नामित हैं। संस्थान के केंद्रीय अध्यक्ष लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला हैं । दीपक ने कुंवर मानवेंद्र को एक बार पुनः मनोनित करने के लिए धन्यबाद देते हुए कहा कि देश में सांविधानिक सिद्धांतों, मूल्यों और तकाजों को सशक्त करना हमारा लोकधर्म है। सांविधानिक एवं संसदीय संस्थानों को और अधिक सैद्धांतिक और लोकोन्मुखी बनाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। श्री मिश्र ने बताया कि भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने थिंक टैंक के रूप में सांविधानिक एवं संसदीय अध्ययन संस्थान की स्थापना की थी ताकि देश के विचारकों और बुद्धिजीवियों की सलाह एवं सहभागिता सक्रिय एवं समुचित रूप से नीति निर्माण व निर्धारण में हो। लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य जेबी कृपलानी, भीमराव आंबेडकर, रवि राय, मधुलिमए जैसी विभूतियां इसकी सदस्य रह चुकी हैं। जिन प्रदेशों में दो सदनीय व्यवस्था हैं वहां विधान परिषद के सभापति इसके अध्यक्ष और विधान सभा के स्पीकर उपाध्यक्ष होते हैं। दीपक के सदस्य बनने से पहले आईसीपीएस के लोगो में हिंदी नहीं थी। मिश्र के प्रयासों के पश्चात अब लोगो में हिंदी को सम्मान और यथोचित स्थान मिला है।

आंचलिक विज्ञान नगरी में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर सफल लैंडिंग की पहली वर्षगांठ पर 23 अगस्त को आंचलिक विज्ञान नगरी लखनऊ में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया गया तथा विद्यार्थिओं के लिए विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। अन्तरिक्ष विज्ञान विषय पर एक लिखित प्रश्नोत्तरी, अन्तरिक्ष में भारत विषयक पोस्टर प्रतियोगिता, टेलिस्कोप निर्माण कार्यशाला, खगोल विज्ञान पर सजीव प्रदर्शन सहित कई आयोजन किए गए। आज के विभिन्न कार्यक्रमों में विविध 24 स्थानीय स्कूलों से लगभग 1000 विद्यार्थी, शिक्षक एवं वैज्ञानिकगण ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियां विषयक एक विज्ञान व्याख्यान का आयोजन भी किया गया। डॉ. एसएन साहू, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईएसटीआरएसी, लखनऊ एवं डॉ. प्रमोद टंडन, अध्यक्ष, नासी, लखनऊ चैप्टर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। अपने व्याख्यान में बोलते हुए डॉ. एसएन साहू ने बताया कि अन्तरिक्ष के क्षेत्र में हमारे इसरो ने किस प्रकार मामूली शुरुआत की और कैसे आज इस मुकाम पर पहुंचा जिसकी सफलताओं को आज पूरा विश्व निहार रहा है। विभिन्न उपग्रहों के प्रक्षेपण यान और उद्यमिता मिशन तकनीकि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने चंद्रयान-3 मिशन के बारे में विस्तार से चर्चा की जैसे कि चंद्रयान-3 मिशन की योजना, इसका विकास, विस्तार एवं इसके प्रक्षेपण तक क्या-क्या सावधानियां रखी गयीं। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में युवाओं के लिए नौकरी के अपार अवसर उपलब्ध हैं। अत: उन्हें इस क्षेत्र में पूरी मेहनत एवं ईमानदारी के साथ आगे आना चाहिए। उन्होंने अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट सेवा से अपने देश का नाम एवं गौरव बढ़ाने हेतु युवाओं को प्रेरित किया। अपने व्याख्यान में बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद टंडन ने बताया कि अंतरिक्ष हमारे अस्तित्व के लिए एक अभिन्न अंग है और हमेशा से यह मानव जाति के लिए एक रहस्यमय और आकर्षक विषय बना रहा है। उन्होंने आगे बताया कि आज हम कुछ सहयोगी उपकरणों हेतु अन्य देशों पर निर्भर हैं।

अत: हमारे विज्ञानिकों को अपने उत्कृष्ट योगदान एवं परिश्रम से हमें आत्मनिर्भर होने पड़ेगा जिससे कि ऐसी परियोजनाओं की लागत एवं इनकी गुणवत्ता किफायती हो सके।

प्रधानों ने किया पंचायत निदेशक से संवाद

लखनऊ। अधिक धनराशि और ज्यादा अधिकारों की माँगों को लेकर प्रधानों ने शुक्रवार को पंचायतीराज निदेशक से संवाद किया और 28 अगस्त को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आयोजित दर्जन भर विभागों की बैठक के विषयों पर सहमति बनायी। शुक्रवार को यह जानकारी राष्ट्रीय पंचायतीराज ग्राम प्रधान संगठन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ.अखिलेश सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि 28 अगस्त के बाद मुख्यमंत्री से मिलकर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया जाएगा। पंचायतीराज विभाग के अलीगंज स्थित निदेशालय में आज प्रधान संगठन के ज़िलाध्यक्षों की बैठक आयोजित की गयी। राष्ट्रीय संयोजक ने बैठक को संबोधित करते हुए बताया कि संगठन ने मुख्यमंत्री से मिलकर उनके समक्ष माँगें रखी थीं। उनके मार्गदर्शन में मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह के साथ बैठक की गयी थी। पंचायतीराज निदेशक अटल राय,अपर निदेशक राज कुमार,अपर निदेशक अभय शाही,उपनिदेशक एस एन सिंह तथा योगेन्द्र कटियार के साथ आज बैठक कर माँगों पर सहमति बनायी गयी है।

चौधरी चरण सिंह की विचारधारा को आगे बढ़ाने में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

युवा राष्ट्रीय लोकदल का एक दिवसीय प्रतिनिधि एवं पदाधिकारी सम्मेलन शुक्रवार को राष्ट्रीय लोकदल प्रदेश मुख्यालय पर युवा रालोद के प्रदेश अध्यक्ष रविन्द्र सिंह पटेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महासचिव संगठन त्रिलोक त्यागी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे तथा राष्ट्रीय सचिव अनुपम मिश्रा मौजूद रहे। सम्मेलन में युवा रालोद के प्रदेश पदाधिकारियों, क्षेत्रीय पदाधिकारियों, मंडल, नगर एवं जिला अध्यक्षों ने भाग लिया जिसमें प्रदेश के युवाओं के विभिन्न मुद्दों पर गहन चर्चा हुयी।

सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि के तौर पर राष्ट्रीय महासचिव त्रिलोक त्यागी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि चौधरी चरण सिंह की विचारधारा को आगे बढ़ाने में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। आज के कार्यक्रम में युवाओं की सहभागिता ने साबित कर दिया है कि आने वाला कल राष्ट्रीय लोकदल का है। किसी भी राजनीतिक दल के संगठन में युवाओं की महती भूमिका होती है और युवा राष्ट्रीय लोकदल का आज का सम्मेलन संगठन को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। चौधरी चरण सिंह द्वारा लिखित पुस्तक शिष्टाचार युवाओं के लिए आईना है। जिसे पढकर सभ्य नागरिक बनने के उच्च पायदान को प्राप्त किया जा सकता है।

सपा सरकार की परिवारवादी नीति ने यूपी पुलिस में उगाया था भ्रष्टाचार का वटवृक्षः डॉ. राजेश्वर सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा प्रमुख अखिलेश यादव और सरोजनीनगर से भाजपा विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह के बीच शुक्रवार को ट्विटर वार देखने को मिला। सुबह सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने ट्वीट कर पुलिस विभाग से जुड़ी एक खबर पर चुटकी ली तो विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने सपा सरकार के काले कारनामों की लंबी फेहरिस्त पेश कर सपा प्रमुख को आड़े हाथों लिया।

सरोजनीनगर विधायक ने अपने आधिकारिक एक्स (ट्विटर) पर पोस्ट कर लिखा, 2005 से 2007 तक समाजवादी पार्टी की सरकार ने पैसा और भाई-भतीजावाद की फ़ेहरिस्त बना कर भ्रष्टाचार की जो पौध यूपी पुलिस में भर्ती कर उगाई, वो अब वटवृक्ष बन गई है। योगी सरकार को अब इन रखूतबीजों का संहार करना मजबूरी है। डॉ. राजेश्वर सिंह ने सपा प्रमुख को याद दिलाया थाने की दीवार कूदने वाला ये भ्रष्ट दरोग़ा, 2005 की भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी सपा सरकार की देन है जिसके बारे में आप लंबा चौड़ा ट्वीट कर रहे हैं।

डॉ. सिंह ने सपा पर तीखा हमला करते हुए आगे लिखा अब जब बात भ्रष्टाचार की चली ही है तो... सपा सरकार की भ्रष्टाचार की लंबी फेहरिस्त तो प्रदेश की जनता को भी याद है, 4,500 करोड़ का साइकिल ट्रैक विकास घोटाला, 4,000 करोड़ का खनन घोटाला, 2,500 करोड़ का एलडीए भूमि आवंटन घोटाला, 1,500 करोड़ का स्टेट हाइवे घोटाला, 1,400 करोड़ का गोमती रिवरफ्रंट घोटाला, 1,000 करोड़ का स्वास्थ्य विकास घोटाला, 800 करोड़ का जिला पंचायत प्रोजेक्ट घोटाला, 300 करोड़ का लैपटॉप वितरण घोटाला। पिछली सभी सपा सरकारों में कोई विभाग बचा नहीं जिसमें घोटाला हुआ नहीं हो। डॉ. राजेश्वर सिंह यहीं नहीं रुके उन्होंने आगे जोड़ा सरकारी योजनाओं के नाम पर 97,000 करोड़ की भारी लूट की गई, जिसका पर्दाफाश देश की प्रमुख ऑडिट एजेंसी की 2018 की रिपोर्ट में हुआ। तो जब खुद के घर में घोटालों की फसल लहलहा रही हो, तो दूसरों को नैतिकता की उपदेश देना हास्यास्पद है। विधायक ने सपा प्रमुख को याद दिलाया पुलिस भर्ती में लुटेरों को वर्दी पहनाना, और अपने ही लोगों को पदों पर बैठाना, सपा सरकार का तो असली 'विकास' मॉडल ही यही था।

मानक के अनुसार राज्य विश्वविद्यालयों पर टैक्स लगायें: आनंदीबेन

● राज्यपाल की अध्यक्षता में नगर विकास विभाग की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में शुक्रवार को राजभवन में नगर विकास विभाग की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में नगर निगम के क्षेत्र में आने वाले राज्य विश्वविद्यालयों पर नगर विकास विभाग द्वारा गृह कर, जलकर, सीवर कर से संबंधित अधिनियमों पर चर्चा हुई। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के नगर विकास विभाग के वैधानिक प्रावधानों तथा नगर निगम कारपोरेशन प्रॉपर्टी टैक्स नियम आदि पर चर्चा हुई। बैठक में विभिन्न राज्यों के संबंधित वैधानिक प्रावधानों पर भी चर्चा हुई। बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि जल कर, सीवर कर, गृह कर आदि के संबंध में नगर विकास विभाग के नियमों को अद्यतन व संशोधित किया जाए। उन्होंने ऊर्जा एवं जल संरक्षण की आवश्यकता बताते हुए कहा कि पानी की बर्बादी ना करें, उसकी महत्ता समझें। उन्होंने नगर विकास विभाग द्वारा राज्य विश्वविद्यालयों पर कर निर्धारण के संबंध में विभिन्न राज्यों के संशोधित नियमों का अध्ययन करने हेतु निर्देशित किया। राज्यपाल ने नगर विकास विभाग द्वारा विश्वविद्यालय पर लगाए गए करो की समीक्षा करते हुए कहा कि मानक के अनुसार टैक्स लगाया जाए तथा इस संदर्भ में विश्वविद्यालय एवं नगर विकास के पदाधिकारी के सामंजस्य से एक सेल बनाया जाए जो युक्ति संगत करों का आकलन कर सके। उन्होंने कहा कि नवनिर्मित विश्वविद्यालय के बारे में भी सोचा जाए तथा चुनाव दौरान व शासकीय कार्यो हेतु विश्वविद्यालय के भवनों व परिसर के इस्तेमाल के बाद उसे सही तरीके से मरम्मत करा कर तब विश्वविद्यालय को सौंपा जाए।

राज्यपाल से उप्र प्रांतीय सिविल सेवा-2022 के प्रशिक्षु अधिकारियों ने शिष्टाचार भेंट की

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से शुक्रवार को राजभवन में उत्तर प्रदेश प्रांतीय सिविल सेवा-2022 के 31 प्रशिक्षु अधिकारियों ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर राज्यपाल ने सभी अधिकारियों से उनका परिचय लिया तथा उनके क्षेत्र एवं कार्यानुभवों को जाना। उन्होंने कहा की संवेदनशीलता के साथ कार्य करें तथा जनपदों में जनता सुनवाई के दौरान समस्याओं को सुनने के बाद उसका त्वरित एवं पूर्ण निस्तारण किया जाए। राज्यपाल ने उपस्थित अधिकारियों को सलाह देते हुए कहा कि नियमों की गलत व्याख्या ना करें तथा आपसी सामंजस्य एवं जन सहयोग की भावना से कार्य करें। उन्होंने गुजरात के अपने कार्यानुभवों को साझा करते हुए कहा कि जिम्मेदारी पूर्वक सौपे गए कार्यों को ससमय पूर्ण करें व कार्य के दौरान आने वाली समस्याएं एवं उसके निस्तारण का प्रयास करें। उन्होंने कई वर्षों से लंबित पड़े मामलों के शीघ्र निस्तारण हेतु प्रयास किए जाने को निर्देशित किया। राज्यपाल ने कहा कि अपने कार्यों से समाज मे अमिट छाप छोड़ें। उन्होने कहा कि सप्ताह के दिनों को अलग-अलग कार्यो हेतु निर्धारित करके कार्य करें। इस क्रम में उन्होंने जनपद के विभिन्न ग्राम पंचायतों के लंबित कार्यो को प्राथमिकता के आधार पर सूची तैयार कर उसके निस्तारण हेतु निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि अच्छे अफसर के गुण होते हैं-ध्यान से सुनना, महिलाओं के साथ नैतिकता का व्यवहार, वृद्धजनों के प्रति संवेदनशीलता तथा मानवता के मूल्य को जीवन में आत्मसात करना।

सनातन धर्म में महाकुंभ के 45 दिन हैं अमृत योग: शांडिल्य

जगद्गुरु नारायणाचार्य स्वामी शांडिल्य महराज ने बताया महत्व, छह प्रमुख स्नान पर्वों पर है अमृत काल का योग स्नान कर दान, सेवा से बढ़ जाता है पुण्य

प्रयागराज। जगद्गुरु नारायणाचार्य स्वामी शांडिल्य महराज श्रृंगवेरपुर पीठाधीश्वर ने कहा कि इस बार तीर्थराज प्रयागराज में लगने वाले महाकुंभ में अमृत योग है। यह महाकुंभ मेला 13 जनवरी 2020 पौष पूर्णिमा से शुरू होकर 26 मार्च महाशिवरात्रि को संपन्न होगा अर्थात 45 दिन के महाकुंभ में छह प्रमुख स्नान पर्व पड़ेंगे जिसमें से तीन मुख्य स्नान पर्वों पर शाही स्नान होगा। इस दौरान सभी 13 अखाड़े क्रम से शाही स्नान करेंगे। इस दौरान करोड़ों लोग देश और विदेश के शाही स्नान देखते हैं।

जगद्गुरु नारायणाचार्य स्वामी शांडिल्य जी महराज ने बताया कि 45 दिन के महाकुंभ में छह प्रमुख स्नान पर्व है। इसमें पहला मुख्य स्नान पर्व पौष पूर्णिमा 13 जनवरी 2025 दूसरा मुख्य स्नान पर्व 14 जनवरी को मकर संक्रांति तीसरा मुख्य स्नान पर्व 29 जनवरी मौनी अमावस्या चौथा मुख्य स्नान पर्व बसंत पंचमी तीन फरवरी पांचवां मुख्य स्नान पर्व माघी पूर्णिमा 12 फरवरी और छठवां एवं अंतिम स्नान पर्व महाशिवरात्रि 26 फरवरी 2025 को है। उन्होंने बताया कि शासन और मेला प्रशासन महाकुंभ को लेकर व्यापक स्तर पर तैयारियां कर रहा है। मेला प्रशासन देश और विदेश से महाकुंभ में 40 करोड़ श्रद्धालुओं और स्नानार्थियों के आने की संभावना जता रहा है। जगद्गुरु नारायणाचार्य स्वामी शांडिल्य महराज ने कहा कि वैसे तो कुंभ प्रयागराज नासिक उज्जैन और हरिद्वार में लगता है लेकिन तीर्थराज प्रयागराज के संगम तट पर लगने वाले माघ मेला अर्द्ध कुंभ मेला और महाकुंभ मेला का विशेष महत्व है क्योंकि कि सृष्टि की रचना से पहले भगवान ब्रह्मा ने तीर्थराज प्रयागराज में विशाल यज्ञ किया था। प्रलय के दौरान भगवान विष्णु अक्षय वट पर विराजमान थे। 12 माधव लेटे हुए हनुमान जी गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम और महर्षि भारद्वाज का आश्रम सहित अन्य प्रमुख स्थल यही पर स्थित है जिससे प्रयागराज का महत्व विशेष रूप से बढ़ जाता है। जगद्गुरु नारायणाचार्य स्वामी शांडिल्य जी महराज ने बताया कि महाकुंभ के दौरान जो 45 दिन है वह बहुत महत्व का है क्योंकि सनातन धर्म में महाकुंभ के दौरान गंगा यमुना या संगम मे? स्नान करके दान खाद्य सामग्री वस्त्र गौ ?दान या वेणी दान सिर के बाल करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। मुख्य स्नान पर्वों पर स्नान करने से कल्पवास करने सेए संतों की सेवा करने से श्रद्धालुओं और स्नानार्थियों की सेवा करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। ऐसे में प्रत्येक सनातन धर्म मानने वाले को महाकुंभ के दौरान तीर्थराज प्रयागराज जरूर आना चाहिए। जगद्गुरु नारायणाचार्य स्वामी शांडिल्य महराज ने बताया कि महाकुंभ के दौरान सनातन धर्म के 33 कोटि सभी देवी देवता यक्ष गंधर्व किन्नर सभी लोग तीर्थराज प्रयागराज में विराजमान रहते हैं। इनके आने से महाकुंभ का महत्व और बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि ऐसे में सनातन धर्म के लोगों को महाकुंभ के दौरान तीर्थराज प्रयागराज परिवार बंधु बांधव और पड़ोसियों के साथ आकर गंगा संगम स्नान कर दान जरूर करना चाहिए।

ग्यारह केंद्रों पर हुई आरक्षी भर्ती परीक्षा

अंबेडकर नगर । जनपद के कुल 11 परीक्षा केंद्रों पर संचालित पुलिस आरक्षी नागरिक भर्ती परीक्षा.2023 को निष्पक्षए पारदर्शी तथा सकुशल संपन्न कराने को लेकर जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों का किया औचक निरीक्षण। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा परीक्षा केंद्र सर्वोदय इंटर कॉलेज कोटवा मोहम्मदपुरए बीण्एनण्केण्बीण् पीण्जीण् कॉलेज अकबरपुरए रामदेव जनता इंटर कॉलेज कटेहरी आदि का निरीक्षण किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा परीक्षा केन्द्रों के कक्षों का भ्रमण कर तथा परीक्षा केंद्र के समस्त कक्षों के निगरानी हेतु संचालित सीसीटीवी कंट्रोल रूम से परीक्षा जायजा लिया गया। परीक्षा के दौरान जिलाधिकारी निरंतर भ्रमणशील रहे और परीक्षा केंद्रों पर लगाए गए संबंधित मेजिस्ट्रेट्स व पुलिस अधिकारियों को नकलविहीन परीक्षा संपन्न कराने तथा किसी भी प्रकार की अनियमितता को रोकने के सख्त निर्देश दिए गए। शासन के निर्देशानुसार परीक्षा के पहले दिन के जनपद के सभी परीक्षा केंद्रों पर दोनों पालियों में परीक्षा सकुशल संपन्न कराई गई। परीक्षा के दौरान सभी परीक्षा केंद्रों पर व्यापक सुरक्षा व्यवस्था के इंतजाम किया गया था। जिलाधिकारी ने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों पर शासन के निर्देशानुसार नकलविहीन और शुचितापूर्ण व्यवस्था बनाए रखने के लिए अधिकारियों द्वारा लगातार भ्रमणशील रहकर निरीक्षण किया जाता रहा। सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वाले तत्वों पर भी नजर रखी जा रही है।अगर किसी प्रकार की अफवाह फैलती हैए तो उसे तत्काल खंडित किया जाएगा।

सदस्यता अभियान को लेकर हुई कार्यशाला

अंबेडकर नगर । भाजपा देश भर में संगठन पर्व 2024 की शुरुआत कर दिया है। जिसके अंतर्गत भाजपा की सदस्यता अभियान सितंबर माह के प्रथम सप्ताह से डिजिटल मध्यम से शुरू किया जा रहा है। भाजपा के सदस्यता अभियान की जिला कार्यशाला जिला मुख्यालय स्थित लोहिया सभागार में आयोजित किया गया।जिसके मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरीए विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्र रहे और अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारी ने किया एवम संचालन सदस्यता अभियान जिला संयोजक अमरेंद्र कांत सिंह रहे। जिला मुख्यालय स्थत लोहिया भन के सभागार में सदस्यता अभियान की जिला कार्यशाला का शुभारंभ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्रएभाजपा जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारीएजिला प्रभारी पदमसेन चौधरीएविधान परिषद सदस्य डाक्टर हरि ओम पाण्डेयएजिला पंचायत अध्यक्ष श्याम सुंदर वर्मा के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर किया ।कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि संगठन की सदस्यता संगठन की आत्मा है। सदस्यता संगठन के विचार धारा की प्रक्रिया है इसलिए भाजपा इस बार अपनी सदस्यता अभियान को सर्व स्पर्शीएसर्वव्यापी और सर्वग्रही बनाने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग और घटक तक जाकर उन्हें भाजपा का सदस्य बनाने का काम करेगी। कहा कि भाजपा ने पहली बार डिजिटल सदस्यता अभियान को 2014 में किया था। कहा कि सदस्यता के प्रथम चरण में 1 सितंबर से 25 सितंबरएद्वितीय चरण की सदस्यता अभियान 1 से 15 अक्टूबर तक चलाया जाएगा। कहा कि इस बार हम सभी को पुन: भाजपा की सदस्यता डिजिटल सदस्यता लेना है।कहा कि जन प्रतिनिधिएभाजपा नेता और कार्यकर्ताओं को लक्ष्य निर्धारित कर लोगों को करोड़ों में सदस्यता दिलायेगी। उन्होंने कहा कि 8800002024 पर मिस्ड काल कर सदस्यता ग्रहण किया जाएगा।कहा कि भाजपा सरकार के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा जिस प्रकार से देश हित और जनहित में निरंतर कार्य किया जा रहा है उससे समाज का हर वर्ग भाजपा की सदस्यता ले कर भाजपा से जुड़ना चाह रहा है।

डीएम ने पर्यटन कार्यालय निर्माण के लिए चिन्हित स्थल का किया निरीक्षण

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने शुक्रवार को सर्किट हाउस के पास निर्मित होने वाले टुरिज्म फैसल्टी सेन्टर एवं पर्यटन कार्यालय हेतु चिन्हित स्थल का जायजा लिया इस दौरान जिलाधिकारी ने पर्यटन अधिकारी से पर्यटन कार्यालय एवं टूरिज्म फैसल्टी सेन्टर निर्माण हेतु आवंटित धनराशि एवं कक्षों के निर्माण के सम्बन्ध में जानकारी ली, तो पर्यटन अधिकारी द्वारा बताया गया कि तीन मंजिला टूरिज्म फैसिल्टी सेन्टर का निर्माण कार्य कराया जायेगा। निर्माण कार्य सम्बन्धित एजेन्सी द्वारा शीघ्र ही निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जायेगा। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक सुभाष चन्द्र यादव उपस्थित रहे और निर्माण एजेन्सी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

नि:शुल्क पॉपकार्न मेकिंग मशीन के लिए करें आवेदन

सोनभद्र। जिला ग्रामोद्योग अधिकारी किरन श्रीवास्तव ने बताया कि उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित टूल-किट्स वितरण योजनान्तर्गत परम्परागत कारीगरों भड़भूजा प्रशिक्षण प्राप्त एवं अनुभवी भड़भूजा कार्य करने वाले इच्छुक उद्यमियों को नि:शुल्क पॉपकार्न मेकिंग मशीन देकर स्वरोजगार उपलब्ध कराये जाने का प्राविधान है। परम्परागत भड़भूजा कारीगर उद्यमी बोर्ड की वेबसाइट पर आनलाइन आवेदन कर सकतें है। उन्होने बताया कि ऑनलाइन सेवाओं के अन्तर्गत ऑनलाइन टूल-किट्स पंजीकरण करने की अन्तिम तिथि 02 सितम्बर निर्धारित की गई है। पंजीकरण के उपरान्त हार्ड कापी जिला ग्रामोद्योग कार्यालय नियर मिशन अस्तपाल पिपरी रोड स्थित कार्यालय में जमा करना आवश्यक है।

जिलें के 06 परीक्षा केन्द्रों पर हुई आरक्षी सीधी भर्ती लिखित परीक्षा

सोनभद्र। जनपद के कुल 06 परीक्षा केन्द्रों पर दो पालियों में आयोजित उत्तर प्रदेश पुलिस की आरक्षी सीधी भर्ती लिखित परीक्षा को निष्पक्ष, पारदर्शी व शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने के दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक डा0 यशवीर सिंह व अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय कालू सिंह द्वारा राजकीय पॉलिटेक्निक लोढ़ी परीक्षा केन्द्र का औचक निरीक्षण किया गया तथा सुरक्षा व्यवस्था व परीक्षा केन्द्र पर लगे सीसीटीवी कैमरों की चेकिंग की गयी। पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस लाइन में बने कंट्रोल रूम में परीक्षा केन्द्रों की निगरानी में लगे सीसीटीवी कैमरों से सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया एवं सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। साथ ही अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय सहित समस्त क्षेत्राधिकारी व थाना चौकी व प्रभारियों द्वारा परीक्षा केंद्रों पर लगातार भ्रमणशील रहते हुए सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया जा रहा। सभी परीक्षा केन्द्रों प्रमुख स्थानों चौराहों पर क्यूआरटी टीम, पीएसी सहित पर्याप्त पुलिस बल की ड्यूटी लगाई गई है। सभी परीक्षा केंद्रों पर पर्याप्त संख्या में सीसीटीवी कैमरे लगाये गए हैं। सीसीटीवी कैमरों की मॉनिटरिंग हेतु कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है जिसमें क्षेत्राधिकारी ओबरा के नेतृत्व में ड्युटी में लगे पुलिसकर्मियों द्वारा अनवरत निगरानी सुनिश्चित की जा रही है। सुगम यातायात व्यवस्था हेतु सभी चौराहों तिराहों बाजारों व भीड़भाड़ वाले स्थानों पर यातायात कर्मी तैनात हैं। सोशल मीडिया टीम व अभिसूचना तंत्र पूर्ण रूप से सक्रिय है। सोशल मीडिया के सभी प्लेटफॉर्मों की सतत निगरानी की जा रही है। आपत्तिजनक भड़काऊ पोस्ट प्रसारित करने वालों के विरुद्ध सख्त वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

न्यायाधीशों की घटती संख्या से बढ़ रहा मुकदमों का बोझ!

उच्च न्यायालय प्रयागराज और उसकी खंडपीठ लखनऊ में लगभग आधी हो गई न्यायाधीशों की संख्या 10 लाख 83 हजार 318 मुकदमे हाइकोर्ट के लिए बने चुनौती

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में पिछले दस वर्षों में विचाराधीन मुकदमों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है। 01 जनवरी 2014 में जहां कुल 970579 मुकदमे लंबित थे तो वहीं एक जनवरी 2024 को यह संख्या बढ़कर 1066126 हो गई है और अगले छह माह बाद एक जून 2024 को इसमें और इजाफा हुआ। जहां लंबित मुकदमों की संख्या बढ़कर 10 लाख 83 हजार 318 हो गई है। कोरोना काल के दौरान वर्ष 2019 में मुकदमों की संख्या में भारी गिरावट आई थी जो 933714 तक सिमट गई थी। इसके बाद बढ़ोतरी लगातार जारी है। जानकार इसके लिए जजों की नियुक्ति में अनावश्यक देरी और कमी को इसकी वजह बता रहे हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट में जजों की कुल संख्या 160 है लेकिन वर्तमान में मुख्य न्यायाधीश को शामिल कर लिए जाए तो उच्च न्यायालय प्रयागराज और खंडपीठ लखनऊ को मिलकर केवल 84 न्यायाधीश ही कार्यरत हैं। जिसमें से कुछ निकट भविष्य में सेवानिवृत्त भी होने वाले हैं। हाईकोर्ट ने कोलेजियम के पास पिछले कुछ वर्षों में कई बार जजों की नियुक्ति की सिफारिश की लेकिन किन्हीं कारणों से प्रक्रिया ही अधूरी रह गई। अभी जून 2024 में दस अधिवक्ताओं के नाम जज के लिए भेजे गए थे लेकिन इस स्थिति में भी कोई सुध लेने वाला नहीं है। सूत्र बताते हैं कि इनमें से किसी की नियुक्ति की संभावना नहीं है और सेवानिवृत्त होने से जजों की संख्या में लगातार कमी आती जा रही है। बार काउंसिल के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता अमरेन्द्र नाथ सिंह और अधिवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने जजों की घटती संख्या और नियुक्ति में देरी वादकारियों को त्वरित न्याय देने में बाधक बन रही है। वरिष्ठ अधिवक्ता ए एन त्रिपाठी का कहना है कि एस पी गुप्ता केस में सुप्रीम कोर्ट ने कोलेजियम सिस्टम लागू करते समय कहा था कि हमें पता होता है कब जज सेवानिवृत्त होंगे तो हम पहले ही प्रक्रिया शुरू कर खाली पदों को भरने में सफल होंगे। किंतु इस पर कभी भी अमल नहीं किया गया। केंद्र सरकार ने कानून पारित किया और सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक करार दिया। उसके बाद सरकार ने चुप्पी साध ली। भाई भतीजावाद के लगातार लग रहे आरोप और अब आरक्षण की मांग खाली पदों की नियुक्ति प्रक्रिया को चिढ़ा रहे हैं।

द गुरुकुलम स्कूल ने उत्साह और भक्ति के साथ मनाई जनमाष्टमी

मुग़लसरायध्चन्दौली । द गुरुकुलम स्कूल फिजिक्स वाला द्वारा संचालित ने जनमाष्टमी की पूर्व.उत्सव का भव्य आयोजन कियाए इस शुभ अवसर के उत्सव के लिए मंच तैयार किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत एंकर अनव यादव द्वारा जनमाष्टमी के महत्व के बारे में जानकारी देने के साथ हुईए जिसने इस पवित्र अवसर के महत्व को स्पष्ट किया। इस अवसर पर द गुरुकुलम स्कूल की प्रधानाचार्य प्रियंका मुखर्जी ने जनमाष्टमी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किएए जिसमें भगवान श्री कृष्ण के जन्म से जुड़े मूल्यों और शिक्षाओं पर जोर दिया। इस कार्यक्रम की प्रमुख आकर्षण रही छात्रों की अद्भुत प्रस्तुतियां। नर्सरी और यूकेजी के छात्रों ने एक मनमोहक नृत्य प्रदर्शन के साथ दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दियाए जिसके बाद एक कविता पाठ हुआए जिसने उनकी रचनात्मकता और उत्साह को उजागर किया। रैम्प वॉक में राधा. कृष्ण की मनमोहक छवियां प्रदर्शित की गईंए जबकि गरबा नृत्य और ष्जनमाष्टमी धमाकाष् ने दर्शकों को उत्साही और रंगीन प्रस्तुतियों से भर दिया। समारोह का समापन छवि भारद्वाज द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआए जिन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सभी के योगदान के लिए आभार व्यक्त किया।

अज्ञात बालक को जिला बाल संरक्षण टीम ने दिया संरक्षण

सोनभद्र। जनपद के हाथीनाला थाना पर अज्ञात सात वर्ष का लावारिस बालक प्राप्त हुआ जिसकी सूचना थाने के माध्यम से चाईल्ड हेल्पलाइन नंबर पर दिया गया था सूचना प्राप्त होते ही तत्काल संज्ञान लेते हुए जिला बाल संरक्षण अधिकारी पुनीत टण्डन द्वारा जिला बाल संरक्षण इकाई सोनभद्र से संरक्षण अधिकारी गायत्री दुबे एवं ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे की टीम गठित करते हुए निर्देशित किया गया कि तत्काल मौके पर पहुंच कर नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही करते हुए अवगत करायें जिसके उपरांत टीम द्वारा मौक पर थाना हाथीनाला पर पहुंच कर अज्ञात नाबालिक बालक की काउंसलिंग की गयी बालक द्वारा अपना नाम व पिता का नाम तों बताया गया पर निवास स्थान नहीं बता पाया, जिसके बाद टीम द्वारा बालक के सुरक्षा एवं संरक्षण के दृष्टिगत अपने अभिरक्षा में लेते हुए बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किए जाने हेतु ले जाया गया। ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे नें बताया कि बालक को संरक्षण में ले लिया गया है और पुनः काउंसलिंग कराते हुए बालक के परिजनों की खोज बीन की जायेगी और पता चलने पर बाल कल्याण समिति के आदेशानुसार उसके परिजनों को सुपुर्द किया जाएगा। बताया कि यदि इस प्रकार की कोई सूचना प्राप्त होती है तो तत्काल चाईल्ड हेल्पलाइन टोल फ्री नंबर 1098 पर सूचित किया जा सकता है।

व्यापारिक और सामाजिक संगठनों ने रैली और बंद का किया आह्वान

मीरजापुर। बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार एवं उनके धार्मिक स्थलों को निशाना बनाए जाने को लेकर हिंदू रक्षा समिति मीरजापुर एवं सर्व हिंदू समाज द्वारा शनिवार को घंटाघर से निकलने वाली जनाक्रोश रैली और बंद को लेकर मीरजापुर के व्यापारिक एवं सामाजिक संगठनों ने व्यापारी नेता श्यामसुंदर केशरी के आवास पर बैठक कर रैली और बंद का आहवाहन कर अपना समर्थन दिया।इस बैठक में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडलएदवा विक्रेता संघएट्रांसपोर्ट एसोसिएशनएमीरजापुर दरी मैन्युफैक्चरिंगएकपड़ा कमेटीएहार्डवेयर मीरजापुर वितरण समितिएमीरजापुर ब्रास इंडस्ट्रीज सहित अन्य संगठनों ने प्रतिभाग किया।सभी व्यापारिक एवं सामाजिक संगठनों ने बांग्लादेश में बिगड़ते हालातएहिन्दुओं एवं उनके धार्मिक स्थलों को निशाना बनाए जाने को लेकर चिंता जताई।सभी संगठनों ने कहा की भारत सरकार बांग्लादेश में हो रहे अल्पसंख्यक समुदाय की रक्षा के लिए जरूरी कदम उठाए।आंदोलन के नाम पर बांग्लादेश में हिंदुओं के घरों को जलाया जा रहा हैएउनके धार्मिक स्थलों में तोडफोड़कर आगजनी की जा रही है।हिंदू बहन बेटियों को निशाना बनाया जा रहा है।बांग्लादेश में बौद्ध धर्मएजैनए सिख आदि को निशाना बनाकर उनकी दुकानों को लूटा जा रहा है।

पुलिस भर्ती परीक्षा केन्द्रों का किया औचक निरीक्षण

प्रयागराज। मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत और जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल ने शुक्रवार को पुलिस भर्ती के परीक्षा केन्द्रों में मानीटरिंग हेतु बनाए गए कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। निरीक्षण करते हुए दोनों अधिकारियों ने सीसीटीवी कैमरों की क्रियाशीलता और इसके माध्यम से हो रही मानीटरिंग का भी परीक्षण किया। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत ने शुक्रवार को जनपद के विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित हो रही उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती परीक्षा को सकुशल ढंग से सम्पन्न कराए जाने के दृष्टिगत डीपी गर्ल्स इण्टर कालेज इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विधि संकाय अंग्रेजी विभाग राजनीति शास्त्र विभाग सहित अन्य परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने परीक्षा केन्द्रों पर बनाए गए कंट्रोल रूम पहुंचकर सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से कक्षों में परीक्षा संचालन को देखा। उन्होंने परीक्षा केन्द्र पर उपस्थित स्टैटिक मजिस्ट्रेट और अन्य सम्बंधित अधिकारियों को परीक्षा को सकुशल ढंग से सम्पन्न कराए जाने हेतु निर्देशित किया। वहीं जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल द्वारा शुक्रवार को जनपद के विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित हो रही उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती परीक्षा को सकुशलढंग से सम्पन्न कराये जाने के दृष्टिगत मेरी वानामेकर गर्ल्स इण्टरमीडिएट कालेज महबूब अली स्कूल एण्ड कालेज भारत स्काउट एण्ड गाइड इण्टर कालेज सहित अन्य परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने परीक्षा केन्द्रों में पुलिस भर्ती परीक्षा की मानीटरिंग हेतु बनाये गये कंट्रोल रूम का निरीक्षण करते हुए वहां पर सीसीटीवी कैमरों की क्रियाशीलता और इसके माध्यम से हो रही मानीटरिंग का परीक्षण किया।

प्रधानमंत्री के डिजिटल इंडिया को बढ़वा देने पर हुआ मंथन

सोनभद्र। युवा भारत ट्रस्ट की बैठक सदर ब्लॉक के राजपुर गाँव में ट्रस्ट के पदाधिकारी ओम प्रकाश पटेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक को सम्बोधित करते हुए ट्रस्ट के संस्थापक यूथ आइकॉन सौरभ कांत पति तिवारी ने कहा की जनपद में लगभग पंद्रह हजार एसएसजी ग्रुप स्वयं सहायता समूह हैं लेकिन उनमे से ऐसे समूहो की संख्या बहुत कम हैं जो कोई विशेष वस्तु का उत्पादन करते हों। यदि समूह की महिलाये किसी वस्तु का उत्पादन कर भी लेती हैं तो सबसे पहले उनके उत्पाद को बेचना बहुत मुश्किल हो जाता हैं, यदि किसी तरह से उनका माल बिक भी गया तो जानकारी के आभाव में उनको उस उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। उन्होंने कहा की ज्यादातर प्राइवेट माइक्रोफाइनेंस कंपनी यहाँ पर हावी हो गई हैं। जो समूहों को सिर्फ लोन बाँट रही हैं और जनपद में इतनी गरीबी और बेरोजगारी हैं की उन पैसों का सदुपयोग न होकर वे पैसे घर की जरूरतों में खर्च हो जा रहे है। फिर क्या ब्याज का ब्याज देना पड़ता हैं।

हरिन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय के साहित्य ने भारतीय पुनर्जागरण काल और आधुनिक भारत के मध्य एक सेतु का कार्य किया: राकेश

गाजीपुर। स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पूर्व शोध प्रबन्ध प्रस्तुत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी महाविद्यालय के अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ तथा विभागीय शोध समिति के तत्वावधान में महाविद्यालय के सेमिनार हाल में सम्पन्न हुईए जिसमें महाविद्यालय के प्राध्यापकए शोधार्थी व छात्र. छात्राएं उपस्थित रहे। उक्त संगोष्ठी में भाषा संकाय के अंतर्गत अंग्रेजी विषय के शोधार्थी राकेश वर्मा ने अपने शोध प्रबन्ध शीर्षक ष्हरिन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय के नाटकों में सामाजिक आलोचनारू एक चयनित अध्ययनष् नामक विषय पर शोध प्रबन्ध व उसकी विषय वस्तु प्रस्तुत करते हुए कहा कि हरिन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय एक बहु प्रतिभा सम्पन्न लेखक थे। उन्होंने कविताए कहानियाँ एवं नाटक लिखें हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध में उनके प्रसिद्ध मुख्य नाटक खिड़कीए तोताए सन्तरी की लालटेनए ताबूतए शाम की लालटेन में वर्णित सामाजिक सरोकारों का अध्ययन किया और पाया कि उनकी लेखनी ने भारतीय पुनर्जागरण काल और आधुनिक भारत के मध्य एक सेतु का कार्य किया है साथ ही साथ उनके नाटकों में वर्ग.संघर्ष भी पाया गया। प्रस्तुतिकरण के बाद विभागीय शोध समितिए अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ व प्राध्यापकों तथा शोध छात्र.छात्राओं द्वारा शोध पर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए जिनका शोधार्थी राकेश वर्मा ने संतुष्टिपूर्ण एवं उचित उत्तर दिया। तत्पश्चात समिति एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफे0 ;डॉ0द्ध राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय ने शोध प्रबन्ध को विश्वविद्यालय में जमा करने की संस्तुति प्रदान किया। इस संगोष्ठी में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफे0 ;डॉ0द्ध राघवेन्द्र कुमार पाण्डेयए अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के संयोजक प्रोफे0 एस0 डी0 सिंह परिहारए शोध निर्देशक व अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफे0 ;डॉ0द्ध रविशंकर सिंहए अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के सदस्य प्रोफे ;डॉ0द्ध अरुण कुमार डॉ0 इंदीवर रत्न पाठकए डॉ0 अशोक कुमार एवं महाविद्यालय के प्राध्यापकगण तथा शोध छात्र छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

एक दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

मीरजापुर राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यकम के अर्न्तगत दिनांक 22ण्08ण्2024 को ;एक दिवसीय प्रशिक्षणद्ध व्तपमदजंजपवद व सिूं म्दवितबमते का आयोजन खण्ड विकास अधिकारी लालगंजए मीरजापुर में मुख्य चिकित्साधिकारी मीरजापुर के आदेशानुसार तथा डा0 मुकेश प्रसादए उपमुख्य चिकित्साधिकारीध् नोडल अधिकारी के निर्देशन में एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन बी0डी0ओ0 लालगंज के अध्यक्षता में किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान एवं सचिव द्वारा प्रतिभाग कर कार्यकम को सफलता पूर्वक सम्पादित किया गया। जिससे लोगो को प्रशिक्षण के माध्यम से तम्बाकू से होने वाले दुष्प्रभावो के विषय में लोगो का जागरूक किया गया। जिला सलाहकारए डा0 राजेश यादव द्वारा कार्यक्रम में प्रतिभाग किये ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान एवं सचिव को तम्बाकू नियंत्रण अधिनियम एंव तम्बाकू मुक्त ग्राम सभा के विषय में विस्तृत जानकारी दी। जिससे लोग अपने आस.पास तम्बाकू से ग्रसित लोगो को इसका सेवन न करने की सलाह दे तथा इससे होने वाले दुष्प्रभाव से बच सकेए तथा तम्बाकू से ग्रसित व्यक्तियों को मण्डलीय जिला चिकित्सालय के कक्ष सं0.205 में तम्बाकू छोड़ने के इच्छुक व्यक्ति को आने के सुझाव दिये।

आयोजन को लेकर हुई चर्चा

प्रयागराज। कार्यक्रम के आयोजन को लेकर चर्चा की गई। शो के हर एक्टर के सफर में ऐसे कई शानदार मुकाम आते हैं। जहां उन कलाकारों को अपना टैलेंट दिखाने का मौका मिलता है। जी टीवी के शो प्यार का पहला नाम राधा मोहन में कादंबरी का रोल निभा रहीं स्वाति शाह के लिए भी पिछले कुछ महीने एक बिल्कुल अनूठा अनुभव रहा है। ज्यादा जानने के लिए देखिए प्यार का पहला नाम राधा मोहन रोज रात आठ बजे सिर्फजी टीवी पर आयेगा। जहां उनका कैरेक्टर व्हीलचेयर पर बैठकर पैरालाइज़ होने का नाटक करता है। इससे न सिर्फ उनकी एक्टिंग स्किल्स की परख हुई बल्कि शरीर हिलाए बिना मुश्किल भावनाओं को दर्शाने की उनकी समझ भी बढ़ी। अब जबकि इस कहानी में कादंबरी का सच सामने आ चुका है तो वो खुलकर सामने आ चुकी हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

पोलैंड यात्रा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पोलैंड यात्रा 45 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा है। महत्वपूर्ण राजनयिक कदम के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 21 अगस्त को पोलैंड पहुंचे। यह इस देश में 45 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा है। इस ऐतिहासिक यात्रा से भारत-पोलैंड संबंधों का बढ़ता महत्व रेखांकित होता है। लगभग 70 वर्ष पहले स्थापित हुए इन संबंधों ने काफी प्रगति की है। भारत और पोलैंड के बीच समृद्ध राजनयिक इतिहास है जिसकी शुरुआत 1950 के दशकारंभ में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति तथा पोलैंड के द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका से उबरने के बाद हुई थी। दोनों देशों ने 1954 में औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित कर परस्पर सम्मान, साझा मूल्यों तथा समान हितों पर आधारित साझेदारी की नीव रखी थी। शीतयुद्ध के दौरान भी भारत और पोलैंड के बीच हार्दिक संबंध बने रहे जिनको गुटनिरपेक्ष आंदोलन में उनकी सदस्यता से बल मिलता था। इस कालखंड में द्विपक्षीय व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा राजनीतिक संवाद में स्थाई प्रगति हुई। लेकिन शीतयुद्ध समाप्त होने के बाद इन संबंधों में थोड़ी 'सुस्ती' आई क्योंकि दोनों देश घरेलू सुधारों तथा आर्थिक परिवर्तनों पर ज्यादा ध्यान दे रहे थे। इसके बावजूद दोनों देशों के बीच संबंधों की गरमाहट बनी रही। हालिया वर्षों में भारत-पोलैंड संबंधों में तेजी से प्रगति हुई। यह परस्पर आर्थिक हितों, वैश्विक सुरक्षा के प्रति साझा सरोकारों तथा बहुपक्षीयता के प्रति प्रतिबद्धता से संचालित हैं। यूरोपीय संघ के सदस्य के रूप में पोलैंड की मध्य यूरोप में प्रमुख भूमिका है और वह इस क्षेत्र से संपर्क करने में भारत का महत्वपूर्ण साझीदार बना हुआ है। इस बीच भारत की तेज आर्थिक प्रगति तथा एशिया में उसकी रणनीतिक स्थिति ने उसे पोलैंड के लिए आकर्षक साझीदार बना दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी की पोलैंड यात्रा द्विपक्षीय संबंधों को गहरा बनाने व पुन: ऊर्जान्वित करने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यह तथ्य खासकर उल्लेखनीय है कि किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने 1979 के बाद पहली बार पोलैंड यात्रा की है। इस यात्रा से अनेक प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग बढ़ने की उम्मीद है जिनमें व्यापार एवं निवेश, रक्षा, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल हैं। भारत और पोलैंड के बीच व्यापार लगातार बढ़ रहा है और द्विपक्षीय व्यापार पिछले वर्षों में लगभग 3 बिलियन डालर तक पहुंचा है। पोलिश कंपनियों ने भारतीय बाजार व खासकर रक्षा, ऊर्जा और ढांचागत संरचना क्षेत्रों में काफी दिलचस्पी दिखाई है। इसी प्रकार भारतीय उद्यमी पोलैंड में खासकर सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और विनिर्माण में अवसर खोज रहे हैं। रक्षा सहयोग परस्पर हित का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस दृष्टिकोण से बढ़ते रक्षा उद्योग वाला देश भारत पोलैंड का महत्वपूर्ण साझीदार बन सकता है। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। पोलैंड में बड़ी संख्या में अनिवासी भारतीय हैं और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ रहा है। पोलैंड में भारतीय फिल्में, भोजन और त्योहार लगातार लोकप्रिय होते जा रहे हैं जिससे दोनों देशों की जनता के बीच बढ़ते संपर्कों का पता चलता है। भारत और पोलैंड एकसाथ अनेक साझा चुनौतियों को संबोधित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं जिनमें वैश्विक सुरक्षा से लेकर जलवायु परिवर्तन तक शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यह पोलैंड यात्रा ज्यादा गतिशील व परस्पर लाभदायक साझेदारी बढ़ाने में अपना योगदान करेगी।

शहरों में बाढ़ की समस्या

भावी मानसून की विभीषिका से जीवन और संपत्ति बचाने के लिए नगरों एवं महानगरों में तत्काल समग्र आपदा प्रबंधन व ढांचागत सुधारों की आवश्यकता है। इसमें स्थानीय निकायों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

बी. के. सिंह
(लेखक, सेवानिवृत्त वन अधिकारी हैं)

अत्यधिक वाष्पीकरण तथा इसके कारण बादलों में जमा नमी से दुनिया भर में अचानक भारी बरसात के साथ ही समुद्रों का सतही तापमान बढ़ रहा है। ऐसे में अनुकूल परिस्थितियों में भारी बरसात होती है। कई बार पूरे साल भर में होने वाली बरसात 24 से 48 घंटों में हो जाती है। शहरी ढांचागत संरचनायें इस चुनौती का सामना नहीं कर पाती हैं जिसके कारण इमारतों के भूतल व बेसमेंट में पानी भर जाना सामान्य हो गया है। इसके साथ ही रेल, सड़क व विमान परिवहन प्रभावित होता है जिससे बिजनेसों को नुकसान होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भारी बरसात के कारण फसलें नष्ट होती हैं, भूस्खलन होते हैं तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन के कारण जीवन और आजीवका का नुकसान अर्थव्यवस्था को पटरी से उतार देता है। इससे बजट पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है क्योंकि सार्वजनिक धन को नुकसान पहुंची ढांचागत संरचनाओं के निर्माण पर खर्च करना पड़ता है। इसके अलावा निजी संपत्तियों के नुकसान का मुआवजा भी देना पड़ता है।

30 जुलाई को वायनाड में आई ऐसी विभीषिका में 400 लोगों की जान गई तथा लगभग इतने ही लोग घायल हुए। यह हाल में सबसे बड़ी विभीषिका बन गई है। समुद्र सतह से 1550 मीटर ऊंचे पहाड़ की चोटी से बड़े बोल्डर और पत्थर 8.26 हेक्टर क्षेत्र में गिरे। 7 किलोमीटर लुढ़कने के बाद इन्होंने इमारतों, सड़कों व पुलों, आदि को तीन-चार गांवों में भारी नुकसान पहुंचाया। एक टन के बोल्डरों ने 9 मेगाजूल की ऊर्जा प्राप्त कर ली जो ग्रामीण क्षेत्र में आरसीसी इमारत को ध्वस्त करने के लिए काफी है। मानसून की विभीषिका ने पश्चिमी घाटों तथा हिमालय क्षेत्र में अन्य स्थानों पर भी भारी तबाही मचाई। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में भूस्खलनों और सड़कों व पुलों के टूटने से आम जनता व पर्यटकों के लिए भारी मुसीबतें पैदा कीं। हालांकि, प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली भारी बरसात तथा बादल फटने जैसी घटनाओं को रोका नहीं जा सकता है, पर शहरों की ढांचागत संरचनाओं में समुचित परिवर्तन व सुधार के माध्यम से लोगों की संपत्ति व उनके जीवन को होने वाले नुकसान को बड़ी सीमा तक कम किया जा सकता है। इस संबंध में नगर निगमों को कार्रवाई करने के साथ ही जनता में जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत भी है।

मैं यहां महानगरों के मुद्दों पर गौर करते हुए कुछ सुझाव देना चाहता हूं। दिल्ली के राजेंद्रनगर में पिछले महीने राव कोचिंग के बेसमेंट में तीन सिविल सर्विस की तैयारी करने वाले छात्रों की मौत तथा एक और छात्र की बिजली का करेंट लगने से होने वाली मौत ने स्थानीय संस्था की लापरवाही प्रकट की। हमें उन सावधानियों की जानकारी होनी चाहिए जिसका प्रयोग कर एजेंसियां और इमारतों में रहने वाले लोग यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ऐसी घटनायें फिर न हों। मुंबई नगर निगम ने पहले ही 'स्टार्मवाटर ड्रेन' तथा ऐसी ही ढांचागत संरचनायें तैयार की थीं जो एक घंटे में 25 एमएम बरसात से निपट सकती हैं। पिछले वर्षों में बार-बार आने वाली बाढ़ ने उनको अपनी जलनिकासी व्यवस्था सुधारने के लिए मजबूर किया है जिससे वह 50एमएम प्रति घंटे की भारी बरसात से निपट सकती है। लेकिन मुंबई, रत्नागिरि, सतारा, महाबलेश्वर व अन्य स्थानों पर प्रति घंटे 80 से 100 एमएम बरसात तक हुई। इसी प्रकार देश के कुछ अन्य क्षेत्रों में अक्सर बादल फटने के कारण प्रति घंटे तीन से चार घंटे तक 80 से 100 एमएम बरसात दर्ज की गई। वायनाड त्रासदी का कारण भी 48 घंटे में 570 एमएम बरसात थी। इसे देखते हुए मुंबई, चेन्नै, हैदराबाद, बैंगलुरू, दिल्ली, गुरुग्राम आदि के नगर निगमों को अपनी जल निकासी व्यवस्था ऐसी बनानी चाहिए जो कम से कम प्रति घंटे 100 एमएम बरसात से निपट सके। स्टार्मवाटर ड्रेनों तथा झील की तलहटी वाले स्थानों से अवैध कब्जे फौरन हटाने चाहिए।

इसके साथ ही नालों से मिट्टी नियमित रूप से निकाली जानी चाहिए और उनकी सफाई होनी चाहिए ताकि प्लास्टिक, पालीथीन बैग, सिल्ट आदि हटा कर उनको बहुत दूर स्थानों पर फेंका जा सके। शहरों में झीलें जल प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनका जल स्तर नियंत्रित करने के लिए सेल्यूस गेट होने चाहिए। झीलों से मिट्टी तथा वनस्पतियां निकालने का काम समय-समय पर होना चाहिए। इसके साथ ही जल भंडारों को अधिकतम स्तर तक स्वच्छ रखने का प्रयास होना चाहिए। झीलों में जल प्रवेश के सभी स्थानों की नियमित निगरानी यह सुनिश्चित करने के लिए होनी चाहिए कि उनमें अशोधित सीवेज न पहुंचने पाए। इस बात की संभावना है कि तेजी से बाढ़ आने के समय झील का पानी लोगों के घरों में घुस जाए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सीवेज का पानी लोगों के घरों में न घुसे। महानगरों में स्टार्मवाटर ड्रेनों पर अक्सर आंशिक रूप से कब्जे हो जाते हैं और लोग मकान या छोटी झोंपड़ियां वहां बना लेते हैं।

ऐसे कब्जादारों का दूसरी जगह पुनर्वास कर नालों को जल प्रवाह के लिए पूरी तरह खुला रखा जाना चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्तमान स्टार्मवाटर ड्रेनें प्रति घंटे 25 एमएम से अधिक बरसात से निपटने में सक्षम नहीं हैं। अनेक शहरी झीलों के जलग्रहण क्षेत्र पर कब्जे हो गए हैं। यह क्षेत्र भारी बाढ़ को रोकने तथा जल संरक्षण में सहायक होता है। भंडारण सुविधाओं में कमी के कारण पानी बेसमेंट तथा इमारतों के भूतल में भर जाता है जिससे लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। नवंबर, 2015 में 24 घंटे में लगभग 483 एमएम बरसात से चेन्नै में अब तक की एक भयावहतम आपदा आई थी। इसमें 500 लोगों की जान गई, 10 लाख मकान पानी में डूब गए तथा 1.8 मिलियन लोगों को विस्थापित होना पड़ा। इस विभीषिका के दो कारण थे-चेन्नै में झील के जलग्रहण क्षेत्रों पर कब्जे तथा चेंब्रम बक्कम जल भंडार में जल स्तर नियंत्रित करने में विलम्ब। इस स्थिति पर इस भंडार से 1.5 लाख क्यूज़ेक पानी अडियार नदी में डालने पर ही नियंत्रण हो सका था।

चेन्नै के अनेक 'वेटलैंड' पर विभिन्न समुदायों ने कब्जा कर लिया है। 5000 हेक्टर से अधिक क्षेत्र में फैला पल्लिकरनाई वेटलैंड अब केवल 10 प्रतिशत रह गया है और 500 हेक्टर वेटलैंड ही बचा है। कब्जे न हटाए जाने की स्थिति में भविष्य में ऐसी आपदा से इनकार नहीं किया जा सकता है। स्टार्मवाटर के लिए जलनिकासी पर काम करते हुए नगर निगमों को सीवर लाइनों पर भी ध्यान देना चाहिए। नालों ओर मैनहोलों को ढंकने पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि कोई व्यक्ति इनमें गिरे नहीं। सड़क पर बाढ़ आने और उसके नदी में बदल जाने पर बिना ढके नाले और सीवर लाइनें लोगों की जान जाने का कारण बनते हैं।

मुंबई, दिल्ली, गुरुग्राम व अनेक अन्य महानगरों में बाढ़ का पानी लोगों के घरों के बेसमेंट में भर जाता है। अक्सर इसे पंप से निकाला जाता है जिसमें समय और ऊर्जा खर्च होती है। ऐसे में जमीन में एक 'संप' बनाने की सलाह दी जाती है ताकि बरसात का पानी प्रभावी रूप से नीचे पहुंच जाए। इस प्रकार उसका जल संरक्षण संभव होगा जिसे बाद में अनेक उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। यदि बेसमेंट साफ रखा जाए तो उसमें एकत्रित बाढ़ का पानी इस्तेमाल योग्य हो सकता है। अनेक नगर निगम नए निर्माण में योजना बनाने के समय 'वाटर हार्वेस्टिंग' ढांचों को अनिवार्य बनाते हैं।

लेकिन क्रियान्वयन के स्तर पर ऐसे ढांचे आमतौर से छतों से वाटर हार्वेस्टिंग तक सीमित होते हैं और बेसमेंट की अनदेखी करते हैं जहां बादल फटने के समय बाढ़ आने का खतरा सबसे अधिक होता है। ऐसे में बेसमेंट के लिए वाटर हार्वेस्टिंग अनिवार्य की जानी चाहिए और इसका गंभीरता से क्रियान्वयन होना चाहिए। आवश्यक होने पर संबंधित नगर निगमों द्वारा इमारत बनाने के नियमों में संशोधन कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इमारतों के बेसमेंट का प्रयोग केवल वाहन पार्किंग, कबाड़ एकत्र करने तथा वाटर हार्वेस्टिंग या जल भंडारण के लिए हो। किसी भी स्थिति में बेसमेंट का प्रयोग आवास, होटलों और बिजनेसों के लिए नहीं करने देना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी की यूक्रेन यात्रा के निहितार्थ

अखिलेश सुमन
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कीव यात्रा अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक महत्वपूर्ण क्षण है, जो यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के बीच रूस और पश्चिम के बीच भारत के रणनीतिक संतुलन को दर्शाती है। रूस और पश्चिमी देशों दोनों के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने वाले देश के पहले नेता के रूप में, मोदी की यात्रा वैश्विक शक्तियों, विशेष रूप से रूस को एक सूक्ष्म संदेश भेजती है। जबकि कुछ पर्यवेक्षकों का सुझाव है कि मोदी की यात्रा का उद्देश्य रूस की उनकी दो हालिया यात्राओं के बाद पश्चिमी देशों की निराशा को शांत करना है, वास्तविकता अधिक जटिल प्रतीत होती है।

मोदी की यूक्रेन यात्रा मुख्य रूप से मास्को को एक सूक्ष्म संकेत के रूप में कार्य करती है कि भारत यूक्रेन के साथ भी जुड़ सकता है। यह यात्रा एक महत्वपूर्ण समय पर हो रही है, जो रूसी सेना के खिलाफ यूक्रेन की हालिया सैन्य सफलताओं के साथ मेल खाती है, जो मोदी द्वारा दिए जाने वाले संदेश को और मजबूत बनाती है। यूक्रेन के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध गर्मजोशी से दूर रहे हैं, फिर भी यूक्रेन में पीड़ा के पैमाने ने भारत के भीतर सहानुभूति जगाई है। यह भावना मोदी के पहले के बयानों में भी झलकती है, जिसमें उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह युद्ध का युग नहीं है और शांतिपूर्ण समाधान की वकालत की। इसके बावजूद, भारत ने रूस के कार्यों की निंदा करने से परहेज किया है, मास्को से तेल खरीदना जारी रखा है, जो संघर्ष के दौरान रूस के लिए महत्वपूर्ण रहा है। हालांकि, चीन के साथ रूस के बढ़ते घनिष्ठ संबंध भारत के लिए चिंता का विषय बन गए हैं, खासकर भारतीय सीमा पर चीन के आक्रामक व्यवहार को लेकर।

2020 की गलवान घाटी की झड़प और उसके बाद के सैन्य तनावों ने भारत-चीन संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है, जिससे भारत की सुरक्षा चिंताओं के प्रति रूस की कथित उदासीनता चिंताजनक हो गई है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच लगातार बैठकों ने इन चिंताओं को बढ़ा दिया है, जिससे भारत को अपनी विदेश नीति की रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया है। मोदी की यूक्रेन यात्रा

को रूस पर चीन के साथ अपने संबंधों पर पुनर्विचार करने के लिए दबाव डालने के कूटनीतिक प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। यूक्रेन के साथ बातचीत करके, भारत मास्को को संकेत देता है कि बीजिंग के साथ उसके घनिष्ठ संबंधों को संभावित परिणामों के बिना हल्के में नहीं लिया जा सकता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत ने रूस के साथ मजबूत संबंध बनाए हैं, खासकर रक्षा के मामले में, लेकिन विकसित हो रहे भू-राजनीतिक परिदृश्य के लिए भारत को अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। मोदी की यात्रा भारत की स्वतंत्र विदेश नीति को भी रेखांकित करती है, एक ऐसा सिद्धांत जिसने शीत युद्ध के दौर से ही देश का मार्गदर्शन किया है। भारत ने लंबे समय से अपने गुटनिरपेक्ष रुख पर गर्व किया है, किसी विशेष गुट के साथ जुड़ने के बजाय रणनीतिक हितों के आधार पर निर्णय लेता है। यह दृष्टिकोण 21वीं सदी में भी प्रासंगिक बना हुआ है, क्योंकि भारत वैश्विक राजनीति की जटिलताओं से निपट रहा है। संयुक्त राष्ट्र में रूस की निंदा करने से भारत के इनकार ने पश्चिमी देशों के साथ टकराव पैदा किया है। हालांकि, मोदी की यूक्रेन यात्रा दर्शाती है कि भारत की तटस्थता का मतलब निष्क्रियता या रूसी आक्रामकता को मौन स्वीकृति देना नहीं है।

इसके बजाय, यह एक सूक्ष्म दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो रिश्तों और हितों को संतुलित करते हुए रूस को अपनी सैन्य रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। भारत पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करना चाहता है, खासकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में, जहां चीन की मुखरता बढ़ती चिंता का विषय है, मोदी की यूक्रेन यात्रा बहुध्रुवीय दुनिया के प्रति भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को महत्व देता है, अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय लेता है - एक ऐसा रुख जिसकी कभी-कभी उसके सहयोगियों ने आलोचना की है। मोदी की यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पहलू यूक्रेन के पुनर्निर्माण प्रयासों में योगदान देने में भारत की रुचि है। युद्ध ने यूक्रेन को बर्बाद कर दिया है, और भारत इसके पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में भूमिका निभाने का अवसर देखता है।

यह भागीदारी न केवल एक मानवीय इशारा होगी, बल्कि एक रणनीतिक निवेश भी होगा जो भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभान्वित कर सकता है। भारत पहले ही यूक्रेन को मानवीय सहायता प्रदान कर चुका है, और मोदी की यात्रा बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और रसद सहायता सहित अधिक पर्याप्त समर्थन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है, जिससे संबंधित भारतीय उद्योगों को भी लाभ होगा। इसके अलावा, यूक्रेन के पुनर्निर्माण में भारत की भागीदारी चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के प्रति संतुलन के रूप में काम कर सकती है। भागीदार देशों की संप्रभुता का सम्मान करने वाले विकास सहयोग के वैकल्पिक मॉडल की पेशकश करके, भारत खुद को ज़रूरतमंद देशों के लिए ज़्यादा अनुकूल भागीदार के रूप में पेश करता है। यह दृष्टिकोण भारत के खुद को वैश्विक नेता और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक नैतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने के व्यापक लक्ष्य के साथ संरेखित है। चूंकि दुनिया मोदी की यूक्रेन यात्रा पर करीब से नज़र रख रही है, इसलिए संभावित परिणामों का वैश्विक शक्ति गतिशीलता पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है। अगर मोदी की कूटनीति रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध विराम में योगदान देती है, तो भारत विश्व मंच पर एक महत्वपूर्ण शांतिदूत और समस्या समाधानकर्ता के रूप में उभर सकता है। इससे भारत की प्रतिष्ठा एक ऐसे राष्ट्र के रूप में बढ़ेगी जो अपने सिद्धांतों और रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्यों को नेविगेट करने में सक्षम है।

आप की बात

लड़कियों का बेहतर प्रदर्शन

शिक्षा मंत्रालय के अनुसार देश भर के स्कूलों में लड़कियां लड़कों से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में लड़कियों का पासिंग प्रतिशत लड़कों से ज्यादा है। साइंस और आर्ट्स स्ट्रीम दोनों में लड़कियां आगे हैं। हालांकि, यह विश्लेषण कई गंभीर मसलों की ओर ध्यान खींचता है, लेकिन इसका सबसे अहम पहलू है स्कूलों में लड़कियों द्वारा लिखी जा रही कामयाबी की सुनहरी कथाएं। लड़कियों के प्रति दोहरी मानसिकता के चलते आज भी बहुत से लोग लड़कों को महंगे प्राइवेट स्कूलों में और लड़कियों को मुफ्त के सरकारी स्कूलों में पढ़ाते हैं। इसके बावजूद लड़कियां अपनी प्रतिभा के बलबूते पर अच्छे अंकों से पास होती है और परिवार का गौरव बढ़ाती है। अब आम जनमानस भी लड़कियों को पढ़ाने में रुचि लेने लगा है। इससे प्रोत्साहित लड़कियां भी सभी क्षेत्रों में कठोर परिश्रम और प्रतिभा के बल पर निरंतर आगे बढ़ती जा रही है। अब उच्च स्तरीय नौकरियों पर भी उन्हें महत्व मिलने लगा है। इसे देखते हुए शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महिलाओं को अधिक अवसर दिए जाने चाहिए। बेटियों को पढ़ाने के साथ उनकी सुरक्षा और उनके प्रति सम्मान की भावना पैदा करने के लिए सभी परिवारों में बेटों को पुरुष-वर्चस्व वाली सोच से मुक्त करना भी जरूरी होता जा रहा है।

-सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

जम्मू कश्मीर में चुनाव

जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटाने के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। अब बड़ी पार्टियां घाटी की स्थानीय पार्टियों से गठजोड़ में लगी है। देश की एक बड़ी राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस ने नेशनल कांफ्रेंस से समझौता किया है। नेशनल कांफ्रेंस के वचन पत्र में पहला ही वादा धारा 370 बहाल करना है। इसी तरह से जम्मू कश्मीर की दूसरी बड़ी पार्टी पीडीपी भी धारा 370 बहाल करने के एजेंडे के साथ चुनाव मैदान में है। ऐसे में कांग्रेस से यह सवाल पूछना उचित होगा कि अनुच्छेद 370 के बारे में उसकी क्या राय है? क्या कांग्रेस जम्मू कश्मीर को पुराने अंधकारमय समय मे धकेलना चाहती है, जब वहां आतंकवादियों, अलगाववादियों, जिहादियों और पत्थरबाजों का राज था? वैसे तो अनुच्छेद 370 की वापसी लगभग असंभव है, पर सत्ता के लालच में डूबी पार्टियां इसे लेकर अव्यवस्था, अराजकता व अशांति पैदा करने का प्रयास कर सकती हैं। ऐसे में भाजपा को जम्मू कश्मीर में स्वतंत्र रूप से अकेले ही विधानसभा का चुनाव लड़ना चाहिए। कश्मीर घाटी में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए भाजपा ऐसी छोटी पार्टियों से समझौता कर सकती है जो जम्मू कश्मीर को विकास की वर्तमान दिशा में आगे बढ़ाने पर सहमत हों।

- मनमोहन राजावत, शाजापुर

परेशान कश्मीरी नेता

नेशनल कान्फ्रेंस अध्यक्ष फारुख अब्दुल्ला ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर के लोग बरसों से कठिनाई में हैं। लेकिन वास्तव में जनता के बजाय अब्दुल्ला जैसे नेता ही कठिनाई में हैं। उन्हें याद करना चाहिए कि 1991 में बहुत से लोगों ने जम्मू-कश्मीर छोड़ा था, जबकि अनुच्छेद 370 व 35 ए हटने के बाद से पूरे देश से लोग वहां बसते जा रहे हैं और आतंक बहुत कम हो गया है। स्पष्ट है कि वहां लोग कठिनाई में नहीं हैं बल्कि जिनकी सत्ता के रहते लोग कठिनाई में थे वे बिना सत्ता के तड़प रहे हैं। बरसों से सत्ता सुख भोगने व शाही ठाठबाट से रहने वालों का सुखचैन जो चला गया है। इनमें कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस, पीडीपी व अन्य दलों के नेता शामिल हैं। प्रधानमंत्री मोदी अपने सपने विकसित भारत का लक्ष्य पूरा करने को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। जिसमें कश्मीर कंधे से कंधा मिला कर सबके साथ है। ऐसे में जम्मू कश्मीर के परेशान नेता किसी न किसी तरह जनता को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं। हालिया संसदीय चुनाव में जम्मू कश्मीर के मतदाताओं ने दिखा दिया है कि वे बदलते भारत और बदलते कश्मीर से बहुत खुश हैं। इससे विपक्षी नेताओं की नींद उड़ गई है और अब्दुल्ला के बयान या विलाप का यही कारण है।

शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

मुजीबुर रहमान की स्मृति

बांग्लादेश में नरसंहार और राजनीतिक घटनाओं की जांच संयुक्त राष्ट्रसंघ की विशेष टीम अगले सप्ताह करेगी। इससे पहले यह टीम 1971 में बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में हुए मानवीय अत्याचारों की जांच करने आई थी। इसके कारण बांग्लादेश में राजनीतिक घटनाओं पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ रहा है। बांग्लादेश के निर्माण के मुख्य नेता और शेख हसीना के पिता बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान की 15 अगस्त 1975 को हत्या कर दी गई थी। इसलिए इस दिन बांग्लादेश में सार्वजनिक अवकाश होता है। लेकिन मौजूदा मुहम्मद यूनुस सरकार ने अवामी लीग और अन्य दलों से पूछे बिना ही इस राष्ट्रीय अवकाश को रद्द कर दिया है। यह एक प्रकार से बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम और उसके नायक शेख मुजीबुर रहमान की स्मृति मिटाने या उसे धुंधली करने की चाल है। यूनुस सरकार ने शेख हसीना और उनके कैबिनेट सहयोगियों पर अनेक मुकदमे थोपने के साथ ही उनका राजनयिक पासपोर्ट भी रद्द कर दिया है। ऐसे में शेख हसीना भारत में ही रहने को मजबूर होंगी। बांग्लादेश में जारी यह उथलपुथल भारत की चिन्ता का विषय है।

- दत्तप्रसाद शिरोड़कर, मुंबई

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

उद्यमियों की समस्याओं का शीघ्रता से करें निस्तारण: जिलाधिकारी

संवाददाता। अमेठी

जिलाधिकारी निशा अनंत व पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिला उद्योग बन्धु, श्रम बन्धु, व्यापार बंधु एवं औद्योगिक/व्यापारिक सुरक्षा फोरम तथा एम0ओ0यू0 क्रियान्वयन समिति की बैठक कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

बैठक में सर्वप्रथम समिति के समक्ष उद्यमियों की सुरक्षा व्यवस्था व अवैध अतिक्रमण को हटाने के संबंध में चर्चा की गई। बैठक में व्यापार मंडल के अध्यक्ष समीर कुरैशी ने औद्योगिक क्षेत्र में पुलिस की पेट्रोलिंग बढ़ाने का अनुरोध किया तथा औद्योगिक क्षेत्रों में क्षेत्राधिकारी, थानाध्यक्ष व उद्यमियों के साथ स्थानीय स्तर पर बैठक कर छोटे-मोटे मामलों को निस्तारित किए जाने का अनुरोध किया गया, जिस पर पुलिस अधीक्षक ने जल्द ही कार्यवाही किए जाने का आश्वासन दिया। इसके साथ ही औद्योगिक क्षेत्र जगदीशपुर में रोड नंबर 3 से उतेलवा तक सर्विस रोड के अधूरे कार्य को पूरा कराने, औद्योगिक क्षेत्र त्रिसुंडी में पार्किंग व्यवस्था के संबंध में चर्चा की गई जिस पर जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को शीघ्र अति शीघ्र उपरोक्त प्रकरणों को निस्तारित करने के निर्देश दिए। इसके उपरांत जिलाधिकारी द्वारा निवेश मित्र पोर्टल पर निर्धारित समय के उपरांत लंबित प्रकरणों की समीक्षा की गई तथा संबंधित अधिकारियों को लंबित प्रकरणों के संबंध में शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही बैठक में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना की समीक्षा की गई तथा निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष लक्ष्य की पूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

इसके उपरांत जिलाधिकारी ने श्रम बन्धु की समीक्षा करते हुए उपस्थित उद्यमियों/व्यापारियों को श्रम विभाग में शत-प्रतिशत पंजीकरण कराने के निर्देश दिए।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हमलों के विरोध में हुई विशाल हिंदू आक्रोश रैली

गौरीगंज, अमेठी। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार और हिंसा के विरुद्ध हिंदू रक्षा समिति एवं अन्य सामाजिक संगठनों, व्यापार मंडल,शैक्षिक संगठन , लगभग 50 संगठन के द्वारा शुक्रवार को हजारों की संख्या में एक विशाल हिंदू आक्रोश रैली निकाली गई यह रैली गौरीगंज स्थित विद्या मंदिर से चौक बाजार से हनुमान चौराहा से विद्या मंदिर मे समापन किया गया। रैली में लोग गगन भेदी नारे लगाते रहे। रैली का प्रारंभ मौनी बाबा के उद्बोधन के बाद किया गया। मौनी बाबा ने बांग्लादेश में हो रहे अत्यंत पीड़ा युक्त नरसंहार का विरोध किया और सो रहे हिंदुओं को एक जुट होकर जागृत होने का संदेश दिया सनातन संस्कृति,हिंदू समाज मठ इस सब की रक्षा करने का आवाहन किया। बांग्लादेश में हिंदु, सिक्ख,बौद्ध,जैन एवम् दलित समाज पर जो आक्रमण किया जा रहा है यह मानवाधिकार का उल्लंघन है। माता और बेटियों के साथ दुष्कर्म किया जा रहा है यह कृत्य पूरी मानवता को शर्मसार कर दिया है।

22 सूत्रीय मांगों को लेकर लिपिक संवर्ग ने कलेक्ट्रेट पर किया धरना प्रदर्शन

संवाददाता। संतकबीरनगर

उत्तर प्रदेश मिनिस्ट्रियल कलेक्ट्रेट कर्मचारी संघ के प्रान्तीय नेतृत्व पर बृहस्पतिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में कलेक्ट्रेट एवं तहसीलों में कार्यरत लिपिक संवर्ग के कर्मचारियों ने 22 सूत्रीय मांगों को लेकर जिलाधिकारी कार्यालय पर धरना दिया। जिसका नेतृत्व जिलाध्यक्ष अभय चौधरी ने किया। कर्मचारियों ने कहा कि आगामी 17 सितंबर तक मांगों का सम्मानजनक निस्तारण न होने पर 18 सितंबर 2024 को गांधी प्रतिमा, हजरतगंज लखनऊ में पूरे प्रदेश के कर्मचारी के साथ धरना प्रदर्शन में यहां से सभी कर्मचारी शामिल होंगे।

कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन अपर जिलाधिकारी को सौंपा। जिलाध्यक्ष अभय चौधरी ने कहा कि 22 सूत्रीय मांगो में से प्रमुख मांगे जैसे कलेक्ट्रेट कार्यालय को विशेष प्रतिष्ठा प्रदान करते हुए कार्मिकों का वेतन उच्चीकृत करने, कलेक्ट्रेट लिपिक संवर्ग सेवानियमावली 2011 पूर्ववत लागू करने, लेखा का कार्य संपादित करने वाले पटल सहायकों को लेखासंवर्ग का वेतनमान दिये जाने, नवसृजित जनपदों में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं नवसृजित तहसीलों में प्रशासनिक अधिकारी का पद सृजित किये जाने, भूलेख लिपिक का पद पूर्व की भांति कलेक्ट्रेट में वापस किये जाने, सामयिक सहायक वासिलवाकीनवीसों को रिक्तपदों के सापेक्ष एक मुश्त शत-प्रतिशत समायोजित किये जाने आदि प्रकरणों में विभागाध्यक्ष/ अध्यक्ष राजस्व परिषद उ.प्र. की संस्तुति हो जाने के उपरान्त भी अभी तक शासनादेश निर्गत न करने से कर्मचारियो में काफी कुण्ठा व्याप्त है। जिससे उनकी आर्थिक व मानसिक क्षति हो रही है।

शासन द्वारा सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिये बार-बार कार्मिकों को समय से पदोन्नति का शासनादेश निर्गत किया जाता है, किन्तु सेवानियमावली में प्रदत्त व्यवस्था के तहत प्रशासनिक अधिकारियों एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों तथा मुख्य प्रशासनिक अधिकारियों के पदों पर पदोन्नति हेतु पात्रता क्षेत्र के विस्तार का अनुमोदन शासन एवं राजस्व परिषद द्वारा नहीं किया जा रहा है। जिससे पात्र कार्मिक पदोन्नति के लाभ सेवंचित होकर सेवानिवृत्त हो जा रहे हैं।

जेवरात ,दो दर्जन मोबाइल व नकदी के साथ चार शातिर चोर गिरफ्तार

तिलोई, अमेठी। बीते चार माह के अंदर क्षेत्र के दो मोबाइल की दुकानों एवं एक घर में हुई चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले चार शातिर चोरों को शिवरतनगंज पुलिस ने आभूषण , मोबाइल फोन और नकदी के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इन्हौना के इस्लामगंज कस्बे में स्थित खान मोबाइल की दुकान में बीती 14 मई, शिवरतनगंज के अमेठियन का पुरवा में 6 जून की रात एवं इन्हौना के राजाफत्तेपुर स्थित मां दुर्गा मोबाइल की दुकान में शटर काट कर एवं ताला तोड़ कर लाखो के जेवरात एवं मोबाइल चोर उड़ा ले गए थे। शिवरतनगंज पुलिस ने अनुज कुमार सिंह उर्फ शनी सिंह पुत्र वंश बहादुर सिंह निवासी रामपुर मजरे कोची , अमरेश पुत्र घनश्याम निवासी ग्राम जोरई, अजय कुमार यादव पुत्र शिवकुमार यादव निवासी पूरे मेडई तिवारीपुर एवं आशीष कुमार पुत्र शत्रोहन लाल यादव निवासी ग्राम पूरे जोरई को जेहटा उसरहा से अहोरवा भवानी मार्ग से गिरफ्तार किया गया । पुलिस ने चोरों के पास से चोरी के कुल 23 मोबाइल ,अदद हार पीली धातु, एक लाकेट पीली धातु, एक अदद मंगलसूत्र का लाकेट पीली धातु, दो जोड़ी झुमका पीली धातु, आदि एवं चोरी के सामान की बिक्री से प्राप्त 50 हजार की नकदी बरामद की।

पुलिस भर्ती परीक्षा प्रथम दिन शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न

संतकबीरनगर। जिलाधिकारी महेन्द्र सिंह तंवर व पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता द्वारा संयुक्त रुप से आज उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा आयोजित आरक्षी नागरिक पुलिस की सीधी भर्ती-2023 की प्रथम पाली की लिखित परीक्षा के दृष्टिगत जनपद के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरा से निगरानी, बैठक व्यवस्था, प्रवेश/निकास द्वार व बायोमैट्रिक व्यवस्था सहित परीक्षा केंद्रों पर सुचितापूर्ण ढंग से परीक्षा संपन्न करने हेतु की गई समस्त तैयारियों/व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया गया एवं संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

आशा बहू सम्मेलन में राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह ने किया प्रतिभाग, किया सम्मानित

संवाददाता। श्रावस्ती, भिनगा

आशा दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट स्थित तथागत हाल में आशा बहू सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के राज्यमंत्री संसदीय कार्य चिकित्सा शिक्षा स्वास्थ्य परिवार कल्याण तथा मातृ एवं शिशु कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश मयंकेश्वर शरण सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ राज्यमंत्री, विधायक इकौना रामफेरन पाण्डेय जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया एवं मुख्य विकास अधिकारी अनुभव सिंह ने द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया।

इस दौरान बेहतर कार्य करने वाली आशाओं को प्रशस्ति पत्र व हस्तांतरित धनराशि देकर सम्मानित भी किया जिसमें प्रथम स्थान हेतु आशा क्रमशः प्रेमलता शिवकुमारी मीरादेवी उर्वशी भानुमति को प्रथम पुरस्कार 5 हजार रूपये द्वितीय स्थान हेतु आशा क्रमशः शिवकुमारी कलावती शीला देवी पूनम देवी नीता देवी को द्वितीय पुरस्कार क्रमशः 2 हजार रूपये तृतीय स्थान हेतु आशा क्रमशः बृजरानी मीना देवी राजकुमारी ललिता देवी सुमन को तृतीय पुरस्कार 1 हजार रूपये का हस्तांतरित राशी एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार सिरसिया में आशा संगिनी श्यामली विश्वास भंगहा में सुशीला देवी व गिलौला से कुन्तेश को प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इसके अलावा आशासंगिनी क्रमशः श्यामली विश्वास प्रथम पुरस्कार 5 हजार रूपये सुशीला देवी द्वितीय पुरस्कार 3 हजार रूपये एवं कुन्तेश को तृतीय पुरस्कार 2 हजार रूपये का हस्तांतरित धनराशि एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वहीं जिले में सर्वश्रेष्ठ बी0सी0पी0एम0 के रूप में बेहतर कार्य करने वाले विकास खण्ड सिरसिया से विनोद कुमार श्रीवास्तव को 5 हजार रूपये का हस्तांतरित कर सम्मानित किया गया।

राणा बेनी माधव बख्श सिंह की जयंती पर हुआ दीपोत्सव

लालगंज, रायबरेली। अमर शहीद राणा बेनी माधव बख्श सिंह स्मारक समिति लालगंज द्वारा अवध केसरी राणा बेनी माधव बख्श सिंह की 220 जयंती के पूर्व संध्या पर दीपोउत्सव कार्यक्रम का आयोजन राणा की अश्वारोही प्रतिमा पर किया गया। इसमें नगर के सभ्रांत नागरिको और युवा साथियों ने प्रतिभाग किया।इसमें प्रमुख रूप से पवन सिंह, राजेश सिंह फौजी, रामप्रताप सिंह ,अविनाश सिंह ,अरुण कुमार सिंह, निरंजन राय, रमेश बहादुर सिंह, विश्वास बहादुर सिंह, अनंत विजय सिंह, अजय चौधरी आशीष प्रताप सिंह, ऋतुराज सिंह, यतीन सिंह ,अभय राज सिंह ,सुरेश सिंह, शिव विजय सिंह ,रविंद्र बहादुर सिंह आदि सम्मिलित रहे।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर बच्चों ने बनाए आकर्षक चंद्रयान

लालगंज, रायबरेली। विश्व अंतरिक्ष दिवस पर विवेकानंद चिल्डेऊ एकेडमी भोजपुर के छात्र-छात्राओं ने मनमोहक चंद्रयान बना कर प्रदर्शित किया। विभिन्न प्रकार के चंद्रयान बना कर न केवल उसकी आकृति भी प्रस्तुत की गयी बल्कि उन्हे बैट्री से करंट प्रदान कर उन्हे जीवन्त भी करने का बच्चों ने प्रयास किया। इस कार्यक्रम में प्राइमरी से लेकर सीनियर सेकेंडरी के बच्चों ने प्रतिभाग किया। मॉडल व पोस्टरों के जरिए बच्चों ने अपना कौशल प्रदर्शित किया।

इस मौके पर बच्चों को चंद्रयान मिशन व देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सहयोग से इसरो के वैज्ञानिकों के प्रयास को बच्चों के सामने रखा गया। इस मौके पर आयोजित कार्यशाला में प्रधानाचार्य भाष्कर प्रताप सिंह ने अपने उद्बोधन में बच्चों को अवगत कराया कि पहला चंद्रयान सन् 2008 व दूसरा सन् 2019 में भेजा गया लेकिन 2023 में भेजा गया चंद्रयान 3 का सफल रहा और यह चद्रमा के साउथ पोल पर उस जगह स्थापित हुआ जो स्थान अंधेरे में है और दुर्गम भी।

चंद्रमा की यात्रा के सफल कार्य के कारण 23 अगस्त को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाने का देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने निर्णय लिया। इस मौके पर विज्ञान शिक्षकों ने चंद्रयान-3 की बाबत जानकारी बच्चों को दी। कार्यशाला का संचालन शिक्षक अजय प्रजापति व सहयोग स्वाती मिश्रा, आस्था शुक्ला, सलोनी सिंह, शिवांगी सिंह ने किया।

डीएम, एसपी ने पुलिस भर्ती परीक्षा केंद्रों के कक्षों का लिया जायज़ा

संवाददाता। उरई, जालौन

शुक्रवार को उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती परीक्षा पूर्ण शुचिता एवं पारदर्शिता से सम्पन्न कराने हेतु जनपद में सुबह 10 बजे से यूपी पुलिस अभ्यर्थियों की परीक्षा शुरू हो चुकी है। सभी परीक्षा केंद्रों पर जिला प्रशासन व पुलिस द्वारा सुरक्षा व्यवस्था के कड़े इंतजाम किए गए हैं। जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय व पुलिस अधीक्षक डॉ दुर्गेश कुमार सयुंक्त रूप से सुबह से ही आचार्य नरेंद्र देव इण्टर कॉलेज, सर्वोदय इण्टर कालेज, राजकीय मेडिकल कॉलेज, गान्धी इण्टर कॉलेज, दयानंद वैदिक कॉलेज व द्वितीय पाली में आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, सनातन धर्म इण्टर कॉलेज, छत्रसाल इंटर कॉलेज आदि परीक्षा केंद्रों पर जाकर व्यवस्थाओं का जायजा लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इसके अलावा सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में परीक्षा सपंन्न हो रही है, जिससे कि नकल विहीन और शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संपन्न कराई जा सके।

जनपद में उत्तर प्रदेश पुलिस आरक्षी भर्ती के लिए अभ्यर्थियों का आने का सिलसिला सुबह से ही शुरू हो गया। सभी अभ्यर्थी समय से पहले ही अपने-अपने परीक्षा केंद्रों पर पहुंच गए। परीक्षा केंद्रों पर बायोमेट्रिक वेरिफिक्रेशन के बाद ही अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्र में एंट्री मिली। प्रशासन एवं पुलिस की व्यवस्थाओं के बीच प्रथम पाली व द्वितीय पाली की परीक्षा अपने निश्चित समय पर शांतिपूर्ण तरीके से शुरू होने के साथ ही सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद में पुलिस भर्ती के लिए बनाए गये 13 केन्द्रों पर प्रथम पाली द्वितीय पाली की परीक्षा सकुशल, नकलविहीन एवं शांतिपूर्वक ढंग से सम्पन्न हुई।

उन्होंने कहा कि सुरक्षा के मद्देनजर सभी परीक्षा केंद्रों के आसपास पुलिस बल की तैनाती की गई है। परीक्षा पर नजर रखने के लिए जोनल, सेक्टर एवं स्टेटिक मजिस्ट्रेट की नियुक्ति की गई है।

खुटमिली, जमरेही में मनरेगा योजना का फर्जीवाड़े का खेल पकड़ा गया

संवाददाता। उरई, जालौन

कदौरा विकासखंड के ग्राम पंचायत खुटमिली व जमरेही में मनरेगा योजना में मजदूरी की फर्जी तरीके से फोटो अपलोड कर लाखों का भुगतान निकालने के प्रयासों की पोल डीएम के निर्देश पर गठित त्रिस्तरीय कमेटी की जांच के दौरान खुलकर सामने आ गयी। जांच टीम ने अपनी आख्या में स्पष्ट रूप से कहा कि पूर्व में कराये गये कार्य का पुनः भुगतान निकालने का प्रयास किया गया है। इस मामले में दोषी कर्मचारी, अधिकारी के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही करने की संस्तुति की गयी है। इसी के साथ उपायुक्त श्रम रोजगार ने बीडीओ कदौरा को भेजे गये पत्र में मनरेगा योजना में फर्जीबाड़ा करने में उत्तरदायी अधिकारी, कर्मचारी के विरुद्ध कार्रवाई करना सुनिश्चित करें। गौरतलब हो कि ग्राम पंचायत जमरेही व खुटमिली में मनरेगा योजना में फर्जीबाड़ा करने का मामला प्रकाश में आया था जिसे जिलाधिकारी ने संज्ञान लेते हुये समूचे प्रकरण की जांच के लिये त्रिस्तरीय जांच कमेटी का गठन किया था जब जांच टीम ग्राम जमरेही में मनरेगा योजना अंतर्गत गन्नी के खेत से रामपाल के खेत तक जलरोक बांध कार्य एवं ग्राम पंचायत खुटमिली में नाला खुदाई के कार्य की जांच समिति द्वारा की गयी जिसमें पाया गया कि कार्य पूर्व से कराये गये हैं जिस पर पुनः भुगतान कराने या किये जाने के लिये दोषी कर्मचारी, अधिकारी के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही करने की संस्तुति की गयी।

त्रिस्तरीय कमेटी की जांच में कहा गया कि ग्राम पंचायत जमरेही में जलरोक बांध गन्नी के खेत से रामपाल के खेत तक कराये जाने के लिये 4 लाख 92 हजार 209 रुपये का प्राक्कलन तैयार किया गया था तथा 19 जून से 2 जुलाई तक कुल 1960 कार्य दिवसों के लिये मस्टररोल जारी किये गये थे। मस्टररोल पर न तो कोई उपस्थिति नहीं लगाई गयी थी और न ही मस्टरोल का भुगतान के लिये प्रस्तुत किया गया है।

जबकि जांच समिति को कार्य के दौरान के समय के फोटोग्राफ उपलब्ध कराये गये हैं जिसमें कार्य पर श्रमिक करते हुये प्रदर्शित हो रहे हैं। जांच में स्पष्ट पाया गया कि पूर्व में कराये गये कार्य पर पुनः भुगतान कराये जाने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार से ग्राम पंचायत खुटमिली में मैन रोड से हमीरपुर रोड तक नाला निर्माण इस कार्य की स्वीकृत लागत 1 लाख 88 हजार 797 रुपये की है। इस कार्य में भी जांच समिति को नाला की सफाई कार्य का होना नहीं पाया गया। मस्टररोल जारी किया जाना तथा पूर्व में कराये गये कार्य पर पुनः भुगतान कराये जाने का प्रयास किया जाना पाया गया।

टप्पेबाज ने दिनदहाड़े दुकान से तीस ग्राम सोना पार किया, जांच में जुटी पुलिस

ऊंचाहार। ज्वेलर्स की दुकान पर ग्राहक बनकर आये एक टप्पेबाज ने दिनदहाड़े दुकान में रखा तीस ग्राम सोना पार कर दिया, जिसका सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है,सूचना पर पहुंची पुलिस घटना की छानबीन कर रही है। जमुनापुर चौराहा निवासी अमित कुमार कौशल घर पर ही ज्वेलर्स की दुकान चलाता है।उसका कहना है कि शुक्रवार की सुबह उसकी दुकान पर पल्सर बाइक से आया, जिसने आर्मी कैप लगा रखी थी।उसने कुछ आभूषण देखे और फिर वहां से चला गया।कुछ देर बाद जब दुकानदार सामान का मिलान किया तो उसमें तीस ग्राम सोने के जेवरात की एक डिब्बी गायब थी, जिससे उसके होश उड़ गये। पीड़ित ने कोतवाली पहुंचकर मामले की तहरीर दी है।वही दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में उस टप्पेबाज की तस्वीर कैद हो गई।

राष्ट्रीय आवर्ड से सम्मानित हुई रायबरेली की डॉ रिशिका सिंह

सतांव, रायबरेली। इंडियन वेटनरी एसोसिएशन द्वारा बीतें 17 अगस्त को लखनऊ में आयोजित किए गए वेटिको क्वीन आंफ इंडिया व वेट आइकान आवर्ड 2024 में देश भर की महिला डाक्टरों ने प्रतिभाग किया था। इस आवर्ड समारोह में शामिल हुई रायबरेली से डां रिशिका सिंह ने सभी महिला डाक्टरों को पीछे करते हुए विजेता रही। जिनका रायबरेली आने पर दरीबा स्थित एक लाइन में आयोजित समारोह में किया गया। इंडियन वेटनरी एसोसिएशन द्वारा आयोजित किए गए वेटिको क्वीन आंफ इंडिया व वेट आइकान आवर्ड में देश की महिला डाक्टरों को पीछे करते हुए रायबरेली की महिला डां रिशिका सिंह विजेता रही। उन्हें तीन आवर्डो से सम्मानित किया गया, जिसमें मिसेज वेटिको क्वीन आफ इंडिया 2024, इमार्जिन वीमेन इंटर प्रोन्योर व मिसेज उत्तर प्रदेश 2024 के आवर्ड मिले। डां रिशिका सिंह को डां इंद्रजीत सिंह उपकुलपति गडबासु लुधियाना पंजाब , डां असगर अली सैफ वेटमेड इंडिया व डां प्रवीण मलिक प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर इंडिया ने सम्मानित किया। डा रिशिका सिंह को आवर्ड जीतकर रायबरेली आने पर शुक्रवार को दरीबा स्थित एक आयोजित कार्यक्रम में स्वागत किया गया।

पैगंबर पर अभद्र टिप्पणी को लेकर मुस्लिम समुदाय ने जताया विरोध, सौंपा ज्ञापन

संवाददाता। जालौन, उरई

संत रामगिरी महाराज द्वारा पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के चरित्र पर अभद्र टिप्पणी का आरोप लगाते हुए मुस्लिम समुदाय के लोगों ने राष्ट्रपति एवं गृहमंत्री को संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा है। जिसके माध्यम से उन्होंने कार्रवाई की मांग की है।

जमीअत उलमा के तत्वावधान में मुस्लिम समुदाय के अशफाक राईन, उवैश अहमद, मोहम्मद जुबैर, अनवर शफीक, नूरूल इस्लाम, हामिद खां, मोहम्मद जैद, जफर, शारूख, अनस, असद, मुबारिक, ओसामा, मोहम्मद रईस, शकील, अरबाज, बशीर, अयाज, सलाहउद्दीन आदि ने जुमा की नमाज के बाद मरकज जामा मस्जिद पर राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू एवं गृहमंत्री अमित शाह को संबोधित ज्ञापन एसडीएम अतुल कुमार को सौंपकर बताया कि भारत सदियों से अपनी धर्म निरपेक्षता के लिए सारे विश्व में जाना जाता रहा है। सभी धर्मावलंबी यहां मिलजुल कर रहते है। फिर भी कुछ लोग समाज में द्वेष भावना फैलाते रहते हैं। ऐसे लोग किसी भी धर्म अथवा जाति से हों उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। ताकि माहौल शांतिपूर्ण बना रहे।

उन्होंने आरोप लगाया कि संत रामगिरी महाराज ने पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के चरित्र पर अभद्र टिप्पणी कर हुजूर पाक की शान में गुस्ताखी की है। जिससे मुस्लिम समाज की भावनाओं को आघात पहुंचा है। ऐसे में अभद्र टिप्पणी करने वाले संत के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाए। जिससे देश में माहौल खराब ना हो और भाईचारा बना रहे। उधर, कोलकाता में महिला प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के मामले में भी दोषियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करने की मांग की गई। साथ ही ऐसी घटनाओं के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट के माध्यम से त्वरित न्याय की व्यवस्था कर दोषियों को फांसी दिए जाने की मांग की गई। इस मौके पर रफीक, सईद, तनवीर, मुफीस, शौकत, दानिश, आमिर, सिराज, इसरार, आरिफ उमर, सोएब, मुकीम, वहीद, रिजवान, असद आदि मौजूद रहे।

एसडीएम ने बिना प्रपत्र ओवरलोड मौरम भरे 4 वाहन पकड़े

उरई, जालौन। उरई तहसील क्षेत्र में लगे मौरम डम्पों से लगातार डंके की चोट पर बगैर किसी प्रपत्र एनआर ओवरलोड मौरम भरे वाहनों पर नकेल कसने की मंशा से बीती रात्रि एसडीएम के नेतृत्व में चेकिंग अभियान चलाया गया जिसमें चार ऐसे ओवरलोड मौरम भरे भारी वाहन पकड़े गये जिनके पास मौरम ले जाने का कोई प्रपत्र नहीं था। उक्त अभियान की जैसे ही दूरभाष पर मौरम डम्प वालों को जानकारी मिली तो उन्होंने मौरम भरे वाहनों को डम्प स्थलों पर ही रोक लिया।

मिली जानकारी के अनुसार गुरुवार की रात्रि सदर उप जिलाधिकारी हेमंत पटेल के नेतृत्व में सीओ सदर, एआरटीओ, खान निरीक्षक के साथ ही पुलिस बल के साथ राठ रोड पर मौरम भरे वाहनों की चेकिंग का अभियान शुरू किया गया तो एक के बाद एक चार ऐसे ओवरलोड मौरम भरे वाहन पकड़े गये जिनके पास मौरम ले जाने का कोई वैध प्रपत्र नहीं थे। संयुक्त चेकिंग के दौरान जब टीम ने ओवरलोड बालू से भरे ट्रक चालकों से मौरम ले जाने के संबंधित कागजात मांगे तो वह कोई जबाब नहीं दे पाये। इसके बाद टीम ने पकड़े गये सभी मौरम भरे वाहनों को पुलिस के सुपुर्द कर अग्रिम कार्यवाही के लिये सौंप दिया था।

विधिक शिविर में तहसीलदार ने ग्रामीणों को योजना बता जागरूक किया

संवाददाता। कालपी, जालौन

विकास खण्ड कदौरा के ग्राम पंचायत छौंक के प्राइमरी स्कूल में जिला न्यायालय के निर्देशन में कालपी विधिक सेवा समिति के तत्वावधान में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन तहसीलदार अभिनव कुमार तिवारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शिविर में शासन के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारियां देकर ग्रामीणों को जागरूक किया गया।

विद्यालय के परिसर में आयोजित शिविर को सम्बोधित करते हुये तहसीलदार अभिनव कुमार तिवारी ने एडीआर मैकेनिज्म, मीडिएशन एवं लोक अदालत के महत्व बारे में प्रकाश डालते हुए बताया कि वैकल्पिक विवाद समाधान प्रणाली से तमाम छोटे-मोटे विवादों का समाधान हो जाता है। विवादों का समाधान लोग बिना किसी सुनवाई के मामलों को सुलझा सकते हैं। उन्होंने बताया कि लोक अदालत के माध्यम से विवाद में सुलझ जाने से नागरिकों के समय तथा धन की बचत होती है। यह सरकार के द्वारा की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कार्यक्रम के विषय पर उपभोक्ता फोरम एवं उपभोक्ताओं के अधिकार, प्रिलिटिगेशन के एवं पीड़ित लोगों के लिए विधिक योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसी क्रम में लेखपाल ने राजस्व से संबंधित जानकारी दी। शिविर में पीएलबी तथा विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारियां देकर जागरूक किया।

तहसील के 234 ग्रामों में खरीफ फसल की पड़ताल शुरू

कालपी, जालौन। उत्तर प्रदेश राजस्व परिषद की नीतियों के अनुरूप कालपी तहसील के 234 ग्रामों में खरीफ की फसल का जिंस वार पड़ताल का कार्य राजस्व कर्मचारियों के द्वारा 20 अगस्त से गतिशीलता से शुरू कर दिया गया है। उक्त जानकारी तहसीलदार अभिनव कुमार तिवारी ने बताया कि सभी लेखपाल व पंचायत सहायकों के द्वारा एग्री स्टैक एप्प के माध्यम से प्रत्येक ग्रामों में पहुंचकर हर खेत व हर गाटा की फसल की फोटो डाउनलोड करेंगे। उन्होंने बताया कि खरीफ की फसल मूंगफली, ज्वार, बाजरा, तिली तथा धान आदि का सर्वे कदौरा तथा महेवा विकासखंड के ग्रामों में चलाया जा रहा है। नायब तहसीलदारों तारा शुक्ला, नीलमणि सिंह के अलावा राजस्व कानूनगो रामराजा राजपूत की मौजूदगी में खरीफ की फसल के सर्वे के लिए पहले ही योजना तैयार की गई है। उपजिलाधिकारी सुशील कुमार सिंह ने भी जिम्मेदार कर्मचारियों से निर्देशित किया है कि जल्द से जल्द सर्वे का का निपटाया जाए। उन्होंने कहा कि खरीफ फसल के सर्वे कार्य की समीक्षा की जाएगी।

कड़ी सतर्कता के बीच शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई पुलिस भर्ती परीक्षा

●सीसीटीवी कैमरों से होती रही निगरानी, चौकस रहा प्रशासन, दौड़ते रहे अफ़सर

●पहली पाली में पंजीकृत रहे 2808 अभ्यर्थी

संवाददाता। फतेहपुर

पुलिस भर्ती परीक्षा के पहले दिन शुक्रवार को कड़ी निगरानी में परीक्षाएं हुईं। जिले के नौ परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे से नजर रखी गई। पूरे दिन पुलिस और प्रशासन के अफ्सरों की गाड़ियां परीक्षा केंद्रों पर दौड़ती रहीं। परीक्षा केंद्रों पर पर्यवेक्षक, स्टेटिक और सेक्टर मजिस्ट्रेट भी नजर रखे रहे। परीक्षा केंद्रों पर जैमर भी लगाए गए। सुबह 8 बजे से ही परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों का पहुंचना शुरू हो गया। परीक्षा केंद्रों के बाहर लंबी लाइनें लगी हुई थीं। शहर क्षेत्र के परीक्षा केंद्रों पर अभ्यर्थियों की अच्छे ढंग से पड़ताल करने के बाद ही प्रवेश दिया गया। पुलिस के अफ्सर पूरे दिन परीक्षा केंद्रों पर दौड़ते रहे। परीक्षा केंद्रों पर कैमरे से नजर रखी गई। शहर के परीक्षा केन्द्रों के बाहर भी युवाओं की लाइनें देखने को मिली। परीक्षा केंद्रों पर बाहर किसी को खड़ा भी नहीं होने दिया गया। केंद्र के नजदीक की सभी फोटो कॉपी की दुकानें बंद रहीं।

डीएम सी. इंदुमती एवं पुलिस अधीक्षक ने कई परीक्षा केन्द्रों का जायजा लिया। इस बार की परीक्षा में प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट रहा। कंट्रोल रूम से पल पल की जानकारी ली जाती रही। पूरी परीक्षा के दौरान तीसरी नेत्र से नजर रखी गई है।

पुलिस आरक्षी नागरिक पुलिस के पदों पर सीधी भर्ती के लिए चल रही लिखित परीक्षा को नकलविहीन सम्पन्न कराने के लिए शुक्रवार की परीक्षा में जिलाधिकारी सी. इंदुमती, पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल ने संयुक्त रूप से मेडिकल कालेज परीक्षा केन्द्र समेत अन्य केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान सेक्टर मजिस्ट्रेट से परीक्षा के संबंध में जानकारी ली। अफ्सरों ने सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से परीक्षा कक्षों का निरीक्षण किया तथा परीक्षार्थियों के बायोमैट्रिक कराये जाने के लिए संस्था द्वारा तैनात उपस्थित कर्मचारियों के पहचान पत्र की जांच की।

इस बार पुलिस भर्ती परीक्षा के दौरान प्रश्नपत्र लीक होने जैसी आशंकाओं से बचने के लिए खुफिया तंत्र भी एलर्ट मोड पर रहा। हर ओर खुफिया निगाहें रही। जिससे किसी भी गड़बड़ी पर नजर रखी जा सके और उसे समय से कंट्रोल किया जा सके।

महिला सुरक्षा जागरूकता रैली निकाल कर मांगा त्वरित न्याय

गुरसहायगंज, कन्नौज। कोलकाता में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ हुई दरिंदगी की घटना से स्तब्ध बाबू जागेश्वर प्रसाद मेमोरियल इण्टर कालेज की छात्राओं ने शुक्रवार को विद्यालय प्रांगण से तेराजाकेट ग्राम तक शांतिपूर्ण 'महिला सुरक्षा जागरूकता रैली' निकालकर महिलाओं को समाज में सुरक्षित रहने के लिए जागरूक किया। छात्राओं ने पोस्टर, बैनर, तख्तियों व नारों के माध्यम से शासन से महिलाओं से दरिंदगी करने वालों पर त्वरित कार्रवाई करने की आवाज बुलंद की।

शुक्रवार को रैली रवाना करने से पूर्व प्रधानाचार्य अमित कुमार यादव ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा समाज की जिम्मेदारी है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए हम सभी को एक साथ खड़ा होना होगा। हमें महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करना होगा और उनके साथ होने वाले अपराधों को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। कहा कि कोलकाता जैसी घटनाएं समूचे समाज को कलंकित करती हैं। इसके बाद प्रधानाचार्य ने रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। जागरूकता रैली विद्यालय प्रांगण से प्रारंभ होकर तेराजाकेट चौराहा होते हुए ग्राम तेराजाकेट का भ्रमण कर महिलाओं को अपराधों से सतर्क रहने के लिए जागरूक किया।

बिजली, नहर व पुलिस उत्पीड़न के विरुद्ध तीन सितंबर को होगी किसान पंचायत

●भाकियू प्रदेश सचिव बनने पर रामदत्त मिश्रा का हुआ स्वागत

संवाददाता। फतेहपुर

किसान नेता रामदत्त मिश्रा का भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट का प्रदेश सचिव बनने पर संगठन के सदस्यों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। नवनियुक्त प्रदेश सचिव ने किसानों के हितों के लिए हर तरह से साथ देने आह्वान किया।

शुक्रवार को भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट के प्रदेश सचिव बनने के बाद प्रथम जनपद आगमन व मासिक बैठक के दौरान नवनियुक्त प्रदेश सचिव रामदत्त मिश्रा का जिलाध्यक्ष उत्तम पटेल के नेतृत्व में किसानों व संगठन के सदस्यों द्वारा नहर कालोनी प्रांगण में माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। मुख्य अतिथियों द्वारा किसानों के हितों के लिए कार्य करने वाले संघर्षशील पदधिकारियों को माला पहनाकर स्वागत किया गया। किसानों को सम्बोधित करते हुए हुए नवनियुक्त प्रदेश सचिव रामदत्त मिश्रा ने कहा कि किसानों की खाद बीज, बिजली की समस्याएं बनी रहती है। पुलिस उत्पीड़न की शिकायते मिलती रहती हैं। किसानों की समस्याओं के निस्तारण के लिए व किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने व संघर्ष करने का कार्य करेंगे। प्रदेश उपाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि जनपद के वरिष्ठ किसान नेता रामदत्त मिश्रा के आने से संगठन को और मजबूती मिलेगी।

जनपद में किसानों की विद्युत व्यवस्थाओं का तीन माह से हाल अत्यंत खराब है। विद्युत मीटर लगाने के नाम पर किसानों को परेशान किया जा रहा हैं। नहरों में पानी न आने से किसानों को सिंचाई की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। किसानों की समस्याओ को लेकर तीन सितंबर को मलवां रेलवे ट्रैक पर किसानों की बड़ी पंचायत का आयोजन कर किसानों की समस्याओं का निस्तारण कराये जाने व किसानों की विरोधी सरकारी मशीनरी एवं टिकैत विरोधियों को ठीक करने का कार्य करेंगे।

नर्सरी में घटिया सामग्री प्रयोग की डीएचओ ने की शासन से शिकायत

●सदर विधायक के गांव में बनायी जा रही है हाईटेक नर्सरी

हमीरपुर। शासन द्वारा पौथिया गांव में एक करोड़ रुपये की लागत से निर्मित की जा रही हाईटेक नर्सरी में घटिया निर्माण सामग्री प्रयोग करने की शिकायत जिला उद्यान अधिकारी(डीएचओ) ने शासन से की है। नर्सरी हमीरपुर सदर विधायक मनोज प्रजापति के गांव में बनायी जा रही है। जानकारी के मुताबिक नये माडल में यह नर्सरी पौथिया गांव में बनते ही विवादो में आ गयी थी, लखनऊ की कार्यदायी संस्था यूपीसीएलडीके नर्सरी आरकेवीवाई योजना के तहत निर्माण कर रही है। नर्सरी वहुत ही हाईटेक ढंग से बनाये जाने का शासन ने प्राविधान किया है, नर्सरी में किसानों पौधे बहुत ही अच्छे किस्म के उगा कर दिये जायेगे। यही नही किसान अपना बीज नर्सरी में बोकर पौध अपने साथ ले जा सकता है इसके लिये मामूली खर्च लिया जायेगा। इस नर्सरी से आस पास के किसानों को भी बहुत लाभ मिलेगा। मगर कार्यदायी संस्था ने पहले ही स्थान चयन में ही मनमानी करना शुरु कर दिया था। जिला उद्यान अधिकारी आशीष कटियार ने बताया कि जो निर्माण किया जा रहा है। वह मानक के अनुरुप नही बनाया जा रह है। इसकी जांच कमेटी द्वारा की जा चुकी है। हालाकि निर्माण का कुछ अंश ढहाया जा चुका है मगर इसके बाद भी कार्यदायी संस्था मानक विहीन निर्माण करा रही है।

इसके पहले सदर विधायक भी कार्यदासी संस्था की शिकायत कर चुके है। मगर कोई असर नही हुआ है। डीएचओ ने इस मामले की जानकारी विभागीय निदेशक के अलावा डीएम,सीडीओ व विभागीय जेडी को दे दी है।

डीएम ने किया निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज व ट्रांजिट हास्टल का निरीक्षण

●निर्माण में सुस्ती देख डीएम ने निर्माण एजेंसी को लगाई फटकार

●व्यू कटर थ्री-डी माडल के द्वारा समझी मेडिकल कॉलेज की संरचना

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

शुक्रवार को डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज के हॉस्पिटल ब्लाक और ट्रांजिट हास्टल भवन का निर्माण कार्य का निरीक्षण कर प्रगति जानी और संबंधित को जरूरी निर्देश दिए। मेडिकल कॉलेज निर्माण की धीमी प्रगति पर कड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए फटकार लगाई। सर्वप्रथम डीएम ने निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज के हॉस्पिटल ब्लाक परिसर का स्थलीय निरीक्षण करने पहुंची, जहां उन्होंने मेडिकल कॉलेज निर्माण कार्य व गुणवत्ता के संबंध में जानकारी ली। निर्देशित किया कि मेडिकल कालेज का निर्माण कार्य समयबद्ध व गुणवत्ता पूर्ण ढंग से पूर्ण कराना सुनिश्चित करें।

सर्वप्रथम डीएम ने व्यू कटर थ्री-डी माडल से मेडिकल कॉलेज की संरचना समझी। उन्होंने प्रथम तल पर निर्मित वार्ड रूम की लंबाई, चौड़ाई एवं ऊंचाई की अपने सम्मुख माप करवाकर अनुमन्य माप से क्रॉस चेक किया। डीएम ने एएसी ब्लॉक, ईट और सीमेंट की जांच के लिए सैंपल भी करवाया। मौजूद अफसरों से नक्शे पर फ्लोर प्लान भी देखा। इसके बाद डीएम ने ट्रांजिट हास्टल भवन का निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने जांच के लिए उपयोग में लाई गई सीमेंट, ईट आदि निर्माण सामग्री का सैंपल भरवाया।

डीएम ने बारीकी से पूरे परिसर का निरीक्षण कर निर्माण कार्य के संबंध में जरूरी निर्देश दिए। सारे निर्माण कार्य को पूर्ण करते हुए गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने के भी निर्देश दिए। कार्यदायी संस्था को 15 अक्टूबर तक परियोजना के समस्त कार्य शत प्रतिशत पूर्ण करते हुए हैंडओवर करने के निर्देश दिये।

खीरी में सख्त पहरे में हुई यूपी पुलिस भर्ती परीक्षा

लखीमपुर, खीरी। जनपद में उप्र पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा 15 परीक्षा केंद्रों पर शुक्रवार को दो सत्रों में सख्त पहरे में यूपी पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा संपन्न हुई। सभी परीक्षा केंद्रों पर कड़े इंतजाम रहे। परीक्षा के प्रथम दिन प्रथम सत्र में 3071 एवं द्वितीय सत्र में 3134 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। परीक्षा को सकुशल बनाने के लिए डीएम, एसपी, एडीएम, एएसपी समेत सेक्टर मजिस्ट्रेट सतत भ्रमणशील रहकर परीक्षा केंद्रों का जायजा लेते रहे। वही स्टेटिक मजिस्ट्रेट परीक्षा केंद्रों पर मुस्तैद रहे। डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल व एसपी गणेश प्रसाद साहा ने दोनों सत्रों की परीक्षा में भ्रमणशील रहकर जनपद खीरी में स्थित परीक्षा केंद्रों (आदर्श जनता इंटर कालेज देवकली, जिला पंचायत इंटर कॉलेज कालाआम) का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेकर परीक्षा को सकुशल एवं शुचितापूर्ण सम्पन्न कराने जरूरी निर्देश दिए।

सीएचसी ने लगाया निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, जांच कर दीं औषधियां

लखीमपुर खीरी। बुखार के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग की टीमे गांव-गांव शिविर लगाकर स्वास्थ्य परीक्षण कर रही है सीएचसी अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई ने शुक्रवार को ग्राम नरदवल में आयोजित स्वास्थ्य शिविर का निरीक्षण कर मरीजों का हाल जाना। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फरधान द्वारा शुक्रवार को नरदवल गांव में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाकर मरीजों की जांच की गई और नि:शुल्क दवा वितरित की गई। साथ ही गांव में संक्रामक रोगों से बचाव के लिए एंटी लार्वा दवा का छिड़काव कराया गया। सीएचसी अधीक्षक डा अमित बाजपेई ने लोगों को मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों और उनसे बचाव के उपाय बताए। सीएचसी अधीक्षक डा अमित बाजपेई ने लोगों से अपील किया कि घरों में और आस-पास साफ-सफाई रखें और जल भराव न होने दें। जो मच्छर डेंगू फैलाता है उसकी मादा साफ पानी में अंडे देती है, इस लिए कहीं भी साफ पानी कई दिनों तक इकट्ठा न होने दें। गमले, पुराने बर्तन टायरों में पानी न जमा होने दें। कूलर की हर हफ्ते सफाई करें। इस मौके पर ग्राम प्रधान नरदवल राम सरन, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि शरद, स्वास्थ्य पर्यवेक्षक विनीत अवस्थी, लैब असिस्टेंट सौरभ सिंह, फार्मासिस्ट नरेंद्र मोहन, स्टाफ नर्स अंकित सिंह और आशा संगिनी सहित काफी लोग मौजूद रहे। सीएचसी अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई ने बताया सीएचसी क्षेत्र के नरदवल गांव में मरीजों को दवा दी गई। जिसमें 52 लोगों की जांच में एक मरीज मलेरिया पॉजिटिव मिला है वायरल फीवर को देखते हुए गांवों में स्वास्थ्य कैंपों का आयोजन किया जा रहा है इसके लिए टीमें बनाई गई है।

पुलिस भर्ती परीक्षा के दौरान डीएम-एसपी ने लिया परीक्षा केंद्रों का जायज़ा

संवाददाता। फर्रुखाबाद

आरक्षी नागरिक पुलिस के पदों पर सीधी भर्ती की लिखित परीक्षा कराने के लिए जिले में बनाए गए 18 केंद्रों पर परीक्षा आयोजित की गयी है। केन्द्रों पर 23 अगस्त से 31 अगस्त तक परीक्षा का आयोजन किया जायेगा। फिलहाल प्रथम दिन परीक्षा देनें के लिए रोडबेस बस अड्डे पर बड़ी संख्या में युवा पंहुचे । जनपद में 18 पुलिस भर्ती परीक्षा केंद्र हैं, जिसमें लगभग 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। इसके साथ ही बद्री विशाल महाविद्यालय , क्रिश्चियन इंटर कालेज , दुर्गा नारायण पीजी कालेज , सिटी गर्ल्स इंटर कालेज , राजकीय इंटर कालेज फर्रुखाबाद , राजकीय इंटर कालेज फत्तेहगढ़, राजकीय पालीटेक्नीक , जनता राष्ट्रीय इंटर कालेज फत्तेहगढ़ , के आर रस्तोगी इंटर कालेज , मदन मोहन कनोडिया बालिका इंटर कालेज , महावीर इंटर कालेज नगला खैरबंद , महीयसी महादेवी वर्मा राजकीय बालिका इंटर कालेज , म्युनिसिपल इंटर कालेज फत्तेहगढ़ , एनएकेपी इंटर कालेज , एनएकेपी डिग्री कालेज , रखा बालिका इंटर कालेज , स्वामी रामानंद बालिका इंटर कालेज , स्वामी रामानंद बालक इंटर कालेज में परीक्षा हो रही है। पबीती रात को ही अन्य जनपदों से परीक्षार्थी परीक्षा के लिए पंहुच गये थे। प्रत्येक केंद्र पर एक सेक्टर मजिस्ट्रेट व एक स्टेटिक मजिस्ट्रेट तैनात किया गया। वहीं परीक्षा कक्षों में सीसीटीवी कैमरे के साथ ही ड्रोन कैमरे से निगरानी की जा रही है।

जिलाधिकारी डा. वीके सिंह व एसपी आलोक प्रियदर्शी नें पुलिस बल के साथ पुलिस भर्ती परीक्षा केन्द्रों पर चल रही परीक्षा का जायजा लिया। इसके साथ ही सुरक्षा में किसी प्रकार की चुक न हो इसका ध्यान रखनें के निर्देश दिये।सायंकाल अपर पुलिस अधीक्षक डा. संजय सिंह ने बताया कि 45: परीक्षार्थी परीक्षा से अनुपस्थित रहे।केवल 55: लोगो ने ही परीक्षा दी। इस प्रकार केवल 6500 परीक्षार्थियों ने ही परीक्षा दी।

आईटीआई रोजगार मेले में 86 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

फर्रुखाबाद। राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान ठंडी सड़क में रोजगार-अप्रेंटिस मेला का आयोजन किया गया। मेला में हीरो मोटर कांप द्वारा प्रतिभाग किया गया। मेला में 126 अभ्यर्थी उपस्थित हुए। मेला में कंपनियों के प्रतिनिधियों द्वारा 126 अभ्यर्थियों का साक्षात्कार कर आई टी आई 52 अभ्यर्थियों को शिशीक्षु अप्रेंटिशशिप हेतु चयन किया गया एवम् 34 अभ्यर्थी एफ्टीई हेतु चयन किया गया। मेला की व्यवस्था में प्रमुख रूप से ब्रजेश कुमार कार्यदेशक, सुनील कुमार प्लेसमेंट प्रभारी, रंजीत कुमार सुमन अप्रेंटिस प्रभारी ,विनोद सिंह, राजकिशोर महतो अनुदेशक एवम् समस्त स्टाफ राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान फर्रुखाबाद मौजूद रहे।

कोतवाल नें पीस कमेटी की बैठक में नागरिकों से मांगे सुझाव

गुरसहायगंज, कन्नौज। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं चेहल्लुम ताजिया त्योहारों पर शान्ति व्यवस्था बनाये रखनें के उददेश्य से प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार दुवे की अध्यक्षता में कोतवाली परिसर में पीस कमेटी की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें उन्होनें नागरिकों से त्योहारों पर शान्ति व्यवस्था बनाये रखनें के लिये सहयोग की अपील की। शुक्रवार को कोतवाली परिसर में आयोजित पीस कमेटी की बैठक मे नागरिकों ने प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार दुवे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं चेहल्लुम ताजिया के दौरान उत्पन्न होनें वाली समस्याओं से अवगत कराया। इस दौरान शहरकाजी हाफिज जुम्मन एवं प्रसपा नेता मुनीर कुरैशी नें दोनों धर्मों के त्योहार एक ही दिन पडनें पर गंगा जुमनी तहजीब की परिचय देते हुये चेहल्लुम व ताजिया त्योहार को एक दिन पीछे करनें के निर्णय की सराहना की गई। कोतवाल नें कहा कि किसी जाति धर्म का त्योहार हो आपसी भाईचारा व प्रेम सौहार्द बढानें का कार्य करता है। लेकिन समाज के कुछ अराजक तत्व ऐसे होते हैं जो माहौल को खराब करनें का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों के विरुद्ध कडी कार्रवाई की जायेगी।

शिक्षक भर्ती घोटाले को लेकर किया प्रदर्शन, राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापन

फतेहपुर। नई प्राथमिक शिक्षक भर्ती का विज्ञापन जारी किए जाने के साथ ही शिक्षक भर्ती घोटालों के दोषियों पर कार्रवाई किए जाने की मांग को लेकर शुक्रवार को गुलाबी गैंग लोकतांत्रिक, महिला व अल्पसंख्यक कांग्रेस ने संयुक्त प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा है। गुलाबी गैंग लोकतांत्रिक की अध्यक्ष व महिला जिलाध्यक्ष हेमलता पटेल व ओबीसी कांग्रेस के जिलाध्यक्ष संदीप शाहू के नेतृत्व में पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन कर अपर उपजिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। जिसमें बताया गया कि हाईकोर्ट का आदेश जारी होने के बाद शासन से नियुक्ति प्रक्रिया का शेड्यूल जारी किया जाए। हाईकोर्ट के आदेश का अनुपालन किया जाए और नई सूची बनाकर तत्काल नियुक्ति दी जाए। नियमों की लापरवाही के चलते शोषित प्रभावित कार्यरत शिक्षकों के लिए भी शासन उनकी समस्या हल करे। पुरानी सूची बनाने वाले अधिकारियों को हटाया जाए। नए अधिकारियों को सूची बनाने की जिम्मेदारी दी जाए। पूरी प्रक्रिया को समय पर पूरा किया जाए। अध्यक्ष हेमलता पटेल ने कहा कि छह वर्षों से इंतजार कर रहे प्रदेश के लाखों शिक्षक अभ्यर्थियों के लिए सरकार जल्द एक नई प्राथमिक शिक्षक भर्ती का विज्ञापन निकाले।

तीन सभासद पदों पर दर्जन भर से अधिक आवेदन किए

रसूलाबाद, कानपुर देहात। भाजपा द्वारा नगर पंचायत में शासन सभासद के चयन को लेकर नगर पंचायतों में आवेदन लिए गए हैं। वहीं रसूलाबाद नगर पंचायत में तीन सभासद पदों को लेकर दर्जन भर से अधिक भाजपा कार्यकर्ताओं ने आवेदन किए हैं। रसूलाबाद नगर पंचायत का गठन 2006 में हुआ था और 2007 में प्रथम पंचवर्षीय का चुनाव हुआ था। जिसमें 13 सभासद नगर पंचायत के विभिन्न वार्डों से चुनकर आए थे तो वहीं तत्कालीन बसपा सरकार में तीन सभासद शासन द्वारा नामित किए गए थे। इसके अलावा 2012 में सपा की सरकार में भी रसूलाबाद नगर पंचायत में शासन की ओर से तीन सभासदों को नामित किया गया था। जबकि 2017 के निकाय चुनाव के बाद भी भाजपा की सरकार में तीन नामित सभासद थे। वहीं इस बार 2023 में हुए नगर पंचायत के चुनाव के बाद अब नामित सभासदों के चयन की प्रक्रिया आगे बढ़ चुकी है। जहां सामान्य, पिछड़ा और अनुसूचित जाति से एक-एक सभासद चुना जाना है।

टीबी के मरीजों को पूर्व मंत्री ने प्रदान किए पोषण आहार किट

हथगाम, फतेहपुर। प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नि:क्षय दिवस पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हथगाम में शुक्रवार को सीएचसी की ओर से पोषण आहार का वितरण मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री रणवेंद्र प्रताप सिंह उर्फ धुन्नी सिंह के कर कमलों से किया गया। इसके पहले जिला क्षय रोग अधिकारी डॉक्टर शहाबुद्दीन, कार्यवाहक अधीक्षक डॉक्टर अमित कुमार चौरसिया, एसटीएस दिलीप कुमार आदि के नेतृत्व में पूर्व मंत्री का बुके भेंट कर स्वागत किया गया। डॉक्टर अमित चौरसिया के नेतृत्व में सीएचसी के स्टाफने मिलकर पोषण आहार का वितरण कराया। पूर्व मंत्री के साथ प्रकाश चंद्र दीक्षित, अनिल कुमार शुक्ला, देवेंद्र अग्निहोत्री, गणेशी लाल साहू, बबलू सिंह चौहान, कमल सिंह, देवशरण द्विवेदी, पूर्व सभासद अंजनी किशोर बाजपेई, विनीत तिवारी, रावण पंडित, विजय बाजपेई, धर्मेंद्र पांडेय, गोरे मिश्रा, बचानी पासवान आदि भाजपा के वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2025 तक भारत को क्षय रोग मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इसके लिए समाज को भी ऐसे मरीजों की सेवा एवं सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए। मरीज को डॉक्टर के अनुसार नियमित रूप से दवाओं का वितरण करने के साथ-साथ केंद्र सरकार द्वारा प्रतिमाह पौष्टिक आहार के लिए पांच सौ रुपए दिया जाता है।

पूर्व मंत्री ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र द्वारा एक सैकड़ा से अधिक क्षय रोग पीड़ितों को पौष्टिक आहार किट देना स्वागत योग्य कदम है। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉक्टर शहाबुद्दीन ने कहा कि टीबी की दवा 6 माह तक चलेगी लेकिन उसके बाद भी समय समय छह माह के अंतराल में जांच अवश्य कर लें। बाल एवं नाखून को छोड़कर टीबी शरीर के किसी भी अंग में हो सकती है।

अंतरिक्ष दिवस पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

कानपुर देहात। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन रसूलाबाद विकास खंड क्षेत्र के अंतर्गत खेम निवादा प्राथमिक विद्यालय में किया गया। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी कल्पना के माध्यम से अंतरिक्ष से जुड़े विभिन्न विषयों को कागजों पर उतारा। प्रतियोगिता में बच्चों ने अंतरिक्ष यान, तारे, ग्रह, चंद्रमा, और अंतरिक्ष यात्रियों की तस्वीरें बनाईं। उन्होंने अपनी पेंटिंग्स में रंगों का सुंदर उपयोग किया और अपनी कल्पना को व्यक्त किया। स्कूल के इंचार्ज प्रधानाध्यापक अर्चना मिश्रा ने बताया कि इस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति रुचि जगाना और उनकी कल्पना को बढ़ावा देना था। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करती हैं और उन्हें विज्ञान और कला के प्रति आकर्षित करती हैं।

उत्कृष्ट कार्य करने वाली आशा, संगिनी व बीसीएम को मिला सम्मान

संवाददाता। फतेहपुर

जिलाधिकारी सी. इंदुमती के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत आयोजित जनपद स्तरीय आशा सम्मेलन का कार्यक्रम सरदार वल्लभ भाई पटेल प्रेक्षागृह में मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष अभय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला पंचायत अध्यक्ष ने दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यक्रम में आशाओं ने स्वागत गीत व जादूगर ने जादू का मंचन किया गया।

वित्तीय वर्ष 2023-24 में 46 उत्कृष्ट कार्य करने वाली आशाओं, आशा संगिनी, बीसीएम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रत्येक ब्लॉक व नगरीय से आशाओं को ब्लॉक स्तरीय प्रथम, द्वितीय व तृतीय, आशा संगिनी व बीसीएम को जनपद स्तरीय को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष ने कहा कि आशा/आशा संगिनी स्वास्थ्य के प्रति नागरिकों को घर-घर जाकर जागरूक करती हैं और नागरिकों स्वस्थ रखने में अपनी अहम भूमिका निभाती है। आपको सम्मानित करना मतलब कार्य के प्रति प्रोत्साहित करना है।

जनपद पूर्व में स्वास्थ्य की रैंकिंग में 63 वें स्थान पर था, मेहनत और लगन से अभी 36 वें नंबर पर है। जनपद को प्रथम स्थान पर लाने के लिए कार्य करें। मुख्य विकास अधिकारी पवन कुमार मीना ने कहा कि आशा (एक्रीडिटेड सोशल हेल्थ एक्टिविस्ट) के नाम से ही दायित्व का पता चलता है कि स्वास्थ्य के प्रति कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है।

सरकार के संचालित कार्यक्रम नियमित गतिविधियां, कम्युनिटी प्रोसेस, मातृ स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, बाल स्वास्थ्य, टीकाकरण, पीएमवीवाई, आरकेएसके, राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत 67 इंडिकेटरों पर कार्य किया जाता है और लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका है।

जिससे कि नागरिक स्वस्थ जीवन में आगे बढ़ते हैं। जनपद में 2340 आशाएं कार्य कर रही है, जो स्वास्थ्य के प्रति लोगों को घर-घर जाकर जागरूक करती है।

शहीद गुलाब सिंह लोधी का मनाया बलिदान दिवस

फतेहपुर। शहर के लोधीगंज में प्रथम झंडा नायक अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी सेवा संस्थान के बैनर तले अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी का बलिदान दिवस मनाया गया। अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी के 189 वें बलिदान दिवस पर उनके जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया और उनके बताए गए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी ने अपने कार्यों से लोधी समाज का सिर गौरव से ऊंचा किया है। उनके द्वारा किए गए कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। कार्यक्रम का संचालन मुन्नालाल लोधी व अध्यक्षता कृष्ण पाल सिंह लोधी ने किया। कार्यक्रम में सदर विधायक चंद्र प्रकाश लोधी, राजू लोधी, अक्षय लोधी, नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष राजकुमार मौर्य, डॉक्टर फूल सिंह लोधी, रामगोपाल लोधी, रूपचंद, गंगा प्रसाद, राजकुमार लोधी, मोहनलाल लोधी, राम विशाल, राम सजीवन सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

समाजवादी लोहिया वाहिनी ने चलाया सदस्यता अभियान

फर्रुखाबाद। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सशक्त पीडीए के शिल्पकार अखिलेश यादव के निर्देशानुसार व प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल की स्वीकृति से समाजवादी राष्ट्रीय छात्र सभा के नेतृत्वमें जनपद फर्रुखाबाद की विधानसभा अमृतपुर के मोहम्मदाबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हार्डवेयर एंड सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी कांप्यूटर एवं शास्त्रीनगर राजेन्द्र ई रिक्शा एजेंसी आदि कार्यक्रमों में जाकर छात्र,नौजवान, पी डी ए जागरूकता अभियान के तहत सुमित कन्हैया (प्रभारीराष्ट्रीय सचिव समाजवादी छात्र सभा) के द्वारा संचालित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित छात्र नौजवानों के साथ हुए संवाद में पुलिस भर्ती एवं नीट पेपर लीक, फीस वृद्धि सहित अग्निवीर योजना जैसे मुद्दों को प्रमुख रूप से नौजवानों के समक्ष रखा गया, जिससे प्रभावित होकर दर्जनों छात्र, नौजवानों ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

निरुद्ध बंदी ने जेल में फांसी लगाकर दी जान

हमीरपुर। जिले के जिला कारागार में गुरुवार को देर रात हत्याए अपरहण गैगेस्टर के मामले में निरुद्ध बंदी ने रसोईया में लगे पंखे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। जिला कारागार अधीक्षक बीआर वर्मा ने शुक्रवार को बताया कि कुरारा क्षेत्र के शिवनी गांव निवासी नफीस;(50) नौ जून 2019 से जेल में हत्या रेप व गैगेस्टर के मामले में बंद था। गुरुवार को रसाईया में बंदी की डियूटी लगायी गयी थी देर रात काम समाप्त होने के बाद सभी लोग बाहर निकल आये मगर यह बंदी रसोइया में छिप गया और वही पर रखी पानी की टंकी में चढ़कर रस्सी से पंखे में लटक कर फांसी लगा ली।

फोरेंसिक विज्ञान सच्चाई और इंसाफ का आधारस्तंभ: धनखड़

भाषा। गांधीनगर

फोरेंसिक विज्ञानियों से आतंकवाद और संगठित अपराधों का मुकाबला करने तथा पर्यावरण क्षरण एवं साइबर अपराधों को रोकने के लिए अपने कौशल का इस्तेमाल करने का आह्वान करते हुए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को कहा कि फोरेंसिक विज्ञान न केवल तकनीकी क्षेत्र है बल्कि यह सच्चाई एवं इंसाफ का आधारस्तंभ भी है। धनखड़ ने कहा कि फोरेंसिक विज्ञान सुनिश्चित करता है कि अपराधियों को इंसाफ के कठघरे तक पहुंचाया जाए और इससे भी अधिक बड़ी बात है कि यह बेगुनाही भी साबित करने में मदद करता है।उन्होंने कहा, जो समाज किसी निर्दोष की पुकार नहीं सुन सकता, वह समाज पतन की दहलीज पर पहुंच जाता है। धनखड़ ने नेशनल फोरेंसिक साइंसेज यूनिवर्सिटी (एनएफएसयू) में विशेष व्याख्यान के दौरान भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम के पारित होने की प्रशंसा करते हुए कहा, इसने हमें हमारी क्रूर औपनिवेशिक विरासत से मुक्ति दिलाई है। उपराष्ट्रपति ने कहा, हम (तीन आपराधिक कानूनों के पारित होने के साथ) औपनिवेशिक विरासत से मुक्त हो गए, हमने अपनी स्वतंत्रता को परखा है। दंड विधान अब न्याय विधान बन गया। यह सिर्फ एक बदलाव नहीं है, बल्कि एक बड़ा बदलाव, एक बहुत जरूरी बदलाव है, जिसने हमें उस क्रूर औपनिवेशिक विरासत से मुक्त कर दिया जहां कानून का निर्धारण कारक यह था कि जनता से सख्ती से कैसे निपटा जाए। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की अपराध न्याय प्रणाली उसके लोकतंत्र को परिभाषित करती है क्योंकि इसका हमारी आजादी से सीधा संबंध है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि अपराध विज्ञान न केवल एक तकनीकी क्षेत्र है बल्कि यह सच्चाई एवं इंसाफ का आधारस्तंभ भी है।धनखड़ ने कहा कि जो लोग अपराध विज्ञान के क्षेत्र में हैं, उनके कार्य ही बेगुनाह लोगों के लिए अंतिम शरणस्थली है और आप उस व्यक्ति को पकड़ने में मदद करते हैं जो अंतिम रूप से गुनहगार है। उन्होंने कहा, इंसाफ नहीं हो पाना समाज के लिए बहुत ही निरुत्साहजनक कारक है और फोरेंसिक विज्ञान के बगैर इस गुंजाइश से इनकार नहीं किया जा सकता है। फोरेंसिक विज्ञान अपराधी को न्याय के कठघरे में लाने के साधन से भी कहीं अधिक बड़ा है। वास्तव में, (इससे) अपराधी पर इंसाफ का शिकंजा तो कसता ही है, लेकिन यह बेगुनाही स्थापित करने में भी मदद करता है। धनखड़ ने कहा कि चूंकि साइबर सुरक्षा क्षेत्र में व्यापक बदलाव हो रहा है, इसलिए यह संस्थाओं, समाज और व्यक्तियों के लिए चुनौती बन गया है और ऐसे अपराधों की जांच करने वाले अपराध विज्ञान के विशेषज्ञों की आवश्यकता बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि फोरेंसिक विज्ञान प्रदूषण के स्रोतों की पहचान करने, वन्यजीवों के अवैध शिकार पर नजर रखने और पर्यावरण नियमों के अनुपालन की निगरानी करने में मदद कर जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी क्षरण से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने में एक विविध सकारात्मक भूमिका निभा सकता है।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 4.54 अरब डॉलर बढ़कर 674.66 अरब डॉलर पर

मुंबई। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 16 अगस्त को समाप्त सप्ताह में 4.54 अरब डॉलर बढ़कर 674.66 अरब डॉलर हो गया है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। इससे पिछले सप्ताह विदेशी मुद्रा भंडार 4.8 अरब डॉलर घटकर 670.11 अरब डॉलर रहा था। आरबीआई की ओर से शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, 16 अगस्त को समाप्त सप्ताह में मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा मानी जाने वाली विदेशी मुद्रा आस्तियां 3.60 अरब डॉलर बढ़कर 591.56 अरब डॉलर हो गईं।डॉलर के संदर्भ में उल्लेखित विदेशी मुद्रा आस्तियों में विदेशी मुद्रा भंडार में रखे गए यूरो, पाउंड और एन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं की घट-बढ़ का प्रभाव शामिल होता है। समीक्षाधीन सप्ताह में स्वर्ण भंडार का मूल्य 86.5 करोड़ डॉलर बढ़कर 60.10 अरब डॉलर हो गया। विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) छह करोड़ डॉलर बढ़कर 18.34 अरब डॉलर हो गए। आलोच्य सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) के पास भारत का आरक्षित भंडार 1.2 करोड़ डॉलर बढ़कर 4.65 अरब डॉलर हो गया।

पूरे भारत में जलाशयों के स्तर में सुधार लेकिन उत्तरी क्षेत्र में सामान्य से कम स्तर

नई दिल्ली। (भाषा) देश के प्रमुख जलाशयों में कुल जल-भंडारण स्तर में पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय सुधार हुआ है लेकिन कुछ क्षेत्रों विशेष रूप से उत्तरी क्षेत्र में, सामान्य से कम भंडारण स्तर बना हुआ है, जिससे आगामी महीनों में पानी की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है। आधिकारिक आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) ने देशभर के 155 जलाशयों की जल संग्रहण स्थिति पर अपनी नवीनतम रिपोर्ट जारी की है, जिसमें खुलासा किया गया है कि पिछले वर्ष की तुलना में समग्र जल-भंडारण स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। शुक्रवार को जारी बुलेटिन के अनुसार, इन जलाशयों में उपलब्ध संग्रहण क्षमता 130.800 अरब घर मीटर (बीसीएम) है, जो कुल संग्रहण क्षमता का 72 प्रतिशत है।रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कुछ क्षेत्रों, विशेषकर उत्तरी क्षेत्र में, भंडारण स्तर हालांकि सामान्य से कम है जिससे आने वाले महीनों में जल उपलब्धता प्रभावित हो सकती है।यह पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान दर्ज किए गए 114.657 बीसीएम से उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है, जिससे पता चलता कि वर्तमान भंडारण पिछले वर्ष के स्तर का 114 प्रतिशत है तथा पिछले 10 वर्षों के औसत भंडारण का 112 प्रतिशत है। रिपोर्ट में जल-भंडारण स्तरों में क्षेत्रीय भिन्नताओं पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें कुछ क्षेत्रों में अन्य की तुलना में बेहतर भंडारण स्तर है। उत्तरी क्षेत्र में, जिसमें हिमाचल प्रदेश, पंजाब और राजस्थान शामिल हैं, भंडारण स्तर सामान्य से कम है, जहां जलाशयों में उनकी क्षमता का केवल 53 प्रतिशत ही पानी बचा है।यह पिछले वर्ष दर्ज 84 प्रतिशत की तुलना में महत्वपूर्ण गिरावट है। इ स के विपरीत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों वाले दक्षिणी क्षेत्र में अधिक सकारात्मक रुझान दिखाई देता है, जहां जलाशयों की क्षमता 80 प्रतिशत है। पूर्वी क्षेत्र, जिसमें असम, पश्चिम बंगाल और बिहार जैसे राज्य शामिल हैं, में भी जल-भंडारण स्तर में वृद्धि दर्ज की गई है। इस क्षेत्र में जलाशय वर्तमान में 60 प्रतिशत क्षमता पर हैं, जो पिछले वर्ष दर्ज 43 प्रतिशत की तुलना में उल्लेखनीय सुधार है। इसी तरह पश्चिमी क्षेत्र, जिसमें गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा शामिल हैं, में भंडारण स्तर में वृद्धि देखी गई है जहां जलाशयों की क्षमता अब 74 प्रतिशत है, जो पिछले वर्ष 69 प्रतिशत थी।मध्य क्षेत्र में, जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ शामिल हैं।

सिद्धरमैया के साथ खड़ी हुई कांग्रेस

आरोपों को सरकार अस्थिर करने का प्रयास करार दिया

नई दिल्ली। (भाषा) कांग्रेस नेतृत्व ने मैसूरु शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) से जुड़े मामले में शुक्रवार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया का समर्थन किया और कहा कि ए आरोप राज्य में उसकी सरकार को अस्थिर करने तथा सरकार की विभिन्न गारंटी को रोकने का प्रयास है, लेकिन पार्टी नहीं झुकेगी और न्यायपालिका में तथा जनता की अदालत में लड़ाई जारी रखेगी। सिद्धरमैया और उप मुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने यहां पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की तथा पूरे मामले से उन्हें अवगत कराया।कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने पिछले दिनों तीन अधिकार कार्यकर्ताओं की शिकायत पर एमयूडीए में कथित वैकल्पिक भूखंड घोटाले में मुख्यमंत्री के खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति दे दी, जिसके बाद मुख्य विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सिद्धरमैया के खिलाफ हमलावर है। कांग्रेस नेतृत्व से सिद्धरमैया की मुलाकात के बाद कांग्रेस महासचिव और कर्नाटक प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने संवाददाताओं से बातचीत में आरोप लगाया कि राज्यपाल भाजपा के फ्रंटमैन की तरह काम कर रहे हैं तथा यह प्रयास किया जा रहा है कि गृह लक्ष्मी और अन्न भाग्य जैसी गारंटी को रोका जाए तथा कांग्रेस की सरकार को अस्थिर किया जाए। उन्होंने दावा किया कि केंद्र की मोदी सरकार सिद्धरमैया पर नहीं, बल्कि कर्नाटक की जनता तथा एक ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) मुख्यमंत्री पर हमला कर रही है। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा कि इस मामले पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलने समेत सभी विकल्प खुले हुए हैं। सुरजेवाला ने कहा, हम हर हमले का सामना करेंगे, हम केंद्र सरकार और राज्यपाल के हमलों को सामना करेंगे...हम इस लड़ाई को न्यायपालिका में लड़ने के साथ ही जनता की अदालत में लड़ेंगे। उन्होंने सवाल किया कि भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर राज्यपाल ने पूर्व मुख्यमंत्री बी एस एदियुरप्पा, एच डी कुमारस्वामी और भाजपा तथा जद(एस) के नेताओं के खिलाफ अनुमति क्यों नहीं दी? सुरजेवाला ने कहा, हम इस लड़ाई में एकजुट खड़े हैं। हम अपने मुख्यमंत्री के साथ खड़े हैं। सिद्धरमैया ने कहा, हमने कांग्रेस नेतृत्व को बताया कि राज्यपाल ने कैसे दलगत तरीके से काम किया है। हमें अदालत में भरोसा है, हमें कानून में विश्वास है। उन्होंने कहा, राज्यपाल का फैसला असंवैधानिक और गैरकानूनी है। इसलिए हमें अदालत से न्याय मिलेगा।

फर्जी एनसीसी शिविर मामले में छात्रा के यौन उत्पीड़न के मुख्य संदिग्ध ने कर ली आत्महत्या

कृष्णागिरि (तमिलनाडु)। (भाषा) कृष्णागिरी जिले के बरगुर स्थित फर्जी नेशनल कैडेट कोर (एनसीसी) शिविर में एक स्कूल छात्रा का यौन उत्पीड़न करने के मामले के मुख्य संदिग्ध ने शुक्रवार को कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने यह जानकारी दी। उसने बताया कि शिवरमण ने 19 अगस्त को गिरफ्तारी से पहले कथित तौर पर चूहा मारने वाली दवा खा ली थी।

पुलिस से बचने के लिए उसने भागने की कोशिश की थी जिससे उसके पैर की हड्डी टूट गई थी। इसके बाद उसे कृष्णागिरी के राजकीय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालांकि बाद में हालत बिगड़ने पर उसे सलेम के राजकीय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां शुक्रवार को उसकी मौत हो गई। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि शिवरमण के पिता अशोक कुमार की बृहस्पतिवार को एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। हादसे के वक्त वह नशे की हालत में दोपहिया वाहन चला रहे थे। छात्रा का यौन उत्पीड़न मामले में बरगुर ऑल वुमन पुलिस ने शिवरमण और स्कूल के अधिकारियों समेत कुल 11 लोगों को गिरफ्तार किया था। इन लोगों ने कथित तौर पर एक फर्जी एनसीसी शिविर का आयोजन कर आठवीं कक्षा की एक छात्रा सहित कई लड़कियों का यौन शोषण किया था। इस फर्जी एनसीसी शिविर में 17 लड़कियों सहित करीब 41 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया था। लड़की के अपने अभिभावकों को घटना की जानकारी देने के बाद मामला सामने आया था और उन्होंने पुलिस में शिकायत दी थी। विपक्षी दलों अन्नाद्रमुक और भाजपा ने शिवरमण के पिता की कथित तौर पर सड़क दुर्घटना में मौत के बाद उसके आत्महत्या करने पर संदेह जताया है। उन्होंने सवाल किया कि क्या फर्जी एनसीसी शिविर में लड़कियों के यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार में शामिल असली अपराधी को बचाने का कोई प्रयास किया जा रहा है। मीडिया में आई खबरों का हवाला देते हुए अन्नाद्रमुक महासचिव ई.के. पलानीसामी ने कहा कि विशेष जांच दल (एसआईटी) द्वारा मामले की जांच शुरू करने से पहले शिवरमण की मौत और बृहस्पतिवार रात अशोक कुमार की मौत का समय संदेह पैदा करता है। पलानीसामी ने यहां एक बयान में कहा, जनता हैरान है कि क्या शिवरमण की हत्या इस डर से की गई है कि वह आपराधिक गतिविधि में शामिल असली अपराधियों के नाम उजागर कर सकता था और पुलिस असली अपराधियों को बचाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने मांग की कि एसआईटी गहन जांच करे और फर्जी एनसीसी शिविरों में यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार में शामिल लोगों को बेनकाब करे। साथ ही, उन्होंने यह भी जानना चाहा कि अब तक ऐसे कितने शिविर आयोजित किए गए और क्या उन स्कूलों पर कोई कार्वाई की गई है जिन्होंने अपने बच्चों को ऐसे फर्जी शिविरों में भाग लेने की अनुमति दी। ऐसी ही राय व्यक्त करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, दोनों मौत संदिग्ध हैं... इस बात को लेकर गहरा संदेह है कि क्या मामले में शामिल लोगों को गिरफ्तार किया गया है या फिर किसी को बचाने के लिए दोनों मौतें हुईं।

इसरो ने चंद्रयान-3 मिशन का वैज्ञानिक डेटा शोधकर्ताओं के लिए सार्वजनिक किया

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने भारत के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता की पहली वर्षगांठ पर शुक्रवार को मिशन से संबंधित वैज्ञानिक डेटा को विश्लेषण के वास्ते दुनियाभर के अनुसंधानकर्ताओं के लिए सार्वजनिक कर दिया। एजेंसी ने विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर पर लगे पांच पेलोड से हासिल 55 गीगाबाइट (जीबी) से अधिक डेटा सार्वजनिक किया है। पिछले साल 23 अगस्त को चंद्रयान-3 मिशन के चंद्रमा के दक्षिणी क्षेत्र पर उतरने के साथ ही भारत ने इतिहास रच दिया था। इसरो के प्रमुख एस.एस. सोमनाथ ने यहां राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह में कहा, यह डेटा उन वैज्ञानिकों तक ही सीमित नहीं रहेगा जिन्होंने उन उपकरणों को बनाए थे, बल्कि इसे विश्लेषण के लिए देश और दुनिया के सभी शोधकर्ताओं के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। चंद्रयान-3 डेटा सेट भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान डेटा सेंटर (आईएसएसडीसी) की नीति-आधारित डेटा पुनर्प्राप्ति, विश्लेषण, प्रसार एवं अधिसूचना प्रणाली (प्रदान) पोर्टल पर उपलब्ध हैं। प्रज्ञान रोवर ने चंद्रमा की सतह का स्थलीय रासायनिक विश्लेषण किया, जिससे चंद्रमा की उत्पत्ति एवं विकास की बेहतर समझ हासिल हुई है।

भारत में अधिकांश रेलवे ट्रैक का विद्युतीकरण पूरा

नई दिल्ली। रेल मंत्रालय के अतिरिक्त सदस्य (वाणिज्य) मुकुल सरन माथुर ने शुक्रवार को नई दिल्ली में आयोजित एसोचैम राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान भाषण में कहा कि भारत ऐसा देश है जहां के अधिकांश रेलवे ट्रैक का विद्युतीकरण हो चुका है। रेल मंत्रालय के विशेषज्ञो, हितधारको और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियो ने विकसित भारत के लिए रेलवे के आधुनिकीकरण के लिए कई पहलुओ और परिवर्तनकारी तकनीकी समाधानो पर विचार-विमर्श किया। माथुर ने रेलवे की उपलब्धियो पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा कि वर्तमान मे रेल का नेटवर्क बढ़कर 68,000 किलोमीटर हो गया है। उन्होने कहा कि देश मे हर दिन दो करोड़ लोग ट्रेन से यात्रा करते है ऐसे मे क्षमता को और अधिक बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होने कहा कि हाल ही मे पांच हजार से अधिक विशेष ट्रेन चलाई गईं। उन्होने वंदे भारत ट्रेन का भी उदाहरण दिया। माथुर के अनुसार, 2023-24 मे रेलवे के विस्तार के लिए 85,000 करोड़ रुपए की योजना है। उन्होने कहा कि रेलवे टिकट रद्द या ट्रेन रद्द होने की स्थिति मे टिकट के मूल्य के वापसी भुगतान प्रक्रिया पहले से बेहतर हो गई है। अब राशि का भुगतान करने मे पहले से एक-दो दिन कम लगते है। एसोचैम के वरिष्ठ सदस्य एवं रिवर इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपक शर्मा ने भारत के विकसित भारत के दृष्टिकोण मे रेलवे के आधुनिकीकरण को एक प्रमुख घटक के रूप मे वर्णित किया। शर्मा ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य भारतीय रेलवे को एक विश्व स्तरीय नेटवर्क मे बदलना है जो आर्थिक विकास को बढ़ाने मे मदद करता है, कनेक्टिविटी को बढ़ाता है और लाखो लोगो के जीवन को आसान बनाता है। गोल्डरैट रिसर्च लैब्स अमेरिक के वैज्ञानिक अनिमेष गुप्ता ने रेलवे मे प्रौद्योगिकी और माल ढुलाई से संबंधित कमियो पर चर्चा की।

बंधन बैंक ने दो नए लॉन्च के साथ मनाया स्थापना दिवस

नई दिल्ली। बंधन बैंक ने अपने स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर महिलाओं के लिए एक विशेष बचत खाता अवनी शुरू करने की घोषणा की। बैंक ने अपने अभिनव उद्यम.व्यापी लॉयल्टी प्रोग्रामए बंधन बैंक डिलाइट्स को भी लॉन्च कियाए जहाँ ग्राहक डिलाइट पॉइंट्स नामक रिवॉर्ड पॉइंट्स अर्जित कर सकते हैंए अपनी खरीदारी के लिए अर्जित डिलाइट पॉइंट्स का उपयोग कर सकते हैं और विशेष ऑफर्स का आनंद भी ले सकते हैं।अवनी के साथए ग्राहकों को एक विशेष डेबिट कार्ड मिलता हैए जो मुफ्त एयरपोर्ट लाउंज एक्सेसए 10 लाख रुपए का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवरए 3054 लाख रुपए की कार्ड खोने की देयता और प्रीमियम ब्रांड्स के कई खर्च.आधारित ऑफर्स प्रदान करता है। अवनी वार्षिक लॉकर किराएए गोल्ड लोन प्रोसेसिंग फीस के साथ.साथ सौंदर्य और कल्याण उत्पादों पर भी आकर्षक छूट प्रदान करता है। बंधन बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (अंतरिम) रतन केश ने कहा, एक सार्वभौमिक बैंक के रूप में बंधन बैंक के नौ वर्षों मेंए हमने विभिन्न ग्राहक वर्गों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उत्पाद सूट को मजबूत किया है। महिलाओं ने हमेशा हमारी यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और बैंक की सफलता में योगदान दिया है।

उत्तराखंड में भारी बारिश और भूस्खलन

चार की मौत, एक व्यक्ति गंगा में बहा

रुद्रप्रयागादेहरादून। (भाषा) उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश के दौरान रुद्रप्रयाग जिले में भूस्खलन की चपेट में आने से चार नेपाली मजदूरों की मृत्यु हो गई जबकि हरिद्वार जिले में एक व्यक्ति उफनती नदी में नहाते समय बह गया। भारी बारिश से जगह-जगह भूस्खलन होने से बदरीनाथ, केदारनाथ और यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग भी यातायात के लिए बाधित हो गया। यहां राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र से मिली जानकारी के अनुसार, हरिद्वार जिले के रूड़की के पास हरि अक्षय नगर फेज-। के 70 घरों में बृहस्पतिवार रात को पथरी नदी का पानी भर गया। पानी से कॉलोनी की चारदीवारी भी टूट गई। नदी का पानी निकटवर्ती खेतों में भी भर गया जिससे फसलों को नुकसान पहुंचा।

केंद्र के अनुसार, टिहरी जिले के बाणगंगा क्षेत्र में गेंवली गांव में भारी बारिश से आधा दर्जन से अधिक मकान क्षतिग्रस्त हो गए। रुद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ के रास्ते में फाटा गांव में हेलीपैड के पास पहाड़ी से भूस्खलन होने से उसके मलबे के नीचे दबने से नेपाल के चार मजदूरों की मृत्यु हो गई। रुद्रप्रयाग के आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि बृहस्पतिवार मध्यरात्रि के बाद करीब 1.20 बजे हुई घटना की सूचना मिलने पर राज्य आपदा प्रतिवादन बल(एसडीआरएफ) की टीम मौके पर पहुंची और मलबे के अंदर से उनके शव बरामद किए। रजवार ने बताया कि मृतकों की पहचान तुल बहादुर, पूर्णा नेपाली, कृष्ण परिधार और दीपक बूरा के रूप में हुई है। परिचालन केंद्र ने बताया कि हरिद्वार जिले के लक्सर के कांगदी क्षेत्र में वर्षा से उफनाई गंगा नदी में नहाते समय राहुल नाम का एक व्यक्ति बह गया। एसडीआरएफ तथा जल पुलिस की मदद से नदी में बहे व्यक्ति की तलाश की जा रही है। राहुल हरिद्वार जिले के शेरपुर बेला गांव का निवासी था।

पेज 1 का शेष

साथ...

उन्होंने कहा, यह बहुत विस्तृत, खुली और कई मायनों में रचनात्मक वार्ता थी। उन्होंने कहा कि बातचीत कुछ हद तक सैन्य स्थिति, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा जैसी चिंताओं और शांति के लिए सभी संभव तरीकों पर केंद्रित थी। उन्होंने कहा कि यूक्रेन वैश्विक शांति सम्मेलन में भारत की भागीदारी जारी रखना चाहता है। जयशंकर ने कहा कि चर्चा को आगे बढ़ाने के प्रभावी तरीकों पर भी चर्चा हुई। उन्होंने कहा, भारत का मानना है कि दोनों पक्षों (यूक्रेन और रूस) को समाधान खोजने के लिए एक-दूसरे के साथ बातचीत करने की जरूरत है। विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों नेताओं ने क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान और देशों की संप्रभुता की रक्षा जैसे अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए सहयोग जारी रखने के वास्ते अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। जयशंकर ने कहा कि प्रधानमंत्री ने जमीनी स्थिति और कूटनीतिक परिदृश्य, दोनों के बारे में राष्ट्रपति से उनका आकलन जाना। उन्होंने बताया कि जेलेंस्की ने दोनों मुद्दों पर बात की। विदेश मंत्री ने मोदी की कीव यात्रा को ऐतिहासिक बताया। प्रधानमंत्री सुबह एक विशेष ट्रेन में कीव पहुंचे और यूक्रेन के पहले उपप्रधानमंत्री ने उनकी अगवानी की। जयशंकर ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के बीच चर्चा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा द्विपक्षीय संबंधों के लिए समर्पित था। उन्होंने कहा कि व्यापार, आर्थिक मुद्दों, रक्षा, औषधि, कृषि और शिक्षा पर चर्चा हुई। मोदी और जेलेंस्की ने भारत-यूक्रेन अंतर-सरकारी आयोग को विशेष रूप से व्यापार और आर्थिक संबंधों के पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने का काम सौंपा। पोलैंड से लगभग 10 घंटे की ट्रेन यात्रा के बाद हयात होटल पहुंचने पर भारतीय समुदाय के लोगों ने मोदी का गर्मजोशी से स्वागत किया। इसके तुरंत बाद मोदी ने यूक्रेन राष्ट्रीय संग्रहालय में शहीदों पर आधारित एक मल्टी-मीडिया प्रदर्शनी का मुआयना किया, जहां राष्ट्रपति जेलेंस्की ने गर्मजोशी से प्रधानमंत्री से हाथ मिलाया और उन्हें गले लगाया। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि संघर्ष में जान गंवाने वाले बच्चों की याद में स्थापित मार्मिक प्रदर्शनी देखकर प्रधानमंत्री का मन भर आया। मोदी ने इस पर शोक जताया और मारे गए बच्चों के सम्मान में उन्हें याद करते हुए एक खिलौना रखा। जेलेंस्की के साथ बातचीत से पहले मोदी ने कीव में ओएसिस ऑफ पीस पार्क स्थित सत्य और अहिंसा के प्रतीक महात्मा गांधी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

अनिल अंबानी...

सेबी ने कहा कि उसके निष्कर्षों के अनुसार, धोखाधड़ी की एक साजिश नोटिसी संख्या 2 (अनिल अंबानी) ने रची और आरएचएफएल के केएमपी ने इसे अंजाम दिया। इस साजिश के जरिए सार्वजनिक सूचीबद्ध कंपनी (आरएचएफएल) से धन की हेराफेरी की गई और उन अयोग्य उधारकर्ताओं को ऋण के रूप में दिया गया जो नोटिसी संख्या 2 (अनिल अंबानी) से संबद्ध इकाइयों के प्रवर्तक पाए गए। अंबानी ने धोखाधड़ी को अंजाम देने के लिए एडीए समूह के चेयरमैन के तौर पर अपने पद और आरएचएफएल की नियंत्रक (होल्डिंग) कंपनी में अपनी महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष शेयरधारिता का इस्तेमाल किया। सेबी ने बृहस्पतिवार को अपने 222 पृष्ठ के आदेश में कंपनी के प्रबंधन तथा प्रवर्तक के लापरवाह रवैए का जिक्र किया, जिसके तहत उन्होंने ऐसी कंपनियों को सैकड़ों करोड़ रुपए के ऋण स्वीकृत किए जिनके पास न तो परिसंपत्तियां थीं, न ही नकदी प्रवाह, नेटवर्थ या राजस्व था। आदेश के अनुसार, इससे पता चलता है कि कर्ज के पीछे कोई खतरनाक मकसद छिपा था। सेबी ने कहा कि स्थिति तब और भी संदिग्ध हो गई जब हम इस बात पर गौर करते हैं कि इनमें से कई कर्जदार आरएचएफएल के प्रवर्तकों से करीबी तौर पर जुड़े हुए हैं।

जनता के...

उन्होंने समाज के हर वर्ग के लिए विकास किया है। सीएम ने भाजपा के सभी मोर्चा के अध्यक्षों व प्रकोष्ठों के संयोजकों से संवाद साधा। मोर्चा के पदाधिकारियों से पूछा कि क्या काम कर रहे हैं और क्या करना चाहिए। युवा, महिला मोर्चा समेत व्यापार, श्रम, आर्थिक प्रकोष्ठ, लघु उद्योग, शिक्षण संस्थान प्रकोष्ठ, विधि समेत 22 प्रकोष्ठों के संयोजकों ने अपनी बातें रखीं। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसौदिया, पूर्व केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, सांसद अतुल गर्ग महापौर सुनीता दयाल, प्रदेश सरकार के मंत्री कपिलदेव अग्रवाल, बृजेश सिंह, नरेंद्र कश्यप, जिला पंचायत अध्यक्ष ममता त्यागी, एमएलसी दिनेश गोयल, विधायक अजीत पाल त्यागी नंदकिशोर गुर्जर, मंजू सिवाच, धर्मेश तोमर, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मानसिंह गोस्वामी, मयंक गोयल, क्षेत्रीय महामंत्री हरि ओम शर्मा, जिलाध्यक्ष सतपाल प्रधान, महामंत्री गोपाल अग्रवाल आदि मौजूद रहे। संचालन भाजपा के महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा ने किया।

डीजीसीए...

छह लाख रुपए और प्रशिक्षण निदेशक पर तीन लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। साथ ही प्रशिक्षण निदेशक को छह महीने के लिए निलंबित कर दिया गया है। एयरलाइन द्वारा 10 जुलाई को प्रस्तुत स्वैच्छिक रिपोर्ट के जरिए घटना के संज्ञान में आने के बाद नियामक ने एयरलाइन के परिचालन की जांच की। इसमें दस्तावेजों आदि की जांच भी शामिल थी। बयान में कहा गया, जांच के आधार पर प्रथम दृष्टया पता चला है कि कई पदधारकों तथा कर्मचारियों द्वारा नियामकीय प्रावधानों का उल्लंघन किया गया जिससे सुरक्षा पर काफी असर पड़ सकता था। डीजीसीए ने कहा कि विमान के कमांडर और एयरलाइन के पदधारकों को 22 जुलाई को जारी कारण बताओ नोटिस के जरिए अपनी स्थिति स्पष्ट करने का अवसर दिया गया था। संबंधित व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत उत्तर संतोषजनक नहीं पाए गए। इसलिए डीजीसीए ने मौजूदा नियमोंाविनियमों के प्रावधानों के संदर्भ में प्रवर्तन कार्वाई शुरू की है और उपरोक्त जुर्माना लगाया है।

केजरीवाल...

और आपत्तिजनक सबूतों का सामना करने के बावजूद वह तथ्यों का सच्चाई से खुलासा करने में विफल रहे। एजेंसी ने कहा, मौजूदा मामले में सुविधा का संतुलन सीबीआई के पक्ष में है। याचिकाकर्ता को जमानत पर रिहा करने से मामले की सुनवाई पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, जो प्रारंभिक चरण में है और प्रमुख गवाहों को अभी गवाही देनी है। याचिकाकर्ता द्वारा मेडिकल जमानत पर रिहा किए जाने का कोई मामला नहीं बनाया गया है, जिसे केवल तभी दिया जाना चाहिए जब जेल में इलाज संभव न हो। अन्य सभी कथनों को ऊपर सीबीआई द्वारा पहले ही निपटाया जा चुका है, और यहां संक्षिप्तता के लिए दोहराया नहीं गया है।

अमित शाह...

को सरकारी नौकरियों में बहाल करने का समर्थन करती है, जिससे आतंकवाद, उग्रवाद और हमलों का युग वापस आएगा। उन्होंने कहा, गठबंधन ने कांग्रेस पार्टी के आरक्षण विरोधी रुख को उजागर कर दिया है। उन्होंने जानना चाहा कि क्या कांग्रेस दलितों, गुज्जरों, बकरवालों और पहाड़ी समुदायों के लिए आरक्षण समाप्त करने के जेकेएनसी के वादे का समर्थन करती है, जिससे उन पर अन्याय होगा? क्या कांग्रेस चाहती है कि 'शंकराचार्य हिल' को 'तख्त-ए-सुलेमान' और 'हरि हिल' को 'कोह-ए-मारन' के नाम से जाना जाए। शाह ने पूछा कि क्या कांग्रेस जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था को फिर से भ्रष्टाचार में धकेलने और इसे चुनिंदा पाकिस्तान समर्थित परिवारों को सौंपने की राजनीति का समर्थन करती है और क्या वह नेशनल कॉन्फ्रेंस की जम्मू और घाटी के बीच 'भेदभाव' की राजनीति का समर्थन करती है। उन्होंने पूछा, क्या कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी कश्मीर को स्वायत्तता देने की जेकेएनसी की विभाजनकारी राजनीति का समर्थन करते हैं? पूर्व भाजपा अध्यक्ष ने दावा किया कि मोदी सरकार ने अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त करने के बाद दलितों, जनजातियों, पहाड़ियों और पिछड़े समुदायों को आरक्षण देकर उनके खिलाफ वर्षों के भेदभाव को समाप्त कर दिया। उन्होंने कहा, क्या राहुल गांधी जेकेएनसी घोषणापत्र का समर्थन करते हैं, जिसमें दलितों, गुज्जरों, बकरवालों और पहाड़ियों के लिए आरक्षण खत्म करने की बात कही गई है? नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ गठबंधन करने के बाद, उन्हें अब आरक्षण नीति पर कांग्रेस पार्टी का रुख स्पष्ट करना चाहिए। धारा 370 की बहाली और जम्मू-कश्मीर के राज्य के दर्जे के साथ-साथ 2000 में पूर्ववर्ती विधानसभा द्वारा पारित स्वायत्तता प्रस्ताव का कार्यान्वयन नेशनल कॉन्फ्रेंस की आगामी चुनावों के लिए अपने घोषणापत्र में घोषित 12 गारंटियों में से एक है।

पिछड़े वर्गों के उत्थान लिए मोदी सरकार का प्रयास सराहनीय : शिवराज सिहं चौहान

● कृषि मंत्री ने एनडीए सरकार की तारीफ की

भाषा। पटना

भारतीय **जनता पार्टी (भाजपा) के** वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए किए गए प्रयासों को लेकर शुक्रवार को नरेन्द्र मोदी सरकार की तारीफ की तथा कांग्रेस नीत विपक्ष पर इस वर्ग के वास्ते महज जुबानी जमाखर्च करने का आरोप लगाया। कृषि और किसान कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री चौहान स्वतंत्रता सेनानी रामफल मंडल की स्मृति में पार्टी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मंडल को तीन ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या के आरोप में 19 साल की उम्र में फांसी पर चढ़ा दिया गया था। इन अधिकारियों को 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान की गई पुलिस गोलीबारी के लिए जिम्मेदार समझा गया था। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि मंडल धानुक थे और धानुक एक पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) है जिसे मेरे राज्य एवं बिहार में राष्ट्रनिर्माण में योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने कहा, हमारे विरोधी पिछड़े वर्गों के नाम पर केवल दिखावा करते हैं जबकि वर्तमान भाजपा शासन में ही उसे (पिछड़े वर्ग को) उसका हक मिला और इस शासन में एक अति पिछड़ा (अत्यंत पिछड़ा वर्ग) नरेन्द्र मोदी के हाथों में सत्ता की कमान है। उन्होंने कहा, यह मोदी ही हैं जिन्होंने नीट जैसी प्रवेश परीक्षाओं में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण दिया। यही वह सरकार है जिसने राष्ट्रीय ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया। इसकी तुलना कांग्रेस से कीजिए जो कालेलकर आयोग की सिफारिशों पर सोती रही। चौहान का यह बयान राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष द्वारा जातीय जनगणना की जोरदार वकालत करने की पृष्ठभूमि में आया है, जिसका तात्पर्य अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अलावा अन्य सामाजिक समूहों की गणना से है। ऐसी जनगणना आखिरी बार लगभग एक सदी पहले की गई थी।
भाजपा नेता ने कहा, सिर्फ बातें करने से काम नहीं चलेगा। हमें आम लोगों के जीवन में बदलाव लाने की जरूरत है। मोदी सरकार बेघरों के लिए अगले चार साल में 13 लाख घर बनाने के लिए कटिबद्ध है। लखपति दीदी जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं में उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

मनरेगा को कमजोर कर रहे हैं प्रधानमंत्री: राहुल

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) की वर्षगांठ के मौके पर शुक्रवार को आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तमाम आलोचनाओं के बावजूद इस कार्यक्रम पर भरोसा तो कर रहे हैं, लेकिन इसे कमजोर भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार का ऐसा क्रांतिकारी कदम था, जिसने लाखों लोगों को सशक्त बनाया। राहुल गांधी ने फेसबुक पोस्ट में कहा, वर्ष 2005 में आज के दिन जब संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार ने मनरेगा लागू किया, तो हमने भारत के विकास के लिए एक समान और समावेशी दृष्टिकोण की कल्पना की। हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट, सरल और एकल था कि हमें समाज के सबसे गरीबों का उत्थान करना और उन्हें सम्मान का जीवन प्रदान करना है। उनका कहना है कि मनरेगा लोगों को सम्मानजनक बुनियादी न्यूनतम आय की गारंटी देकर सशक्त बनाने का एक क्रांतिकारी कदम था।राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी पहले इस कार्यक्रम की लगातार आलोचना करते थे, लेकिन अब वह खुद ही इस पर भरोसा कर रहे हैं, जबकि दूसरी ओर इसे कमजोर भी कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया, मनरेगा के लिए बजटीय आवंटन को 10 साल के निचले स्तर पर ला दिया गया है। आधार कार्ड और प्रौद्योगिकी की आड़ में सात करोड़ से अधिक श्रमिकों के जॉब कार्ड हटा दिए गए हैं, राज्यों को भुगतान में देरी की गई है, और मजदूरी बेहद निचले स्तर पर रखी गई है।

भारत ने गुरुग्रंथ साहिब की प्रतियां जब्त किए जाने का मुद्दा कतर के समक्ष उठाया

नई दिल्ली। भारत ने शुक्रवार को कहा कि उसने गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतियां जब्त किए जाने का मुद्दा कतर के समक्ष उठाया है और इस मामले को उच्च प्राथमिकता दी जा रही है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, हमने कतर के अधिकारियों द्वारा जब्त किए गए गुरु ग्रंथ साहिब और सिख समुदाय द्वारा उन्हें वापस करने की मांग के बारे में खबरें देखी है। उन्होंने कहा कि सरकार ने कतर के समक्ष पहले ही इस मामले को उठाया है और दोहा स्थित भारतीय दूतावास ने वहां सिख समुदाय को घटनाक्रम से अवगत कराया है।

पैसिव इन्वेस्टमेंट पर जोर

मुंबई। टाटा एसेट मैनेजमेंट कंपनी ने टाटा निफ्टी 200 अल्फा 30 इंडेक्स फंड के लॉन्च की घोषणा की, जिसका उद्देश्य है, निफ्टी 200 इंडेक्स के भीतर उच्च अल्फा वाली शीर्ष 30 कंपनियों के प्रदर्शन को ट्रैक करना। अल्फा फैक्टर आधारित निष्क्रिय निवेश (पैसिव इन्वेस्टमेंट) रणनीति बाजार के रुझानों का लाभ उठाने का प्रयास करती है। यह बाजार की बदलती स्थितियों के अनुसार समायोजित होती है और बेहतर प्रदर्शन करने वाले क्षेत्रों/स्टॉक के कवरेज और वेटेज को बढ़ाती है और खराब प्रदर्शन करने वाले क्षेत्रों/स्टॉक को कम महत्व देती है। टाटा एसेट मैनेजमेंट के चीफ बिजनेस ऑफिसर, आनंद वरदराजन ने इंडेक्स फंड के लॉन्च के मौके पर कहा, इस रणनीति का उद्देश्य है, अल्फा मुहैया कराने वाले शीर्ष 30 शेयरों का चयन कर निफ्टी 200 इंडेक्स के रिटर्न के मुकाबले अतिरिक्त रिटर्न प्राप्त करना।

निप्पॉन इंडिया का इक्वल वेट इंडेक्स फंड लॉन्च

मुंबई। निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फ़ंड के एसेट मैनेजर, निप्पॉन लाइफ़ इंडिया एसेट मैनेजमेंट लिमिटेड ने निप्पॉन इंडिया निफ्टी 500 इक्वल वेट इंडेक्स फ़ंड के लॉन्च की घोषणा की। जो बिल्कुल निफ्टी 500 इक्वल वेट इंडेक्स' की तरह उसकी ट्रैकिंग करने वाली एक ओपन.एंडेड स्कीम है। 21 अगस्त, 2024 को यह खुलेगा और 04 सितंबर 2024 को बंद हो जाएगा। इस दौरान निवेश के लिए आवश्यक न्यूनतम राशि 1000 रुपये है और उसके बाद 1 रुपये के गुणकों में निवेश किया जा सकेगा। निफ्टी 500 इक्वल वेट टीआरआई के आधार पर इस स्कीम के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाएगा। लॉन्च के मौके पर संदीप सिक्का ईडी एवं सीईओए निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फ़ंडए ने कहा कि पैसिव इन्वेस्टमेंट में हमारा ट्रैक रिकॉर्ड बेहद शानदार रहा हैए और इसी को आगे बढ़ते हुए हमने बड़े उत्साह के साथश् निप्पॉन इंडिया निफ्टी 500 इक्वल वेट इंडेक्स फ़ंड को लॉन्च किया है।

हेक्सा सेंसर टेक्नोलॉजी के नए युग की शुरुआत

लखनऊ। भारत के महत्वाकांक्षी प्रीमियम एयर कंडीशनर ब्रांड हिताची कूलिंग एंड हीटिंगके निर्माता जॉनसन कंट्रोल्स हिताची एयर कंडीशनिंग ने अपने नवीनतम नवाचार हेक्सा सेंसर टेक्नोलॉजी का अनावरण किया है। हेक्सा सेंसर तकनीक इंटेलिजेंट कूलिंग समाधानों में एक बड़ी उपलब्धि को दर्शाती है । एयर कंडीशनर तापमान और वातावरण के अनुरूप कैसी प्रतिक्रि या करते हैं, इस तकनीक ने इस क्षेत्र में एक बड़ा क्रांतिकारी बदलाव लाया है ।हेक्सा सेंसर टेक्नोलॉजी छह स्मार्ट सेंसर से लैस है, जिसे रणनीतिक रूप से नवीनतम हिताची एसी श्रृंखला की इनडोर और आउटडोर दोनों इकाइयों में रखा गया है। ये सेंसर लगातार तापमान भिन्नता और महत्वपूर्ण घटकों के कामकाज की निगरानी करते हैं,जिससे माइक्रोकंट्रोलर को वास्तविक समय पर प्रतिक्रिया मिलती है। यह उन्नत प्रणाली सुनिश्चित करती है कि हिताची एसी अत्यधिक गर्मी की स्थिति में भी बेहतर कूलिंग का प्रदर्शन करने के लिए हमेशा तैयार हैं । हेक्सा सेंसर टेक्नोलॉजी में सेंसर लगातार कमरे के तापमान को मापता है और माइक्रोकंट्रोलर को डेटा रिले करता है।

हमारे दल से कोई भी मुख्यमंत्री पद की उम्मीदवारी के लिए इच्छुक नहीं: शरद पवार

भाषा। पुणे

(यूबीटी) द्वारा विपक्षी महाविकास आघाडी (एमवीए) पर मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किए जाने का दबाव बनाए जाने के बीच राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के अध्यक्ष शरदचंद्र पवार ने शुक्रवार को कहा कि उनकी पार्टी का कोई भी नेता मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनने के लिए इच्छुक नहीं है और इसके बजाय उनकी पार्टी राज्य में सरकार बदलने की ओर ध्यान दे रही है।पवार ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव के लिए एमवीए के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे को लेकर 27 अगस्त को बैठक होगी। उन्होंने बताया कि पहले यह बैठक 20 अगस्त को होनी थी, लेकिन ठाणे जिले के बदलापुर में एक स्कूल में दो नाबालिग लड़कियों के साथ हुए कथित यौन शोषण के कारण इसे टाल दिया गया था। शिवसेना (यूबीटी) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे द्वारा विधानसभा चुनाव से पहले एमवीए द्वारा मुख्यमंत्री पद का चेहरा पेश करने पर जोर दिए जाने, जबकि कांग्रेस द्वारा इस मुद्दे पर अलग रुख अपनाने के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए पवार ने कहा, जहां तक मेरी पार्टी का सवाल है तो हमारे किसी भी नेता को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। उन्होंने कहा, "हमारी पार्टी से किसी को भी (मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनने में) दिलचस्पी नहीं है। हम सिर्फ सरकार बदलना चाहते हैं। हम एक ही मंच पर (अन्य एमवीए सहयोगियों के साथ) रहकर राज्य के लोगों को बेहतर प्रशासन देना चाहते हैं। पवार ने चुनाव से पहले कहा कि सभी का ध्यान लोगों को सत्तारूढ़ महायुति के अलावा दूसरा विकल्प प्रदान करने पर होना चाहिए। महायुति में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), शिवसेना और राकांपा शामिल हैं।

जेड प्लस सुरक्षा प्रामाणिक जानकारी हासिल करने का जरिया हो सकती है

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के प्रमुख शरद पवार ने कहा कि उन्हें दी गई जेड प्लस सुरक्षा उनके बारे में प्रामाणिक जानकारी हासिल करने का जरिया हो सकती है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि केंद्र ने पवार को बुधवार को जेड प्लस सुरक्षा प्रदान की। यह अतिविशिष्ट व्यक्ति (वीआईपी) को दी जाने वाली सर्वोच्च श्रेणी की सुरक्षा है। राजनेता (83) ने उनकी सुरक्षा बढ़ाने के बारे में पूछने पर बृहस्पतिवार को नवी मुंबई मे पत्रकारों से कहा कि उन्हें इस कदम के पीछे के मकसद की जानकारी नही है। पवार ने कहा, गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने मुझे बताया कि सरकार ने तीन लोगों को जेड प्लस सुरक्षा देने का फैसला किया है और मै उनमे से एक हूं.. अन्य दो लोग राष्ट्रीय स्वयं सेवक (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह है। उन्होने चुटकी लेते हुए कहा, चुनाव नजदीक आ रहे है,

बाढ़ प्रभावित परिवारों को बांटी राहत सामग्री

शाहजहांपुर। भारत के सबसे बड़े एसएफबीए एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर लखीमपुर और पीलीभीत जिलों में आई विनाशकारी बाढ़ के जवाब में बाढ़ राहत पहल शुरू की। बैंक ने सैकड़ों प्रभावित समुदायों की सहायता करने की पहल की और 8 अगस्त से 17 अगस्त 2024 के बीच किराने की किट वितरण गतिविधि आयोजित की। ताकि जरूरतमंद लोगों तक पहुंच बनाई जा सके। 15 जुलाई 2024 को हुई भारी बारिश के कारण इन जिलों के 15 से अधिक गांवों में बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई। जिससे लगभग 400 लोगों की फसलें बर्बाद हो गईं और कई परिवारों के घर तबाह हो गए। एयू एसएफबी टीम ने शाहजहांपुर, लखीमपुर और पीलीभीत जिलों के बाढ़ प्रभावित परिवारों को 355 सूखे राशन किट वितरित किए। प्रत्येक किट में 5 किलो गेहूं का आटा, 3 किलो चावल 1 किलो खाना पकाने का तेल और 500 ग्राम दाल सहित आवश्यक खाद्य सामग्री थी।

क्विक न्यूज

उच्च न्यायालय ने राजनीतिक दलों या व्यक्तियों को 24 अगस्त को महाराष्ट्र बंद का आह्वान करने से रोका

मुंबई। बंबई उच्च न्यायालय ने राजनीतिक दलो या व्यक्तियो को 24 अगस्त या आगे की किसी तारीख पर प्रस्तावित महाराष्ट्र बंद का आह्वान करने से रोक दिया। विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी (एमवीए) ने ठाणे जिले के बदलापुर के एक स्कूल में दो बच्चियों के साथ कथित यौन उत्पीड़न के विरोध मे 24 अगस्त को पूरे राज्य मे बंद का आह्वान किया है। एमवीए में कांग्रेस, राकांपा (शरदचंद्र पवार) और शिवसेना (यूबीटी) शामिल है। मुख्य न्यायाधीश डी.के. उपाध्याय और न्यायमूर्ति अमित बोरकर की खंडपीठ ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार बंद को रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएगी। उच्च न्यायालय ने कहा, अगले आदेश तक सभी संबंधित पक्षो (राजनीतिक दल या व्यक्तियों) को 24 अगस्त को तथा इससे आगे की किसी तारीख पर बंद का आह्वान करने से रोका जाता है। पीठ ने बंद के आह्वान को चुनौती देने वाली अधिवक्ता सुभाष झा और गुणरत्न सदावर्ते के माध्यम से शुक्रवार को दायर दो याचिकाओ पर यह आदेश पारित किया। पीठ ने जुलाई 2004 में उच्च न्यायालय द्वारा पारित एक फैसले का हवाला दिया, जिसमें उसने कहा था कि बंद या हड़ताल करना असंवैधानिक कृत्य माना जाएगा। वर्ष 2004 के फैसले मे कहा गया था कि ऐसे बंद के मामले मे संबंधित राजनीतिक दल कानूनी कार्वाई के लिए उत्तरदाई होगा और जान-माल या आजीविका के किसी भी नुकसान की भरपाई भी करेगा। फैसले में कहा गया था कि पुलिस ऐसे बंद में शामिल व्यक्ति या व्यक्तियो के खिलाफ उचित कार्वाई करेगी।

धीरेन्द्र शास्त्री ने द डायरी ऑफ़ वेस्ट बंगाल का समर्थन किया

छतरपुर। बहुप्रतीक्षित फिल्म द डायरी ऑफ़ वेस्ट बंगाल की टीम हाल ही में छतरपुर में श्री धीरेन्द्र शास्त्री का आशीर्वाद लेने के लिए बाघेश्वर धाम पहुंची। इस दौरान श्री शास्त्री जी ने वसीम रिजवी (अब जितेंद्र नारायण सिंह) और फिल्म की टीम का स्वागत किया और वसीम रिजवी के हिंदू धर्म में परिवर्तित होने की सराहना की। शास्त्री जी ने गर्व से अपने अनुयायियों से कहा, फ्रवसीम रिजवी अब हनुमान भक्त हैं और उनका नया नाम, जितेंद्र शुक्ला, 'हरि' से जुड़ा है, जो साहस और ईमानदारी का प्रतीक है।श्री शास्त्री ने अपने संबोधन में, विशेषकर बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल के हिंदुओं के लिए, चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने के महत्व पर जोर दिया। फ्रद डायरी ऑफ़ वेस्ट बंगाल ने उन लोगों की पीड़ा को दिखाया है जिन्होंने कष्ट झेले हैं, उन्हें भागने से रोकने और बहादुरी से इन चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित किया है, शास्त्री जी ने कहा। शास्त्री जी, जो अपने आध्यात्मिक नेतृत्व और प्रभाव के लिए जाने जाते हैं, ने स्पष्ट किया कि वह आम तौर पर फिल्मों का प्रचार नहीं करते हैं। हालांकि, इस बार उन्होंने पूरी तरह से अपना समर्थन देने का फैसला किया। यह पहली बार है जब मैंने किसी फिल्म के विषय पर इतना गहरा विश्वास किया है कि मैं चाहता हूं कि यह फिल्म दुनिया तक पहुंचे। यह सिर्फ एक फिल्म नहीं है, यह एक मिशन है।उन्होंने फिल्म की सराहना जारी रखी और रोहिंग्या संकट, प्रेम जिहाद और महिलाओं के खिलाफ होने वाले अत्याचारों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों के अन्वेषण को उजागर किया। यह फिल्म, जो जितेंद्र नारायण सिंह (वसीम रिजवी) द्वारा निर्मित और सनोय मिश्रा द्वारा निर्देशित है, 30 अगस्त 2024 को सिनेमाघरों में आने वाली है। अरशिन मेहता और यजुर मरवाह जैसे स्टार कास्ट के साथ, फिल्म ने वर्षों से क्षेत्र को परेशान करने वाले सांप्रदायिक तनावों में गहराई से प्रवेश किया है, दर्शकों को शांति और एकता के मार्ग पर चिंतन करने के लिए प्रेरित किया है।

रांची रैली में पुलिस से भिड़े भाजयुमो कार्यकर्ता, कई घायल

रांची। झारखंड पुलिस ने शुक्रवार को भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) के कार्यकर्ताओं को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े, पानी की बौछारे की और रबर की गोलियां चलाईं। भाजयुमो कार्यकर्ताओ ने राज्य की हेमंत सोरेन सरकार द्वारा किए गए" अन्याय और चुनावी वादों को पूरा करने में नाकामी" के खिलाफ यहां आयोजित एक रैली के दौरान बैरिकेड तोड़ दिए। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि रैली मे शामिल प्रदर्शनकारियो ने विरोध कार्यक्रम स्थल मोरहाबादी मैदान के पास स्थित मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के आवास की ओर बढ़ने की कोशिश की, जिसके बाद लाठीचार्ज किया गया। भाजयुमो कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच झड़प हुई और दोनो पक्षो ने दावा किया कि इस झड़प मे कई प्रदर्शनकारी और पुलिसकर्मी घायल हो गए। रांची के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) चंदन कुमार सिन्हा ने कहा कि भाजपा और भाजयुमो कार्यकर्ताओ द्वारा किए गए पथराव मे कई पुलिसकर्मी घायल हो गए। सिन्हा ने कहा," उन्होंने मुख्यमंत्री आवास की ओर जाने के लिए बैरिकेड तोड़ दिए और उनके नेताओ ने उन्हे उकसाया। उनके पास केवल बैठक की अनुमति थी, रैली की नही और उन्होने निषेधाज्ञा का उल्लंघन किया।

जन्माष्टमी की तैयारी में जुटे टीवी के कलाकार

मुंबई। भगवान कृष्ण के जन्म से जुड़ा उमंग और खुशियों से भरा त्यौहार जन्माष्टमी हर साल पूरे देश में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। हर साल लाखों लोग पूरी से साथ यह पर्व मनाते हैं। जन्माष्टमी को भक्ति और उल्लास के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है, जो हिंदू संस्कृति की समृद्ध झलकियां दिखाते हैं। आम लोगों की तरह फिल्मी लोग भी इस त्योहार को पूरी श्रद्धा से मनाते हैं। भाग्य लक्ष्मी की ऐश्वर्या खरे, कुमकुम भाग्य के कृष्णा कौल, प्यार का पहला नाम राधा मोहन की निहारिका रॉय और कुंडली भाग्य की अद्रिजा रॉय जैसे टी टीवी के कलाकारों ने इस त्यौहार की अपनी सबसे प्यारी यादें साझा कीं। जी टीवी के शो भाग्य लक्ष्मी में लक्ष्मी का रोल निभा रहीं ऐश्वर्या खरे ने कहा, ''जन्माष्टमी मेरे दिल में एक खास जगह रखती है क्योंकि यह भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव है और मैं उनमें बहुत आस्था रखती हूं। मुंबई में, यह त्यौहार बड़े पैमाने पर मनाया जाता है और मुझे गलियों में घूमना और सभी को दही हांडी फोड़ते हुए देखना बहुत अच्छा लगता है। जी टीवी के कुमकुम भाग्य में रणबीर के रोल में नजर आ रहे कृष्णा कौल ने कहा, ''मेरा मानना है कि जन्माष्टमी हर साल जीवन में अपार आनंद और खुशियां भर देती है। मैं भगवान कृष्ण की शिक्षाओं को बहुत महत्व देता हूं, क्योंकि वे एक गहरी आध्यात्मिक जागृति प्रदान करते हैं और मुझे भगवान की कृपा की याद दिलाते हैं । कुंडली भाग्य में पलकी का रोल निभा रहीं अद्रिजा रॉय ने कहा, ''जन्माष्टमी एक बहुत ही सुंदर त्यौहार है, और इसे जिस तरह से मनाया जाता है, वो इस त्यौहार की सबसे अच्छी बात यह है। भले ही आप इस दिन व्रत न रखें या मंदिर न जाएं, फिर भी यह त्यौहार आपसे मिलने का अपना तरीका रखता है।

ड्यूरोप्लाई ने दिखाई 68 साल की विरासत

नई दिल्ली। ड्यूरोप्लाई ने 68वें साल में मटेशिया 2024 में घर के इंटीरियर को सुंदर बनाने वाले उत्पादों का प्रदर्शन करने के लिए तैयार है। ड्यूरोप्लाई अपनी पूरी उत्पाद श्रृंखला, जिसमें प्लाईवुड, वीनियर, दरवाजे और ब्लॉकबोर्ड शामिल हैं, के साथ ग्राहक केंद्रित नवाचार और अपनी मशहूर विरासत को दिखा रहा है। मटेशिया भारत की सबसे बड़ी भवन निर्माण सामग्री प्रदर्शनी है, जो 22-25 अगस्त, 2024 को यशोभूमि (आईआईसीसी), द्वारका, नई दिल्ली में हो रही है। यह प्रदर्शनी भवन निर्माण सामग्री उद्योग के सभी हितधारकों को एक साथ लाती है। ड्यूरोप्लाई के उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के कारण, इसका पैवेलियन सबसे अधिक पसंद किया जाता है, जहाँ प्रमुख आर्किटेक्ट, इंटीरियर डिजाइनर, बिल्डर्स और चैनल पार्टनर इसे देखने आते हैं। ड्यूरोप्लाई के एमडी और सीईओ, अखिलेश चितलांगिया ने कहा, हमें गर्व है कि हम 68 साल की अपनी विरासत को दिखा रहे हैं, जो घर के इंटीरियर को सुंदर बनाने से जुड़ी है। शिल्प कौशल और ग्राहक-केंद्रित समाधानों के प्रति हमारे समर्पण के रूप में, हमारा मंडप असली प्रोडक्ट्स को प्रदर्शित करता है, ताकि आगंतुक हमारी इनोवेशन आधारित गुणवत्ता को महसूस कर सकें।

लापता विमान की खोज में फिर जुटी भारतीय नौसेना की टीम

जमशेदपुर। झारखंड के जमशेदपुर से उड़ान भरने के बाद लापता हुए प्रशिक्षण विमान की तलाश के लिए भारतीय नौसेना की टीम ने शुक्रवार को फिर से अभियान शुरू कर दिया है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।उन्होंने बताया कि खराब मौसम के कारण बृहस्पतिवार शाम छह बजे खोज अभियान रोक दिया था।विमान सवार प्रशिक्षु पायलट और उसके प्रशिक्षक के शव बृहस्पतिवार को चांडिल बांध में मिले। अधिकारी ने बताया, सरायकेला-खरसावां जिला प्रशासन के अनुरोध पर विशाखापत्तनम से आई भारतीय नौसेना की 19 सदस्यीय टीम ने लापता प्रशिक्षक विमान का पता लगाने के लिए तलाश अभियान फिर से शुरू कर दिया है। खराब मौसम के कारण हमें बृहस्पतिवार शाम छह बजे तलाश अभियान रोकना पड़ा था। यह दो सीटों वाला सेसना-152 विमान है। यह एक निजी विमानन कंपनी का प्रशिक्षण विमान है।अधिकारी ने बताया कि प्रशिक्षु पायलट शुभ्रोदीप दत्ता और पायलट-इन-कमांड कैप्टन जीत सतरू आनंद के शवों का पोस्टमार्टम महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल जमशेदपुर में किया जाएगा। दत्ता आदित्यपुर निवासी थे। मंगलवार को सोनारी हवाई अड्डे से उड़ान भरने के बाद विमान लापता हो गया था।

दक्षिणपंथी का वामपंथी को समर्थन

● एबीवीपी ने पीएसएफ पर प्रतिबंध लगाने के फैसले की निंदा की

भाषा। मुंबई

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से संबद्ध अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) ने टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान में अपने वैचारिक प्रतिद्वंद्वी प्रोग्रेसिव स्टूडेंट्स फोरम (पीएसएफ) के पक्ष में आवाज उठाई और कहा कि वामपंथी संगठन पीएसएफ को प्रतिबंधित करने का संस्थान का फैसला तर्कहीन है। एबीवीपी ने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक गतिविधियों का गढ़ होना चाहिए। एबीवीपी ने बृहस्पतिवार को कहा कि छात्र समूह पीएसएफ पर अचानक और तर्कहीन प्रतिबंध लगाने से ऐसे संगठनों में काफी अशांति पैदा होने का खतरा है। एबीवीपी ने कहा कि इस तरह के कदम से भविष्य में होने वाले छात्र परिषद चुनावों की शुचिता पर गंभीर असर पड़ सकता है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया की आधारशिला हैं। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन आने वाले प्रमुख संस्थान टीआईएसएस ने पीएसएफ पर 19 अगस्त को प्रतिबंध लगाते हुए कहा था कि यह संगठन ऐसी गतिविधियों में शामिल रहा है जो संस्थान के कामकाज में बाधा डालती हैं और इसकी छवि खराब करती हैं। एबीवीपी ने कहा कि उसका दृढ़ता से यह मानना है कि शैक्षणिक संस्थानों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक गतिविधियों का गढ़ होना चाहिए। उसने कहा कि छात्र समुदाय के विविध विचारों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न छात्र संगठनों की उपस्थिति आवश्यक है। टीआईएसएस में छात्र संगठनों पर अचानक और अनुचित प्रतिबंध इन सिद्धांतों पर सीधा हमला है।

अदालतें आपराधिक विश्वासघात और धोखाधड़ी में अंतर को नहीं समझतीं: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि यह बहुत दुखद है कि अदालतें आपराधिक विश्वासघात और धोखाधड़ी में महीन अंतर को समझने में सक्षम नहीं हैं जबकि यह दंड कानून 162 सालों से अधिक समय से प्रभावी है। शीर्ष अदालत ने कहा कि दुर्भाग्य से पुलिस के लिए यह एक आम चलन है कि किसी तरह की बेईमानी या धोखाधड़ी के केवल आरोप पर दोनों अपराधों के लिए बिना किसी उचित समझ-बूझ के नियमित और यंत्रवत प्राथमिकी दर्ज की जाती है। न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि अब समय आ गया है कि देशभर के पुलिस अधिकारियों को कानून का उचित प्रशिक्षण दिया जाए ताकि धोखाधड़ी और आपराधिक विश्वासघात के अपराधों के बीच के बारीक अंतर को समझा जा सके। पीठ ने कहा, दोनों अपराध स्वतंत्र और अलग हैं। दोनों अपराध एक तरह के तथ्यों की स्थिति में साथ-साथ नहीं हो सकते। वे एक-दूसरे के विपरीत हैं। शीर्ष अदालत की टिप्पणियां एक फैसले में आईं जिसमें इस साल अप्रैल में पारित इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक आदेश को रद्द कर दिया गया था। उच्च न्यायालय ने दिल्ली रेस क्लब (1940) लिमिटेड और अन्य के खिलाफ एक शिकायत के मामले में उत्तर प्रदेश की एक निचली अदालत द्वारा दिए गए समन के आदेश को रद्द करने से इनकार कर दिया था। पीठ ने कहा, आपराधिक विश्वासघात और धोखाधड़ी के बीच अंतर है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति ने 2024 के पुरस्कारों की घोषणा

प्रभु को 'ड्रोन पत्रकारिता' पुस्तक हेतु विशेष सम्मान

बिकानेर। भाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ ने हिन्दी-राजस्थानी साहित्य सृजन हेतु दिए जाने वाले राष्ट्रीय पुरस्कारों की घोषणा कर दी है । संस्थाध्यक्ष श्याम महर्षि और उपाध्यक्ष बजरंग शर्मा के अनुसार वर्ष 2024 का संस्था का सर्वोच्च व प्रतिष्ठित मलाराम माली स्मृति साहित्यश्री सम्मान अजमेर के प्रख्यात उपन्यासकार-कथाकार प्रफुल्ल प्रभाकर को उनके समग्र साहित्यिक अवदान के लिए प्रदान किया जाएगा। घोषित पुरस्कारों की जानकारी साझा करते हुए संस्था के मंत्री और पुरस्कार समिति के संयोजक रवि पुरोहित ने बताया कि इस बार देश-भर से प्रविष्टियां व प्रस्ताव प्राप्त हुए। डॉ. नंदलाल महर्षि स्मृति हिन्दी सृजन पुरस्कार जयपुर के उपन्यासकार, कथाकार प्रबोध कुमार गोविल को वर्ष 2023 में किताबगंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी से प्रकाशित उपन्यास टापुओं पर पिकनिक को अर्पित किया जाएगा। शिवप्रसाद सिखवाल स्मृति महिला लेखन पुरस्कार दिल्ली की ख्यातनांव साहित्यकारा रिंकल शर्मा की वर्ष 2023 में अद्विक पब्लिकेशन प्रा.लि., दिल्ली से प्रकाशित नाट्य कृति 'बुरे फंसे' को और श्याम सुन्दर नागला स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार दिल्ली की वरिष्ठ बाल साहित्यकार सुमन बाजपेयी को फ्लाई ड्रिम्स पब्लिकेशन, जैसलमेर से 2023 में प्रकाशित उनकी प्रसिद्ध बाल उपन्यास कृति 'तारा की अनोखी यात्रा' के लिए घोषित किये गये हैं। लखनऊ के वरिष्ठ मीडिया समीक्षक प्रभु झिंगरन को पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी से वर्ष 2022 में प्रकाशित उनकी कृति 'ड्रोन पत्रकारिता' के लिए प्रदान किया जाएगा।

इंदौर में रिजॉर्ट के निर्माणाधीन कॉटेज की छत गिरने से ठेकेदार और चार मजदूरों की मौत

भाषा। इंदौर

मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में तेज बारिश के बाद शुक्रवार को एक रिजॉर्ट के निर्माणाधीन कॉटेज की छत का स्लैब गिरने के कारण मलबे में दबने से एक ठेकेदार और चार मजदूरों की मौत हो गई। मृतकों में दो सगे भाई शामिल हैं। पुलिस अधिकारियों ने यह जानकारी दी। राज्य के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हादसे पर शोक जताते हुए पांचों मृतकों के शोक में डूबे परिजनों को दो-दो लाख रुपए की सहायता राशि देने की घोषणा की है। मौके पर पहुंचीं पुलिस अधीक्षक हितिका वासल ने संवाददाताओं को बताया कि जिला मुख्यालय से करीब 40 किलोमीटर दूर चोरल क्षेत्र में एक निर्माण कार्य के दौरान हाल ही में सीमेंट-कंक्रीट की छत की स्लैब भरी गई थी और वहां काम कर रहे पांच लोग इसके नीचे सो गए थे। उन्होंने बताया, जब चौकीदार शुक्रवार की सुबह मौके पर पहुंचा, तो उसने पुलिस को छत की स्लैब के मलबे में इन लोगों के दबे होने की सूचना दी। वासल ने बताया कि पुलिस, प्रशासन और राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के संयुक्त दल के बचाव कार्य के दौरान मलबे में पांच लोग मृत हालत में पाए गए। उन्होंने कहा कि फिलहाल यह नहीं बताया जा सकता कि हादसा किस समय हुआ क्योंकि रात में घटनास्थल पर इन लोगों के अलावा कोई और व्यक्ति मौजूद नहीं था।

राष्ट्रपति मुर्मू ने अंतरिक्ष में बढ़ते मलबे पर चिंता व्यक्त की

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कक्षा में अनेक उपग्रहों के स्थापित होने के कारण बढ़ते मलबे पर चिंता व्यक्त की और 2030 तक भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों को मलबा मुक्त बनाने का लक्ष्य तय करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की सराहना की। मुर्मू भारत के चंद्रयान-3 के चांद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में उतरने की पहली वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह को संबोधित कर रही थीं। राष्ट्रपति ने यहां भारत मंडपम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कहा, अंतरिक्ष का मलबा अंतरिक्ष अभियानों के लिए समस्या उत्पन्न कर सकता है। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह, इसरो के अध्यक्ष एस. सोमनाथ, संगठन के इंजीनियर, वैज्ञानिक और देश के अंतरिक्ष उद्योग के प्रतिनिधि शामिल हुए। राष्ट्रपति ने इसरो की सुरक्षित एवं सतत संचालन प्रबंधन सुविधा की सराहना की, जो अंतरिक्ष अनुसंधान गतिविधियों की निरंतर प्रगति सुनिश्चित करती है। मुर्मू ने कहा, मुझे यह जानकर भी खुशी हो रही है कि भारत 2030 तक अपने सभी अंतरिक्ष अभियानों को मलबा मुक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर रोबोटिक्स चैलेंज और भारतीय अंतरिक्ष हैकाथॉन के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

भारत-अमेरिका वैश्विक शांति सुनिश्चित कर सकते हैं : राजनाथ

भाषा। वाशिंगटन

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि भारत और अमेरिका मिलकर विश्व में शांति, समृद्धि और स्थिरता को सुनिश्चित कर सकते हैं। अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान सिंह ने भारतीय समुदाय से संवाद के दौरान कहा कि भारत और अमेरिका स्वाभाविक सहयोगी एवं मजबूत साझेदार हैं और यह सहयोग लगातार बढ़ रहा है। रक्षा मंत्री ने कहा, भारत और अमेरिका दो ताकतें हैं जो विश्व में शांति, समृद्धि और स्थिरता ला सकती हैं। चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर बृहस्पतिवार को यहां पहुंचे सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वैश्विक मंच पर भारत का कद बढ़ा है। उन्होंने कहा, पहले अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता था, लेकिन आज पूरी दुनिया ध्यान से भारत को सुनती है। रक्षा मंत्री ने दावा किया कि 2014 से पहले निवेश कंपनी मॉर्गन स्टेनली ने भारत को पांच कमजोर अर्थव्यवस्था वाले देशों में शुमार किया था लेकिन आज यह खुद को दुनिया की शानदार पांच अर्थव्यवस्थाओं में पाता है। उन्होंने कंपनी की हालिया रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि भारत 2027 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। सिंह ने जोर देकर कहा कि कोविड-19 महामारी से निपटने में सरकार के कदमों से अन्य देशों की तुलना में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। सिंह ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि सरकार ने 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, खुदरा मुद्रास्फीति पांच साल के निचले स्तर 3.54 प्रतिशत पर आ गई है और विदेशी मुद्रा भंडार करीब 675 अरब अमेरिकी डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है।

भारत, अमेरिका ने दो अहम समझौतों पर हस्ताक्षर किए

वाशिंगटन। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की वाशिंगटन की आधिकारिक यात्रा के दौरान भारत और अमेरिका ने दो प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। सिंह दोनों देशों के बीच व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और बढ़ावा देने के लिए अमेरिका की यात्रा पर पहुंचे हैं। बृहस्पतिवार को हस्ताक्षरित ए समझौते सुरक्षा व्यवस्था आपूर्ति (एसओएसए) और संपर्क अधिकारियों की नियुक्ति के संबंध में समझौता ज्ञापन से संबंधित हैं। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को एक्स पर एक पोस्ट में इस कार्यक्रम की कुछ तस्वीरें साझा करते हुए कहा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अमेरिका यात्रा के दौरान वाशिंगटन में दो महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों पक्षों के वरिष्ठ रक्षा अधिकारियों ने सुरक्षा व्यवस्था आपूर्ति (एसओएसए) और संपर्क अधिकारियों की नियुक्ति के संबंध में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। सिंह बृहस्पतिवार को अमेरिका की चार दिवसीय यात्रा पर यहां पहुंचे। अमेरिका के रक्षा विभाग ने एक बयान में कहा कि एसओएसए समझौते के जरिए अमेरिका और भारत, राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए पारस्परिक प्राथमिकता समर्थन प्रदान करने पर सहमत हैं।

यूक्रेन का दावाः खारकीव में रूस के कब्जे वाले कुछ क्षेत्रों को वापस लिया गया

भाषा। कीव

यूक्रेनी सेना का कहना है कि उन्होंने खारकीव के पूर्वी क्षेत्र में पुनः कब्जा कर लिया है, जहां रूस ने वसंत के मौसम में एक बड़ा आक्रमण शुरू किया था। यूक्रेन की तीसरी पृथक आक्रमण ब्रिगेड ने बृहस्पतिवार देर रात एक बयान में कहा कि उसके सैनिक उस क्षेत्र में लगभग दो वर्ग किलोमीटर तक आगे बढ़ गए हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि हमला कब किया गया, इसका पैमाना क्या था, तथा आक्रमण का क्षेत्र क्या था। यह अनुमान लगाना कठिन है कि इसका युद्धक्षेत्र पर और अधिक प्रभाव पड़ेगा या नहीं। यूक्रेन द्वारा खारकीव क्षेत्र में कथित जवाबी हमला ऐसे समय में किया गया है, जब उसकी सेनाओं ने इस महीने नई गति प्राप्त कर ली है तथा युद्ध के मैदान में बदलाव किया है। कीव ने छह अगस्त को रूस के पश्चिमी कुर्स्क क्षेत्र में एक आक्रामक हमला किया, साथ ही सैन्य और ईंधन लक्ष्यों के खिलाफ ड्रोन युद्ध को तेज कर दिया। इन हमलों में रूस को बड़े नुकसान का दावा किया गया। शुक्रवार को इन हमलों से हुए नुकसान और घायलों के बारे में कुछ नए विवरण सामने आए। एसोसिएटेड प्रेस द्वारा शुक्रवार को विश्लेषण की गई उपग्रह तस्वीरों से पता चला है कि वोल्गोग्राद क्षेत्र में सुदूर रूसी हवाई अड्डे को निशाना बनाकर किए गए यूक्रेनी ड्रोन हमले में वहां काफी नुकसान पहुंचा है। इस हवाईअड्डे पर कथित तौर पर युद्ध में मॉस्को द्वारा इस्तेमाल किए गए।

अमेरिका 12.5 करोड़ डॉलर की नई सैन्य सहायता यूक्रेन को भेज रहा

वाशिंगटन। राष्ट्रपति जो बाइडन का प्रशासन यूक्रेन को लगभग 12.5 करोड़ अमेरिकी डालर की नई सैन्य सहायता भेजेगा। अमेरिकी अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि सहायता के नवीनतम पैकेज में वायु रक्षा मिसाइलें, हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम (एचआईएमएआरएस), जैवलिन और बख्तरबंद रोधी मिसाइलें, काउंटर-ड्रोन और काउंटर-इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों और उपकरणों, 155 मिमी और 105 मिमी तोपों के गोला-बारूद, वाहन और अन्य उपकरण शामिल हैं।

बांग्लादेशः पूर्व जनरल सुरक्षा मामलों के लिए विशेष सहायक नियुक्त

ढाका। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने शुक्रवार को सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल अब्दुल हाफिज को सुरक्षा मामलों पर अपना विशेष सहायक नियुक्त किया, जिनका दर्जा सलाहकार या मंत्री के बराबर होगा। एक अधिसूचना में कहा गया है, वह (हाफिज) अंतरिम सरकार के प्रमुख (यूनुस) को सुरक्षा और राष्ट्रीय सुलह से संबंधित मामलों में अपनी सहायता प्रदान करेंगे। अधिकारियों ने बताया कि पूर्व जनरल हाफिज (67) पैदल सेना कोर से जुड़े रहे हैं।

राष्ट्रपति बाइडन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार को चीन दौरे पर भेज सकते हैं

कैलिफोर्निया। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन को चीन के दौरे पर भेज सकते है। सूत्रों ने यह जानकारी दी है। व्हाइट हाउस द्वारा विदेश नीति को लेकर यह कदम ऐसे समय में सामने आया है, जब राष्ट्रपति बाइडन का कार्यकाल समाप्त होने में कुछ ही महीने बाकी हैं। सूत्रों ने बताया कि सुलिवन की अपने चीनी समकक्ष वांग ई से अगले सप्ताह मुलाकात होने की संभावना है। सूत्रों ने बताया कि व्हाइट हाउस जल्द ही इस यात्रा के संबंध मे घोषणा करेगा। सुलिवन ने कई बार चीनी अधिकारियों से मुलाकात की है, ताकि दोनों आर्थिक प्रतिद्वंद्वियों के जटिल संबंधो पर चर्चा की जा सके, लेकिन यह उनकी पहली चीन यात्रा होगी।

संभावित खतरे के कारण जर्मनी में नाटो के एयर बेस पर सुरक्षा बढ़ाई गई

बर्लिन। पश्चिम जर्मनी में उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के एयर बेस पर संभावित खतरे की खुफिया सूचना के मद्देनजर इसकी सुरक्षा बढ़ा दी गई है और मिशन के लिए गैर-जरूरी सभी कर्मचारियो को एहतियात के तौर पर घर भेज दिया गया है। नाटो ने यह जानकारी दी है। नीदरलैंड की सीमा के पास गिलेनकिर्चेन एयर बेस वह जगह है, जहां नाटो के एयरबोर्न वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम (अवाक्स) विमान हैं। सोशल मीडिया मंच एक्स पर नाटो अवाक्स बेड़े के हैंडल से बृहस्पतिवार को जारी एक पोस्ट मे कहा गया है, हमने सुरक्षा स्तर बढ़ा दिया है। हालांकि संभावित खतरे की प्रकृति के बारे मे विस्तार से नही बताया गया। । इसमें कहा गया कि ऑपरेशन योजना के अनुसार जारी है। गिलेनकिर्चेन बेस ने शुक्रवार को कहा कि उसके पास इसके अलावा जानकारी उपलब्ध कराने के लिए कुछ नही है और फिलहाल स्थिति मे कोई बदलाव नही हुआ है। जर्मन समाचार एजेंसी डीपीए ने कहा कि एक रिपोर्टर ने एयर बेस के मैदान पर पुलिस की गाड़ियां देखी। पुलिस ने बृहस्पतिवार रात को तैनाती की पुष्टि की, लेकिन कोई अतिरिक्त विवरण नही दिया। पिछले हफ्ते, कोलोन के पास स्थित एक प्रमुख जर्मन वायुसेना बेस को इस आशंका के बीच कई घंटो तक बंद रखा गया था कि संभवतः इसकी जलापूर्ति में छेड़छाड़ की गई है

म्यांमा में सेना की छापेमारी के दौरान दो स्वतंत्र पत्रकारों की हत्या की गई

बैंकॉक। म्यांमा मे दो स्वतंत्र पत्रकारों की हत्या कर दी गई है। मारे गए पत्रकारों के साथियों और मीडिया से यह जानकारी मिली है। एक पत्रकार की हत्या दक्षिणी राज्य मोन में स्थित घर पर सुरक्षा बलों के छापा मारने के बाद कथित तौर पर बंधक बनाए जाने के दौरान हुई। मृतक पत्रकारों की पहचान डेमोक्रेटिक वॉइस ऑफ बर्मा (डीवीबी) के लिए स्वतंत्र रूप से काम करने वाले विन ह्तूत (26) और ह्तेत म्यात तू (28) के रूप में हुई है। फरवरी 2021 में आंग सान सू ची की निर्वाचित सरकार का तख्तापलट करके सत्ता पर काबिज होने वाली सेना के सुरक्षा बलों के हाथों पत्रकारों की हत्या का यह सबसे ताजा मामला है।

प्रधानमंत्री की गले लगाने की कूटनीति हमारी संस्कृति का हिस्सा : जयशंकर

भाषा। कीव

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को यहां यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से मुलाकात के दौरान पहले उनसे हाथ मिलाया और फिर तुरंत उन्हें गर्मजोशी से गले लगा लिया। इस पर विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि गले लगाना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। युद्धग्रस्त देश के शीर्ष नेता को गले लगाने के बमुश्किल छह सप्ताह पहले मोदी ने यूक्रेन के कट्टर दुश्मन रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को इसी तरह गले लगाया था।मोदी-जेलेंस्की वार्ता के बाद मीडिया से बातचीत के दौरान विदेश मंत्री एस. जयशंकर से गले मिलने के बारे में सवाल पूछा गया था। इस सवाल का उद्देश्य पहले पुतिन और अब जेलेंस्की के साथ मोदी की मुलाकात के बीच संबंधों पर प्रतिक्रिया मांगना था। जयशंकर ने एक पश्चिमी पत्रकार के एक विशिष्ट प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, दुनिया के हमारे हिस्से में जब लोग मिलते हैं, तो वे एक-दूसरे को गले लगाते हैं, यह आपकी संस्कृति का हिस्सा नहीं हो सकता है, लेकिन मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। वास्तव में आज, मुझे लगता है, मैंने देखा, प्रधानमंत्री (मोदी) ने भी राष्ट्रपति जेलेंस्की को गले लगाया। पत्रकार ने अपने सवाल में कहा था कि कुछ सप्ताह पहले मोदी द्वारा पुतिन को गले लगाने के बारे में इसी तरह उल्लेख किया गया था। जयशंकर ने कहा, मैंने उन्हें कई अन्य स्थानों पर कई अन्य नेताओं के साथ ऐसा करते देखा है।

श्रीलंकाः राष्ट्रपति पद के चुनाव के उम्मीदवार का निधन

कोलंबो। श्रीलंका में अगले महीने की 21 तारीख को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में किस्मत आजमा रहे 39 उम्मीदवारों में से एक उम्मीदवार का निधन हो गया है। उनके परिवार ने शुक्रवार को बताया कि उत्तर-पश्चिमी पुत्तलम जिले के 79 वर्षीय निर्दलीय उम्मीदवार इदरीस मोहम्मद इलियास को बृहस्पतिवार की रात दिल का दौरा पड़ने पर अस्पताल ले जाया गया लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। उन्होंने 1990 के दशक में द्वीपीय देश के उत्तरी जिले जाफना की नौ प्रतिशत मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी का संसद में प्रतिनिधित्व किया था। इलियास का नाम और उनके चुनावी चिन्ह इंजेक्शन सीरिंज को रिकॉर्ड 39 उम्मीदवारों के नाम वाले मतपत्र में शीर्ष से चौथे स्थान पर रखा गया था।

विचक न्यूज

बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शन के दौरान शाकिब अल हसन के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया गया

नई दिल्ली। बांग्लादेश के स्टार आल राउंडर शाकिब अल हसन को हाल में बांग्लादेश में हुए विरोध प्रदर्शन और हिंसा के दौरान कथित हत्या के मामले में एक आरोपी के तौर पर दर्ज किया गया है। इस हिंसा के दौरान सैकड़ों लोग मारे गए थे। ईएसपीएनक्रिकइन्फो के अनुसार शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार में पूर्व सांसद और 37 वर्षीय बांग्लादेश के पूर्व कप्तान शाकिब अल हसन उन 147 लोगों में शामिल है जिनके खिलाफ अगस्त के शुरू में विरोध प्रदर्शनों के दौरान कथित हत्या के लिए आरोप दायर किए गए हैं। शेख हसीना को इस्तीफा देने और देश छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार के रूप में कार्यभार संभाला। हत्या का मामला रुबैकुल इस्लाम ने ढाका के अदबोर पुलिस स्टेशन में दर्ज कराया था और शाकिब के अलावा, प्रधानमंत्री शेख हसीना और पार्टी के कई पूर्व मंत्री और सांसद आरोपियों में शामिल हैं। इस्लाम के बेटे रूबेल की सात अगस्त को विरोध प्रदर्शन के दौरान हत्या कर दी गई थी जिसके बाद देश में राजनीतिक उथल-पुथल शुरू हो गई थी। शाकिब प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) में 27वें या 28वें आरोपी है। वह पांच अगस्त को या विरोध प्रदर्शन के दौरान किसी भी समय बांग्लादेश में नही थे।

पाकिस्तानः पुलिस वैन पर रॉकेट हमले में मृतक संख्या बढ़कर 12 हुई

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत मे डकैतो द्वारा पुलिस वैन पर रॉकेट हमले में एक जख्मी अधिकारी की अस्पताल मे मौत के बाद घटना मे मरने वालों की संख्या शुक्रवार को बढ़कर 12 हो गई।लाहौर से लगभग 400 किलोमीटर दूर रहीम यार खान जिले के कच्चा इलाके मे स्थित एक पुलिस शिविर से बृहस्पतिवार शाम करीब 22 पुलिसकर्मियो को लेकर दो वाहन वापस आ रहे थे, तभी माचा प्वाइंट पर कीचड़ भरी सड़क पर उनकी वैन फंस गई। डकैतो का एक समूह वहां पहुंचा और पुलिस टीम पर रॉकेट से हमला किया और गोलीबारी भी की। पुलिस ने बताया कि हमले मे कम से कम 11 पुलिसकर्मी मौके पर ही मारे गए, जबकि उनमें से कुछ को बंधक बना लिया गया और बाकी जख्मी हो गए। पंजाब पुलिस के प्रवक्ता ने बताया, शुक्रवार को एक और पुलिसकर्मी की मौत हो गई, जिससे इस घटना मे मरने वालो की संख्या 12 हो गई। उन्होने कहा कि पुलिस की एक बड़ी टुकड़ी ने रहीम यार खान के उन इलाको में अभियान चलाया है, जहां अपराधी छिपे हुए थे। प्रवक्ता ने कहा, पुलिस ने आज मुख्य संदिग्ध बशीर शार को मार गिराया, जो 12 पुलिसकर्मियो की हत्या के लिए जिम्मेदार था। पांच अपराधी जख्मी भी हुए है। पंजाब प्रांत की पुलिस ने एक्स पर एक पोस्ट मे कहा, पंजाब पुलिस ने कच्चा इलाके मे आतंकवादियो के हमले की प्रतिक्रिया मे कार्वाई की। कल पुलिसकर्मियो पर हमला करने वाले मुख्य संदिग्ध बशीर शार को ढेर कर दिया गया है। पंजाब की मुख्यमंत्री मरयम नवाज़ ने कहा कि प्रांत के नदी के तटीय क्षेत्रो मे पुलिस का अभियान अंतिम अपराधी के खात्मे तक जारी रहेगा।

कोलकाता बलात्कार-हत्या मामलाः ब्रिटेन में भारतीयों छात्रों, प्रवासी संगठनों ने विरोध मार्च निकाला

लंदन। ब्रिटेन मे भारतीय छात्रों, धर्मार्थ संस्थाओं और प्रवासी संगठनो ने कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल मे कार्यरत एक महिला चिकित्सक के साथ कथित बलात्कार और हत्या की घटना के खिलाफ प्रदर्शन किया और न्याय की मांग की।महिला संगठनो ने लंदन के पार्लियामेंट स्क्वायर और ब्रिटेन के कई अन्य शहरो मे बृहस्पतिवार को महात्मा गांधी की प्रतिमा के निकट शांति मार्च आयोजित किया तो वही स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया -यूनाइटेड किंगडम (एसएफआई-यूके) ने बुधवार को लिवरपूल शहर मे एक मार्च निकालकर इस घटना पर विरोध जताया।लंदन के पार्लियामेंट स्क्वायर पर एकत्र हुए सैकड़ो लोगो ने मोमबत्तियां जलाकर चिकित्सक के लिए न्याय की मांग की। लोग हाथो मे तख्तियां लिए हुए थे और उन्होने महिलाओ के सम्मान और सशक्तीकरण का आह्वान किया। मेडिकोज वूमेन चैरिटी की डॉ. दीप्ति जैन ने कहा, हमे पूरे विश्व से भारी समर्थन मिला है, जिससे यह साबित होता है कि अब समय आ गया है कि हम जागरूक हो और अपने व्यक्तिगत हितो से ऊपर उठे तथा सभी लोग इस मुद्दे को लेकर एकजुट हो। ब्रिटेन स्थित राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) की चिकित्सक ने कहा, ए शांतिपूर्ण प्रदर्शन हमारी इकाइयो द्वारा इंग्लैड, स्कॉटलैड और वेल्स के कई शहरो मे एक ही समय मे आयोजित किए जा रहे है, जबकि बेलफास्ट और डबलिन मे सप्ताहांत मे प्रदर्शन किए जाएंगे। हमने अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया की वैश्विक इकाइयो को भी इसमें शामिल किया है, जो हमारे साथ शांति सभाएं कर रही है। इससे पहले, एसएफआई-यूके ने लंदन रोड से लिवरपूल के सिटी सेंटर तक मार्च निकाला।एसएफआई-यूके कार्यकर्ता और लिवरपूल विश्वविद्यालय के छात्र रौनक भट्टाचार्य ने कहा, कोलकाता से लिवरपूल तक हम न्याय और महिलाओ की सुरक्षा के लिए खड़े होंगे। एसएफआई-यूके समिति के सदस्य आर. रामकृष्णन ने कहा, यह सिर्फ एक मामले की बात नही है। यह सभी छात्रो की सुरक्षा, संस्थानो की जवाबदेही और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई की बात है। हम इस जघन्य अपराध के जिम्मेदार लोगों के लिए तत्काल और कठोर सजा की मांग करते हैं। आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल मे नौ अगस्त को महिला चिकित्सक का शव मिला था। पुलिस ने इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।कलकत्ता उच्च न्यायालय ने मामले की जांच कोलकाता पुलिस से सीबीआई को सौंपने का 13 अगस्त को आदेश दिया था। सीबीआई ने 14 अगस्त से इस मामले में अपनी जांच शुरू की थी।

ग्लोबल स्कूल ग्रुप के नानयांग परिसर को सिंगापुर में सर्वश्रेष्ठ आईबी स्कूल का दर्जा दिया गया

सिंगापुर। सिंगापुर मे वन वर्ल्ड इंटरनेशनल स्कूल के नानयांग परिसर को सर्वश्रेष्ठ इंटरनेशनल बैक्लॉरिएट (आईबी) स्कूल और आईबी डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए सर्वश्रेष्ठ स्कूल का दर्जा दिया गया है। संबंधित परिसर भारतीय मूल के ग्लोबल स्कूल ग्रुप का हिस्सा है। वन वर्ल्ड इंटरनेशनल स्कूल (ओडब्ल्यूआईएस) परिसर को सिंगापुर में सर्वश्रेष्ठ ब्रिटिश स्कूल के रूप में शीर्ष तीन मे और सिंगापुर में सर्वश्रेष्ठ स्कूल के रूप में शीर्ष चार मे स्थान दिया गया है। ग्लोबल स्कूल ग्रुप के अध्यक्ष एवं सह-संस्थापक अतुल तेमुर्निकर ने कहा, शिक्षाविदो और शिक्षको की हमारी शानदार टीम द्वारा की गई कड़ी मेहनत और समर्पण को मान्यता मिलने से हम खुश है।
उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि दयालुता और करुणा के मूल्यो पर आधारित शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति स्कूल के समर्पण और प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।

हैरिस महज एक कठपुतली हैंः विवेक रामास्वामी

शिकागो। रिपब्लिकन पार्टी के नेता विवेक रामास्वामी ने बृहस्पतिवार को कहा कि अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस की उनकी पार्टी मे एक मामूली हैसियत है और वह एक कठपुतली हैं। रामास्वामी ने यह भी कहा कि राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार हैरिस अपने भाषणों मे नीति के बारे मे बात करने से बचती है क्योंकि इसका असर उनकी लोकप्रियता पर पड़ेगा। रामास्वामी (39) उस दिन शिकागो पहुंचे जिस दिन डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन मे हैरिस राष्ट्रपति पद के लिए पार्टी की अपनी उम्मीदवारी औपचारिक तौर पर स्वीकार करने वाली थी।रामास्वामी ने पीटीआई से एक साक्षात्कार मे कहा, उनकी (हैरिस) पार्टी मे एक मामूली हैसियत है, वह एक कठपुतली है। वास्तविकता यह है कि वह नीति पर बात करने से बचती है क्योंकि वह नीति के बारे मे जितना अधिक बात करेंगी, उनकी लोकप्रियता उतनी कम होगी और मेरा मानना है कि यही हमारी जीत के लिए महत्वपूर्ण रणनीति है। रामास्वामी ने कहा, हम अपनी नीतियो के दम पर जीतेंगे। मेरा मानना है कि हमें उन्हे उनकी असफल आर्थिक नीतियो और दक्षिणी सीमा को लेकर उनके रुख को लेकर घेरने की जरूरत है। अगर हम ऐसा करते है, हम न केवल इस चुनाव को जीतने मे बल्कि देश को बचाने मे भी कामयाब होंगे।

फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों नई सरकार के गठन के लिए प्रमुख दलों के नेताओं के साथ बातचीत करेंगे

भाषा। पेरिस

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों नई सरकार के गठन के लिए प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ बातचीत करेंगे। पिछले महीने संपन्न हुए संसदीय चुनावों में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला था।मैक्रों के कार्यालय ने कहा कि फ्रांस के मुख्य राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ शुक्रवार और सोमवार को एलिसी राष्ट्रपति भवन में बैठकें होंगी ताकि व्यापक और सबसे स्थिर बहुमत की सरकार बनाने की दिशा में आगे बढ़ा जा सके।बयान में कहा गया है, प्रधानमंत्री की नियुक्ति इन विचार-विमर्शों और उनके निष्कर्षों के बाद की जाएगी। वामपंथी गठबंधन न्यू पॉपुलर फ्रंट ने पिछले महीने चुनावों में लगभग एक-तिहाई सीट जीती थी जो किसी भी अन्य समूह की तुलना में अधिक है। मैक्रों का मध्यमार्गी गठबंधन दूसरे स्थान पर रहा और धुर दक्षिणपंथी नेशनल रैली तीसरे स्थान पर रही।आधुनिक फ्रांस के इतिहास में किसी भी प्रभावशाली राजनीतिक दल या गठबंधन का दबदबा न होना, संसद का त्रिशंकु होना और राजनीतिक पंगुता की स्थिति पैदा होने को एक अप्रत्याशित घटना के रूप में देखा जा रहा है। न्यू पॉपुलर फ्रंट ने जोर देकर कहा है कि सबसे बड़े समूह के रूप में उसके उभरने के बाद प्रधानमंत्री पद पर उसका दावा सबसे मजबूत है। गठबंधन ने नौकरशाह लूसी कास्टेट्स को प्रधानमंत्री के लिए अपनी पसंद के रूप में चुना है। कास्टेट्स के बारे में लोगों को कोई खास जानकारी नहीं है।कास्टेट्स शुक्रवार की वार्ता में न्यू पॉपुलर फ्रंट के शीर्ष नेताओं के साथ भाग लेंगे। इनमें धुर-वामपंथी दल फ्रांस अनबोव्ड , द सोशलिस्ट और ग्रीन्स शामिल हैं।मध्यमार्गी और रूढ़िवादी भी शुक्रवार को मैक्रों के साथ मिलेंगे, जबकि नेशनल रैली के नेताओं के सोमवार को एलिसी आने की उम्मीद है।मैक्रों ने पिछले महीने प्रधानमंत्री के रूप में कैस्टेट्स की संभावना को खारिज करते हुए एक टेलीविज़न साक्षात्कार में कहा था कि मुद्दा एक राजनीतिक समूह द्वारा प्रदान किया गया नाम नहीं है। उन्होंने इसके बजाय इस बात पर बल दिया कि उम्मीदवार को बहुमत है कि नहीं।मैक्रों के कार्यालय ने कहा कि नए प्रधानमंत्री के लिए उनका फैसला स्थिरता सुनिश्चित करने के साथ ही इस बात पर आधारित होगा कि नई सरकार को संसद में अविश्वास मत के जरिए जल्द ही गिराया ना जा सके।मध्यमार्गी, दक्षिणपंथी और धुर दक्षिणपंथी नेताओं ने कहा है कि वे उस सरकार को गिराने की कोशिश करेंगे जिसमें फ्रांस अनबोव्ड पार्टी के सदस्य शामिल होंगे।फ्रांसीसी मीडिया में प्रधानमंत्री पद के संभावित उम्मीदवारों के रूप में कुछ अन्य नामों की भी व्यापक चर्चा है।

सुनिश्चित करूंगी कि 21वीं सदी की प्रतिस्पर्धा में चीन नहीं, अमेरिका की जीत होः हैरिस

भाषा। शिकागो (अमेरिका),

अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने कहा है कि अगर वह अमेरिका की राष्ट्रपति चुनी जाती हैं, तो वह सुनिश्चित करेंगी कि 21वीं सदी की प्रतिस्पर्धा में चीन नहीं, बल्कि अमेरिका की जीत हो और दुनिया का नेतृत्व करने की उसकी भूमिका मजबूत हो।हैरिस ने नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति पद के चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवारी बृहस्पतिवार रात औपचारिक रूप से स्वीकार कर ली। चुनाव में हैरिस और रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार एवं पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच कड़ी टक्कर है। भारतीय-अफ्रीकी मूल की हैरिस ने शिकागो में डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन के दौरान उम्मीदवारी स्वीकार की और इसी के साथ वह राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार बनने वाली डेमोक्रेटिक पार्टी की दूसरी महिला नेता बन गईं। हैरिस (59) अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए किसी प्रमुख दल की उम्मीदवार बनने वाली पहली भारतीय-अमेरिकी और पहली अश्वेत महिला हैं।शिकागो के यूनाइटेड सेंटर में उम्मीदवारी स्वीकार करने के लिए मंच पर आईं हैरिस ने कहा कि वह अवसर आधारित ऐसी अर्थव्यवस्था बनाएंगी, जहां हर किसी को प्रतिस्पर्धा करने और सफल होने का मौका मिलेगा।हैरिस (59) ने कहा, मैं यह सुनिश्चित करूंगी कि हम अंतरिक्ष और कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करें तथा 21वीं सदी की प्रतिस्पर्धा में चीन नहीं, बल्कि अमेरिका की जीत हो और हम दुनिया का नेतृत्व करने वाले देश के तौर पर अपनी भूमिका को छोड़ने के बजाय उसे मजबूत करें। उन्होंने कहा, चाहे आप ग्रामीण क्षेत्र में रहते हों, छोटे शहर में या बड़े शहर में... राष्ट्रपति के रूप में, मैं श्रमिकों एवं कर्मचारियों, छोटे व्यवसाय के मालिकों एवं उद्यमियों और अमेरिकी कंपनियों को एक साथ लाऊंगी, ताकि नौकरियां पैदा की जा सकें। मैं हमारी अर्थव्यवस्था का विस्तार करूंगी और स्वास्थ्य सेवा, आवास और किराने का सामान जैसी रोजमर्रा की जरूरतों की लागत कम करूंगी। हैरिस ने ट्रंप पर निशाना साधते हुए कहा कि वह मध्यम वर्ग के लिए नहीं, बल्कि अपने और अपने अरबपति दोस्तों के लिए चुनाव लड़ते हैं।

हैरिस ने डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवारी स्वीकार की

शिकागो। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने नवंबर मे होने वाले राष्ट्रपति पद के चुनाव मे डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवारी औपचारिक रूप से स्वीकार कर ली। चुनाव में हैरिस और रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार एवं पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच कड़ी टक्कर है। भारतीय-अफ्रीकी मूल की हैरिस ने शिकागो मे बृहस्पतिवार रात डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन के दौरान उम्मीदवारी स्वीकार की और इसी के साथ वह राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार बनने वाली डेमोक्रेटिक पार्टी की दूसरी महिला नेता बन गईं। उन्होंने कहा, लोगों की ओर से, प्रत्एक अमेरिकी की ओर से, चाहे वह किसी भी पार्टी, जाति, या भाषा से संबंध रखता हो, मेरी मां की ओर से और उन सभी लोगो की ओर से जिन्होंने ऐसे अमेरिकियों की ओर से अपनी असंभव यात्रा शुरू की, जिनके साथ मै बड़ी हुई, जो कड़ी मेहनत करते है, अपने सपनो का पीछा करते है और एक-दूसरे का ख्याल रखते है, उन सभी की ओर से जिनकी कहानी पृथ्वी के सबसे महान राष्ट्र मे ही लिखी जा सकती है, मै उम्मीदवारी स्वीकार करती हूं। शिकागो के यूनाइटेड सेंटर मे उम्मीदवारी स्वीकार करने के लिए मंच पर आईं हैरिस (59) ने कहा कि उनके लिए असंभव यात्राएं कोई नई बात नही है। हैरिस ने कहा कि उनके प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप धीर-गंभीर व्यक्ति नही है और उन्हे पुनः राष्ट्रपति बनाने के परिणाम बेहद गंभीर होगे। उन्होने रूस के साथ युद्ध मे यूक्रेन का सहयोग करने की प्रतिबद्धता जताते हुए कहा कि यदि वह राष्ट्रपति चुनी जाती है तो वह यूक्रेन और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के अपने सहयोगियों के साथ मजबूती से खड़ी रहेंगी। हैरिस की मां श्यामला गोपालन भारतीय थी और उनके पिता डोनाल्ड जैस्पर हैरिस जमैका के नागरिक थे। अगर हैरिस निर्वाचित होती है, तो वह अमेरिका की पहली महिला राष्ट्रपति होंगी।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने हसीना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द किया

भाषा। ढाका

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के साथ-साथ पूर्व मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों का राजनयिक पासपोर्ट रद्द कर दिया है। अंतरिम सरकार ने यह कदम विद्यार्थियों के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शन के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना द्वारा इस्तीफा देने और भारत चले जाने के लगभग दो सप्ताह बाद उठाया है।सरकारी समाचार एजेंसी बीएसएस की खबर के मुताबिक गृह मंत्रालय के सुरक्षा सेवा प्रभाग ने बृहस्पतिवार को एक बयान जारी कर बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री, पूर्व प्रधानमंत्री के सलाहकारों, पूर्व मंत्रिमंडल के सदस्यों और हाल में भंग की गई संसद के सभी सदस्यों को मिले राजनयिक पासपोर्ट तत्काल रद्द कर दिए जाएंगे। राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने अगस्त में 76 वर्षीय हसीना के देश छोड़कर चले जाने के बाद 12वीं संसद को भंग कर दिया था। वर्तमान में नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस अंतरिम सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं।बयान में कहा गया है कि अधिकारियों के राजनयिक पासपोर्ट भी उनके कार्यकाल या नियुक्ति समाप्त होने पर तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिए जाएंगे। छात्रों के नेतृत्व में हुए प्रदर्शन के कारण पांच अगस्त को इस्तीफा देने के बाद हसीना भारत आ गई थीं।ढाका से प्रकाशित अखबार डेली सर की खबर के मुताबिक भारतीय वीजा नीति के अनुसार राजनयिक या आधिकारिक पासपोर्ट रखने वाले बांग्लादेशी नागरिक वीजा-मुक्त प्रवेश करने और 45 दिन तक रहने के पात्र हैं। बृहस्पतिवार को हसीना के भारत में रहते 18 दिन हो गए हैं। सरकारी सूत्रों के हवाले से खबर में कहा गया है कि हसीना के पास उनके नाम से जारी राजनयिक पासपोर्ट के अलावा कोई अन्य पासपोर्ट नहीं है। हसीना के राजनयिक पासपोर्ट और उससे संबंधित वीजा विशेषाधिकारों को रद्द करने से उन्हें प्रत्यर्पित किए जाने की आशंका बढ़ सकती है।बीएसएस की खबर के मुताबिक हसीना का प्रत्यर्पण बांग्लादेश और भारत के बीच हस्ताक्षरित प्रत्यर्पण संधि के कानूनी ढांचे के अंतर्गत आता है।

बांग्लादेश में बाढ़ से 15 लोगों की मौत, लाखों प्रभावित

ढाका। मानसून की भारी बारिश से बांग्लादेश के डेल्टाई इलाको और भारत के कुछ क्षेत्रो में बाढ़ आ गई है। इस कारण बांग्लादेश मे कम से कम 15 लोगो की मौत हो गई तथा 40 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए है जो राजनीतिक परिवर्तन के बाद नवगठित अंतरिम सरकार के लिए एक बड़ी प्रशासनिक चुनौती बन गई है। कई नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही है, खासकर पूर्वोत्तर, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी बांग्लादेश मे। इस कारण कई शहरो और कस्बो के अलावा सैकड़ो गांव जलमग्न हो गए है। इससे बुनियादी ढांचे को भी नुकसान पहुंचा है और संचार लाइन बाधित हो गई है। सरकारी समाचार एजेंसी बांग्लादेश संबाद संस्था (बीएसएस) की खबर के मुताबिक, आपदा प्रबंधन मंत्रालय मे सचिव कमर-उल-हसन ने कहा, बांग्लादेश मे भारी बारिश के कारण आई बाढ़ के कारण कम से कम 15 लोगो की मौत हो गई है और 11 जिलो के 48 लाख लोग प्रभावित हुए है। हसन ने संवाददाताओं को बताया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रो मे सेना, नौसेना, तट रक्षक, बॉडर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी), अग्निशमन कर्मी, पुलिस और छात्रो द्वारा बचाव अभियान चलाया जा रहा है। ढाका ट्रब्यून अखबार के मुताबिक, इन क्षेत्रों में एक दर्जन से अधिक स्थानों पर 60 मिमी से अधिक वर्षा दर्ज की गई। कॉक्स बाजार मे 151 मिमी और गोपालगंज मे 62 मिमी तक वर्षा दर्ज की गई। मौसम विज्ञान विभाग ने बंगाल की खाड़ी मे सक्रिय मानसून के कारण अगले तीन दिन मे देश के विभिन्न क्षेत्रों मे भारी वर्षा की आशंका जताई है।बांग्लादेश मे 200 से ज़्यादा नदियां बहती है, जिनमे से 54 नदियां भारत से होकर गुज़रती है। बंगाल की खाड़ी मे कम दबाव का क्षेत्र बनने के कारण बाढ़ की मौजूदा स्थिति बनी है। मौसम विशेषज्ञो ने शुक्रवार को कहा कि मूसलाधार बारिश के अलावा, उफनती नदियां, अल नीनो और जलवायु परिवर्तन की घटनाएं देश मे व्यापक बाढ़ के लिए जिम्मेदार कारक है।

किपगेन के गोल से भारत सेमीफाइनल में पहुंचा

सैफ अंडर-20 फुटबाल : मालदीव पर 1-0 की रोमांचक जीत

काठमांडू। मांगलेनथांग किपगेन के अंत में किए गए गोल की बदौलत भारत ने शुक्रवार को यहां मालदीव पर 1–0 की रोमांचक जीत से सैफ अंडर–20 फुटबॉल चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ग्रुप बी का अपना अंतिम मैच खेल रही भारतीय टीम को 95 मिनट तक मशक्कत करनी पड़ी जिसके बाद किपगेन ने शानदार गोल कर अपनी टीम को तालिका में शीर्ष पर पहुंचाया। भारत अब सोमवार को सेमीफाइनल में ग्रुप ए के उप विजेता और गत चैम्पियन बांग्लादेश से भिड़ेगा। पहले मैच की तुलना में भारत का प्रदर्शन बेहतर रहा जिसमें कोरो सिंह थिंगुजम और केल्विन सिंह ताओरेम ने अच्छा आक्रमण दिखाया। भारत के लिए केल्विन ने गोल करने की कोशिश में शानदार शॉट लगाया लेकिन सेंट्रल मिडफील्डर एबिनदास एसुदासन ने इसे रोक दिया। बेंगलुरु एफसी के विंगर पोस्ट के करीब एक नीचा शॉट लगाया लेकिन इसे भी नाकाम कर दिया गया। गुरनाज सिंह ग्रेवाल ने कॉर्नर हासिल किया जिस पर मोनिरुल मोल्ला ने भूटान के खिलाफ मैच की तरह विजई गोल को दोहराने की कोशिश की। लेकिन उनका शानदार हेडर वाइड चला गया।कोरो का 18वें मिनट में किया गया प्रयास भी विफल कर दिया गया। चार मिनट बाद कोरो का शॉट सीधे गोलकीपर के पास चला गया।किपगेन के आने से भारतीय आक्रमण में ऊर्जा भर गई। 47वें मिनट में उन्होंने गोल दागने की कोशिश की लेकिन यह सफल नहीं रहा। मालदीव को अच्छा मौका मिला लेकिन कप्तान शानान रशाद की फ्री–किक क्रॉसबार के ऊपर से कुछ इंच दूर चली गई। अंत में 95वें मिनट में किपगेन ने अपने बेहतरीन शॉट से गोल कर अपनी टीम को जीत दिलाई।

भारत ए की शानदार गेंदबाजी पर कंगारू मजबूत

आस्ट्रेलिया ए ने कुल बढ़त 192 रन की

भाषा। **गोल्ड कोस्ट (आस्ट्रेलिया)**

भारत ए महिला टीम के गेंदबाजों ने शानदार जज्बा दिखाया लेकिन आस्ट्रेलिया ए ने दूसरी पारी में सात विकेट पर 164 रन बनाकर शुक्रवार को यहां अनधिकृत एकमात्र महिला टेस्ट के दूसरे दिन अपनी कुल बढ़त 192 रन की कर ली। भारत ए की कप्तान मीनू मणि ने मैच में कुल 10 विकेट हासिल किए। आस्ट्रेलिया ए के लिए केट पीटरसन ने 12 ओवर में 16 रन देकर पांच विकेट चटकाए जिससे मेजबान टीम ने भारत ए को 184 रन पर समेट दिया। आस्ट्रेलिया ए की पहली पारी 212 रन पर सिमट गई थी। भारत ए ने सुबह दो विकेट पर 100 रन से आगे खेलना शुरू किया और टीम बढ़त हासिल करने की ओर बढ़ रही थी लेकिन केट पीटरसन की गेंदबाजी के सामने उसका मध्यक्रम चरमरा गया। भारत ए की बल्लेबाज तेजल हसाबनिस (32) और श्वेता सेहरावत (40) के पवेलियन पहुंचने के बाद टीम ने 27 रन के अंदर पांच विकेट गंवा दिए। सयाली सतघरे (21), मणि (17) और मन्नत कश्यप (19) ने मिलकर 56 रन जोड़कर आस्ट्रेलिया को बड़ी बढ़त बनाने से रोका। इसके बाद मणि ने गेंदबाजी से प्रभावित किया और आस्ट्रेलिया ए की बल्लेबाज फिर से भारतीय स्पिनरों के आगे संघर्ष करती दिखीं। इस भारतीय ऑफ स्पिनर ने पहले सलामी बल्लेबाज जॉर्जिया वोल और उनकी साथी चार्ली नोट को लगातार ओवरों में शून्य पर आउट किया। पहली पारी में पांच विकेट झटकने वाली मणि ने निकोल फाल्टम (16) को आउट करने के बाद अपनी ऑफ ब्रेक से टेस फिंटू को भी पवेलियन की राह दिखाई। हालांकि सलामी बल्लेबाज एम्मा डि ब्रोघे एक छोर पर डटी रहीं और उन्होंने 117 गेंद में 58 रन की पारी खेली जिसके बाद वह लेग स्पिनर प्रिया मिश्रा का शिकार हो गईं। विकेटकीपर मैडी ड्रेक ने फिर 100 गेंद में नाबाद 54 रन की पारी खेलकर आस्ट्रेलिया ए को उबारने में मदद की और टीम ने स्टंप तक सात विकेट पर 164 रन बनाए।

अगर जय शाह आईसीसी चेयरमैन बने तो कौन होगा बीसीसीआई सचिव

इस पद के लिए कोई स्पष्ट दावेदार नहीं

नई दिल्ली। आंकड़े जय शाह को अगले आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) चेयरमैन के रूप में चुनने के पक्ष में होंगे लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि वह विश्व संचालन संस्था में शामिल होने का फैसला करेंगे या नहीं और इसके बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) सचिव के रूप में उनकी जगह कौन लेगा। माना जा रहा है कि शाह को आईसीसी बोर्ड के 16 में से 15 सदस्यों का समर्थन प्राप्त है लेकिन वह इस पद पर आना चाहते हैं या नहीं, इसे तय करने के लिए उनके पास 96 घंटे से भी कम समय है। वहीं उनके पास बीसीसीआई सचिव के रूप में लगातार दूसरे कार्यकाल में अभी एक साल बाकी है। नया आईसीसी चेयरमैन एक दिसंबर को कार्यभार संभालेगा और नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 27 अगस्त है। सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड में वापसी के लिए अनिवार्य तीन साल का कूलिंग ऑफ पीरियड शाह के लिए अक्टूबर 2025 में अपना कार्यकाल पूरा होने के बाद शुरू होगा। लेकिन इस बात पर बड़ा सवालिया निशान है कि बीसीसीआई में शाह की जगह कौन लेगा क्योंकि उन्होंने और उनके करीबी लोगों ने अभी तक तत्काल योजनाओं का खुलासा नहीं किया है। राजीव शुक्ला : ऐसी संभावना है कि बीसीसीआई पदों में फेरबदल करे और मौजूदा उपाध्यक्ष और राज्यसभा में कांग्रेस के सांसद शुक्ला को एक साल के लिए यह काम करने के लिए कहे। शुक्ला को निश्चित रूप से सचिव बनने में कोई आपत्ति नहीं होगी। आशीष शेलार : महाराष्ट्र भाजपा के दिग्गज शेलार बीसीसीआई के कोषाध्यक्ष हैं और मुंबई क्रिकेट संघ (एमसीए) प्रशासन में बड़ा नाम हैं। शेलार हालांकि एक कुशल राजनीतिज्ञ हैं और बीसीसीआई सचिव पद के लिए उन्हें अपना समय देना होगा। पर वह भी इस दौड़ में शामिल हो सकते हैं। अरुण धूमल: इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) चेयरमैन के पास बोर्ड चलाने के लिए अनुभव है। वह कोषाध्यक्ष रह चुके हैं और लुभावनी क्रिकेट लीग के प्रमुख हैं। संयुक्त सचिव देवजीत सैकिया : वह हालांकि लोकप्रिय नाम नहीं हैं, लेकिन मौजूदा बीसीसीआई प्रशासन में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं जिन्हें भी पदोन्नत किया जा सकता है। युवा प्रशासकों में दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) अध्यक्ष रोहन जेटली या बंगाल क्रिकेट संघ के पूर्व अध्यक्ष अविषेक डालमिया के नाम पर चर्चा हो सकती है। अन्य युवा राज्य इकाई के अधिकारियों में पंजाब के दिलशेर खन्ना, गोवा के विपुल फड़के और छत्तीसगढ़ के प्रभतेज भाटिया शामिल हैं।

दिल्ली प्रीमियर लीग : सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने पुरानी दिल्ली 6 को हराया

नई दिल्ली। सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने शानदार प्रदर्शन के बूते शुक्रवार को यहां दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) मुकाबले में पुरानी दिल्ली 6 को 109 रन के बड़े अंतर से शिकस्त दी। आर्यन राणा ने 75 रन और रणजी टीम बल्लेबाज जोंटी सिद्धू की 22 गेंद में 50 रन की पारी से सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने 20 ओवर मे सात विकेट पर 217 रन का स्कोर बनाया। इसके जवाब में पुरानी दिल्ली 6 महज 12.1 ओवर में 108 रन पर सिमट गई। सेंट्रल दिल्ली किंग्स के लिए सुमित कुमार ने 22 रन देकर चार विकेट जबकि जोंटी सिद्धू ने आठ रन देकर और मनी ग्रेवाल ने 28 रन तीन तीन विकेट झटके।

श्योराण ने चेन्नई प्रो में पहला खिताब जीता

चेन्नई। गुरुग्राम के ध्रुव श्योराण ने शुक्रवार को यहां 50 लाख रुपए की चेन्नई प्रो चैम्पियनशिप के अंतिम दौर में तीन अंडर 69 का शानदार कार्ड खेलकर पीजीटीआई टूर पर पहला खिताब अपनी झोली में डाला। दो बार के पीजीटीआई फीडर टूर विजेता ध्रुव ने कुल 16 अंडर 272 का स्कोर बनाकर तीन स्ट्रोक के अंतर से खिताब जीता। ध्रुव (69-67-67-69) को शुक्रवार को 7.5 लाख रुपए का चेक मिला जिससे वह टाटा स्टील पीजीटीआई रैंकिंग में 23वें से 14वें स्थान पर पहुंच गए।

संधू और खालिन संयुक्त पांचवें स्थान पर

जकार्ता (इंडोनेशिया)। भारतीय गोल्फर युवराज संधू (68-72-65) और खलिन जोशी (68-71-66) 11-अंडर के कुल स्कोर के साथ एशियाई डेवलपमेंटल टूर (एडीटी) के सिपुत्रा गोल्फ्रेन्योर टूर्नामेंट में तीसरे दौर के बाद संयुक्त पांचवें स्थान पर है। राहिल गंगजी (73) और सुनहित बिश्नोई (70) चार अंडर के स्कोर के साथ संयुक्त 33वें जबकि अमन राज (73) एक अंडर के स्कोर से संयुक्त 47वें स्थान पर है।

शुभंकर की डेनमार्क मे अच्छी शुरुआत

आरहस (डेनमार्क)। भारतीय गोल्फर शुभंकर शर्मा पहले दो दौर मे दो अंडर 69 के समान स्कोर से शुक्रवार को यहां दानिश गोल्फ चैम्पियनशिप मे संयुक्त पांचवे स्थान पर बने हुए है। हालांकि अभी उनके स्थान मे बदलाव हो सक्ता है क्योक दूसरा दौर अभी जारी है। पेरिस ओलंपिक के बाद संक्षिप्त ब्रेक लेने वाले शुभंकर पहले दौर के समाप्त होने के बाद संयुक्त 14वे स्थान पर बने हुए थे।

एम्मा नवारो मॉन्टेरी ओपन के सेमीफाइनल में

मॉन्टेरी (मैक्सिको)। अमेरिका की दूसरी वरीयता प्राप्त एम्मा नवारो ने पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करके पोलैंड की नौवी वरीयता प्राप्त मैग्डेलेना फ्रेच को 6-7 (3), 6-0, 6-2 से हराकर मॉन्टेरी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। नवारो इस डब्ल्यूटीए 500 हार्ड-कोर्ट प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में चेक गणराज्य की छठी वरीयता प्राप्त लिंडा नोस्कोवा से भिड़ेगी।

मुंबई हाफ मैराथन को हरी झंडी दिखाएंगे तेंदुलकर

मुंबई। महान क्रिकेटर सचिन तेदुलकर रविवार को यहां होने वाली मुंबई हाफ मैराथन को हरी झंडी दिखाकर शुरू करेंगे जिसमे 6,000 से ज्यादा महिलाओ सहित करीब 20,000 प्रतिभागियो के हिस्सा लेने की उम्मीद है। तेदुलकर यहां बांद्रा कुर्ला परिसर मे सुबह पांच बजे मैराथन की मुख्य रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ दूसरे स्थान पर रहे नीरज

लुसाने डायमंड लीग

भाषा। लुसाने

भाला फेंक के स्टार भारतीय खिलाड़ी नीरज चोपड़ा फिटनेस संबंधी चिंताओं के बावजूद यहां डायमंड लीग एथलेटिक्स प्रतियोगिता में अपने आखिरी प्रयास में 89.49 मीटर का सत्र का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए दूसरे स्थान पर रहे। पेरिस ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाला यह 26 वर्षीय खिलाड़ी चौथे दौर तक चौथे स्थान पर चल रहा था। उन्होंने पांचवें प्रयास में 85.58 मीटर भाला फेंका। नीरज ने हालांकि अपना सर्वश्रेष्ठ आखिरी प्रयास के लिए बचा रखा था। गुरुवार को खेली गई इस पर प्रतियोगिता में नीरज ने अंतिम प्रयास में 89.49 मीटर भाला फेंका जो पेरिस ओलंपिक के 89.45 मीटर से थोड़ा बेहतर है। नीरज पर छठे प्रयास से पहले बाहर होने का खतरा मंडरा रहा था लेकिन पांचवें प्रयास में बेहतर प्रदर्शन से वह मुकाबले में बने रहे। पहले पांच प्रयास में शीर्ष तीन पर रहने वाले खिलाड़ियों को ही अंतिम प्रयास में भाग लेने की अनुमति मिलती है। दो बार के विश्व चैंपियन और पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता ग्रेनाडा के एंडरसन पीटर्स दूसरे दौर में 90.61 मीटर के प्रयास के साथ पहले स्थान पर रहे। जर्मनी के जूलियन वेबर ने 87.08 मीटर के साथ तीसरा स्थान हासिल किया।नीरज ने बाद में कहा, शुरू में अच्छा महसूस नहीं हो रहा था लेकिन मैं अपने थ्रो से खुश हूं, खासकर अपने आखिरी प्रयास में दूसरा (करियर का) सर्वश्रेष्ठ थ्रो करके। शुरुआत बहुत अच्छी नहीं रही लेकिन मैं वापसी करने में सफल रहा। मुझे खुशी है कि मैंने आखिर तक हार नहीं मानी। उन्होंने कहा, भले ही मेरा शुरुआती थ्रो 80–83 मीटर के आसपास था लेकिन आखिरी दो प्रयासों में दमदार प्रदर्शन करने में सफल रहा। इस तरह की शीर्ष प्रतियोगिता में मानसिक रूप से मजबूत रहना और अपना जज्बा बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है। पिछले साल से फॉर्म में वापसी करने के लिए प्रयासरत पीटर्स यहां शुरू से लेकर आखिर तक पहले स्थान पर बने रहे। उन्होंने 90 मीटर की दूरी पार करके अपना पहला स्थान सुनिश्चित कर दिया था। उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 93.07 मीटर है जो उन्होंने 2022 में हासिल किया था। चोपड़ा यहां दूसरे स्थान पर रहने के बाद डायमंड लीग की तालिका में 15 अंक लेकर वेबर के साथ संयुक्त तीसरे स्थान पर हैं।

एगो की धैर्य बनाए रखने की सलाह से मदद मिली: चोपड़ा

लुसाने। भारतीय भाला फेंक स्टार नीरज चोपड़ा ने कीनिया के उनके प्रतिद्वंद्वी जूलियस एगो की धैर्य बनाए रखने की सलाह उनके लिए मददगार साबित हुई और वह सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ यहां डायमंड लीग मीट में दूसरे स्थान पर रहे। पेरिस ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाला यह 26 वर्षीय खिलाड़ी चौथे दौर तक चौथे स्थान पर चल रहा था। उन्होंने पांचवें प्रयास में 85.58 मीटर भाला फेंक फेंक तीसरा स्थान पक्का किया और फिर अंतिम प्रयास में 89.49 मीटर भाला फेंका जो पेरिस ओलंपिक के 89.45 मीटर से थोड़ा बेहतर है। पांचवें प्रयास के बाद केवल शीर्ष तीन खिलाड़ी ही भाला फेंक सकते थे। चोपड़ा ने आधिकारिक प्रसारक से कहा, (एंडरसन) पीटर्स ने 90 मीटर थ्रो किया, मेरा शरीर अच्छा महसूस नही कर रहा था लेकिन अंदर से संघर्ष करने की पूरी भावना थी। मुझे वास्तव में अपनी वापसी पसंद आई। आखिरी थ्रो में मैंने ज्यादा नही सोचा, बस अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। उन्होने कहा, मैने शुरुआती प्रयास में ही अच्छा करने का सोचा था लेकिन यह थ्रो सही नही रहा। जूलियस एगो ने मुझे कहा धैर्य बनाए रखो तुम दूर तक भाला फेंकोगे। मैं शांतचित रहने की कोशिश कर रहा था। एगो 83 मीटर के प्रयास के साथ छठे स्थान पर रहे।

गुकेश और प्रज्ञानानंदा ने सिंकफील्ड कप में ड्रॉ खेला

भाषा। सेंट लुइस (अमेरिका)

विश्व चैम्पियनशिप के चैलेंजर डी गुकेश यहां सिंकफील्ड कप के चौथे दौर में फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा के खिलाफ अच्छी स्थिति पर पहुंचने के बावजूद जीत दर्ज नहीं कर सके और उन्हें अंक बांटकर संतोष करना पड़ा। चीन के डिंग लिरेन के खिलाफ नवंबर में विश्व चैम्पियनशिप मैच खेलने के लिए तैयार गुकेश ने फिरौजा को कड़ी चुनौती दी। ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा ने भी होलैंड के अनीश गिरी के खिलाफ बाजी ड्रा कराई। अमेरिका के वेस्ले सो ने एकमात्र निर्णायक बाजी जीती। उन्होंने रूस के इयान नेपोमनियाच्ची को हराकर पूरे अंक जुटाए। इस तरह वेस्ले सो के फिरौजा की तरह 2.5 अंक हो गए हैं और दोनों चार दौर के बाद संयुक्त बढ़त बनाए हैं।उनके बाद अमेरिका के फैबियानो कारूआना, फ्रांस के मैक्सिम वाचियर लाग्रेव, नेपोमनियाच्ची, प्रज्ञानानंदा और गुकेश शामिल हैं। उज्बेकिस्तान के नोडिरबेक अब्दुसत्तारोव और गिरी 1.5 लेकर संयुक्त नौवें स्थान पर हैं।

फ्रीस्टाइल पहलवानों ने अंडर-17 विश्व चैम्पियनशिप में निराश किया

अम्मान (जोर्डन)। भारतीय पुरुष फ्रीस्टाइल पहलवान यहां अंडर–17 विश्व चैम्पियनशिप में महिला समकक्षों जैसा प्रदर्शन नहीं कर सके और शुक्रवार को मैट पर पर उतरे पांच पहलवानों में से कोई भी सेमीफाइनल में जगह नहीं बना सका।पांच में से केवल दो पहलवान हर्ष और वेविक ही एक दौर में जीत हासिल कर पाए। हर्ष (48 किग्रा) ने एरबोल बोलोतोव पर 6–2 से जीत दर्ज की लेकिन क्वार्टरफाइनल में चिंगिस सैरिग्लार से हार गए। जयवीर सिंह (55 किग्रा) पहले दौर में अजतबर्डी अशिरगुलएव से (3–3) हार गए। अशिरगुलएव की चुनौती भी क्वार्टरफाइनल में समाप्त हो गई जिससे भारतीय पहलवान की रेपेचेज के जरिए वापसी की उम्मीद भी टूट गई।

जैमी स्मिथ की शतकीय पारी से इंग्लैंड मजबूत स्थिति में पहुंचा

भाषा। मैनचेस्टर

श्रीलंका पर 122 रन की बढ़त बना ली

विकेटकीपर बल्लेबाज जैमी स्मिथ के टेस्ट करियर की पहली शतकीय पारी के दम पर इंग्लैंड ने दो मैचों श्रृंखला के पहले टेस्ट मैच के तीसरे दिन शुक्रवार को यहां श्रीलंका पर 122 रन की बढ़त बना ली। स्मिथ ने 148 गेंद की पारी में एक छक्का और आठ चौके की मदद से 111 रन बनाए जिससे श्रीलंका के 236 रन के जवाब में इंग्लैंड की पहली पारी 358 रन पर सिमटी। इंग्लैंड की टीम लंच से कुछ देर पहले आउट हुई, जिसके बाद उनके गेंदबाजों ने 10 रन पर दो विकेट चटकाकर श्रीलंका की मुश्किलें बढ़ा दी। श्रीलंका की टीम अब भी इंग्लैंड से 112 रन पीछे है। क्रिस वोक्स ने निशान मदुशंका को खाता खोले बिना बोल्ड किया जबकि कुसल मेंडिस भी बिना कोई योगदान दिए गट एटकिंसन की गेंद पर विकेट के पीछे स्मिथ को कैच थमा बैठे। बेन फॉक्स और जॉनी बेयरस्टो जैसे अनुभवी नामों की जगह टीम में जगह पाने वाले 24 साल के स्मिथ ने अपने चयन को सही साबित किया। उन्होंने विकेट के पीछे अपने काम से प्रभावित करने के साथ बल्ले से भी बेहतरीन योगदान दिया। वेस्टइंडीज के खिलाफ पिछले महीने टेस्ट श्रृंखला में 3–0 की जीत के दौरान 70 और 95 रन की पारी खेलने वाले स्मिथ ने अपने चौथे टेस्ट में इस प्रारूप का पहला शतक जड़ा।

डब्लूएमएसकेएफऑल इंडिया कराटे चैंपियनशिप 24 व 25 अगस्त को

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के 400 खिलाड़ी लखनऊ में 24 व 25 अगस्त 2024 को होने वाली डब्लूएमएसकेएफऑल इंडिया कराटे चैंपियनशिप.2024 में पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। वर्ल्ड मॉडर्न शोतोकान कराटे फेडरेशनए इंडिया के तत्वावधान में वर्ल्ड मॉडर्न शोतोकान कराटे फेडरेशनए उत्तर प्रदेश के द्वारा दो दिवसीय चैंपियनशिप के मुकाबले चौक स्टेडियम के लालजी टंडन बहुउद्देश्यीय हाल में खेले जाएंगे।चैंपियनशिप की पूर्व संध्या पर आज खिलाड़ियों का वजन भी किया गया। इस चैंपियनशिप के बारे में जानकारी देत हुए उत्तर प्रदेश एसोसिएशन के सचिव संतोष कुमार ने बताया कि चैंपियनशिप में 78 स्वर्णए 78 रजत व 156 कांस्य पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा होगी।चैंपियनशिप में बालक व बालिकाओ में कुमिते के 62 भार वर्ग व काता की 16 श्रेणियों सहित कुल 78 वर्गो के मुकाबले होंगे। इस चैंपियनशिप में मेजबान उत्तर प्रदेशए पंजाबए झारखंडए गोवाए उत्तराखंड और राजस्थान की टीम भाग लेगी। चैंपियनशिप का औपचारिक उद्घाटन 24 अगस्त को दोपहर 2 बजे होगा। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि इंजी.योगेश कुमार ;निदेशक.कामर्शियलए मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेडद्ध होंगे। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कराटे एसोसिएशन ऑफयूपी के अध्यक्ष टीपी हवेलिया करेंगे।

विनीत का कमाल, मेहता क्लब ने जीता खिताब

लखनऊ। विनीत सिंह ;4 विकेटए नाबाद 66 रनद्ध के आलराउंड खेल और अब्दुल रहमान ;48द्ध की उम्दा पारी से मेहता क्लब ने पांचवीं श्रीपाल सिंह स्मारक टी20 नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब फाइनल में डीएसएस क्लब को 5 विकेट से हराकर जीत लिया। पार्थ रिपब्लिक ग्राउंड पर खेले गए फाइनल में डीएसएस क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 6 विकेट पर 177 रन का स्कोर बनाया। शिवेंद्र शुक्ला 45 रन,व अब्दुल्लाह जमाली 60 रन बनाए। विनीत सिंह ने 33 रन देकर 4 विकेट चटकाए। सुशील राय को 2 विकेट मिले। जवाब में मेहता क्लब ने 19.4 ओवर में 5 विकेट पर 178 रन बनाकर मैच जीत लिया। सलामी बल्लेबाज विनीत सिंह ने नाबाद 66 रन की अर्धशतकीय पारी खेल टीम को जीत की मंजिल तक पहुंचाया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि फिटनेस रेजीमेंट के निदेशक विजय सिंह चौहान, मात्र छाया ग्राउंड निदेशक अनिल सिंह व व्यूज एडवरटाइजिंग के निदेशक एसपी सिंह ने पुरस्कार बांटे।

देवांश,अयान, प्रांजल, दिव्यांशु व स्वरित ने जड़े स्वर्णिम पंच

सीआईएससीई यूपी.यूके रीजनल बाक्सिंग

लखनऊ। लखनऊ जोन ए के देवांश चौरसियाए मो.अयान खान, प्रांजल जोशी, दिव्यांशु बिष्ट, स्वरित मिश्रा ने सीआईएससीई यूपीयूके रीजनल बाक्सिंग टूर्नामेंट में अपने दमदार पंचों के सहारे स्वर्ण पदक अपने नाम किए। सेंट थॉमस मिशन हाई स्कूल लखनऊ द्वारा केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बाक्सिंग हाल में आयोजित तीन दिवसीय टूर्नामेंट के दूसरे दिन खेले गए फ इनल में बालिका वर्ग में लखनऊ जोन बी की शबी अली व लखनऊ जोन ए की हर्षिता तिवारी ने भी स्वर्णिम सफ्लता हासिल की। आज के पदक विजेताओं को सेंट थॉमस मिशन हाईए स्कूलए लखनऊ के फ ादर जयसन जोसेफ व प्रधानाचार्या डाण्रुपम दुबे ने पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। अंडर.14 बालक वर्ग–30.32 किग्रा में लखनऊ जोन ए के मोहम्मद अयान खान ने लखनऊ जोन बी के उन्नत गुप्ता को हराया,32.34 किग्रा में लखनऊ जोन ए के देवांश चौरसिया ने कानपुर दक्षिण के विनायक तिवारी को हराया,34.36 किग्रा में कानपुर उत्तर के अक्षत सिंह ने लखनऊ जोन ए के आदित्य सिंह अलेरिया को हराया36.38 किग्रा में लखनऊ जोन ए के प्रांजल जोशी ने कानपुर दक्षिण के दक्ष पाण्डेय को हराया,38.40 किग्रा में कानपुर दक्षिण के अनंत तिवारी ने लखनऊ जोन ए के आलोक वर्मा को हराया40.42 किग्रा में लखनऊ जोन ए के दिव्यांशु बिष्ट ने मेरठ के इंद्रजीत सिंह को हराया 42.44 किग्रा में लखनऊ जोन ए के स्वर्णित मिश्रा ने कानपुर उत्तर के वैभव कुमार शर्मा को हराया।44.46 किग्रा में मेरठ जोन के अणर्व सिंह ने कानपुर उत्तर के सिद्ध वर्द्धन को हराया। 46.48 किग्रा में लखनऊ जोन बी के यजदान ने कानपुर दक्षिण के यथार्थ को हराया48.50 किग्रा में कानपुर उत्तर के शौर्य वर्द्धन ने मेरठ के अविरल दीक्षित को हराया। अंडर.17 बालिका वर्ग–42 किग्रा से कम भार वर्ग में कानपुर उत्तर की सिद्धि गुप्ता ने लखनऊ बी की प्रगति गुप्ता को हराया।42.44 किग्रा में मेरठ की दीशिका चौधरी ने कानपुर उत्तर की नूर ऐयानी खान को हराया44.46 किग्रा में मेरठ की खुशी तोमर ने कानपुर उत्तर की कनीज आयशा को हराया46.48 किग्रा में कानपुर दक्षिण की उर्वी सोनी ने मेरठ की कार्वी यादव को हराया48.50 किग्रा में प्रयागराज जोन की आरना मिश्रा ने कानपुर दक्षिण की मन्नत कुशवाहा को हराया54.57 किग्रा में लखनऊ जोन बी की शबी अली ने कानपुर दक्षिण की वैष्णवी गुप्ता को हराया57.60 किग्रा में कानपुर दक्षिण की जैहरा नूर ने लखनऊ जोन बी की तनु सिंह को हराया।60.63 किग्रा में कानपुर दक्षिण की भानु गौतम ने मेरठ की अवनी को हराया63.66 किग्रा में कानपुर उत्तर की राधिका खन्ना ने कानपुर दक्षिण की नौशीन बेगम को हराया अंडर.19 बालिका वर्ग–1.44 किग्रा भार वर्ग में लखनऊ जोन ए की हर्षिता तिवारी ने कानपुर दक्षिण की वंशिका गुप्ता को हराया60.64 किग्रा में मेरठ की तन्वी मणि ने कानपुर दक्षिण की माही दुबे को हराया।

क्विक न्यूज

पुणेरी पलटन की जीत में अयहिका ने विश्व नंबर 13 स्जोक्स को दी शिकस्त

चेन्नई। अयहिका मुखर्जी ने दुनिया की 13वें नंबर की खिलाड़ी और तीन बार की ओलंपियन बर्नडिट स्जोक्स को शिकस्त दी जिससे पुणेरी पलटन ने शुक्रवार को यहां अहमदाबाद एसजी पाइपर्स पर 10-5 की शानदार जीत के साथ अल्टीमेट टेबल टेनिस (यूटीटी) में अपने अभियान की शानदार शुरुआत की। इस साल की शुरुआत में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी सुन यिंग्शा को हराने वाली अयहिका ने रोमानिया की खिलाड़ी पर दबाव बढ़ाते हुए 3-0 से शानदार जीत दर्ज की। उन्होंने 11-7, 11-5, 11-6 से मुकाबला अपने नाम किया। प्रतियोगिता की शुरुआत दोनों टीमों के कप्तानों, जोआओ मोंटेइरो और मानुष शाह के बीच मुकाबले साथ हुई। पुरुष एकल के इस मैच को दुनिया के 92वें नंबर के खिलाड़ी मानुष ने पहला गेम गंवाने के बाद वापसी करते हुए लगातार दो गेम में जीत के साथ अहमदाबाद की टीम को को अच्छी शुरुआत दिलाई। अयहिका ने इसके बाद स्जोक्स को हराकर पुणेरी पलटन की वापसी कराई।

शादमन शतक से चूके, बांग्लादेश के पांच विकेट पर 316 रन

रावलपिंडी (पाकिस्तान)। सलामी बल्लेबाज शादमन इस्लाम (93 रन) के वापसी में शतक से चूकने के बावजूद बांग्लादेश ने शुक्रवार को यहां पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट के तीसरे दिन स्टंप तक पहली पारी में पांच विकेट पर 316 रन बना लिए। करीब 30 महीने बाद अपना पहला टेस्ट खेल रहे शादमन साढ़े पांच घंटे तक क्रीज पर डटे रहे जिन्हें चाय से पहले मोहम्मद अली (42 रन देकर एक विकेट) ने बोल्ड किया। बांग्लादेश अब भी पाकिस्तान से 132 रन से पिछड़ रहा है। घरेलू टीम ने मोहम्मद रिजवान और सउद शकील के शतकों की बदौलत अपनी पहली पारी छह विकेट पर 448 रन बनाकर घोषित की थी। स्टंप तक मुश्फिकुर रहीम 55 रन और लिटन दास 52 रन बनाकर क्रीज पर डटे है। इन दोनों ने मिलकर 98 रन की साझेदारी निभाई। दोनों बल्लेबाजों ने शाहीन शाह अफरीदी (55 रन देकर कोई विकेट नही) और नसीम शाह (77 रन देकर एक विकेट) के खिलाफ डटकर बल्लेबाजी की। दास ने 52 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया जिसमे तीन चौके और शाह पर एक छक्का शामिल था।

रेसिंग से प्रेरित होकर लाई नई तकनीकी

नई दिल्ली। रियलमी, भारतीय युवाओं के बीच सबसे लोकप्रिय ब्रांड है। रियलमी 13 सीरीज़ 5जी की लॉन्च की घोषणा कर दी है। स्मार्टफोन उद्योग में बेजोड़ स्पीड के साथ मानकों को फिर से परिभाषित किया। डाइमेंशन 7300 एनर्जी 5जी चिपसेट, 80वाट अल्ट्रा चार्ज और 26जीबीतक डायनामिक रैम के साथ तिकड़ी विस्तार 256जीबी रियलमी, 13 सीरीज 5जी गुरुवार, 29 अगस्त 2024 को 12 बजे लॉन्च होने के लिए तैयार है। नई श्रृंखला में मीडियाटेक डाइमेंशन 7300 एनर्जी 5जी की सुविधा वाला पहला स्मार्टफोन भी होगा चिपसेट उन्नत 4एनएम प्रक्रिया प्रौद्योगिकी पर निर्मित, यह उत्कृष्ट शक्ति प्रदान करने के लिए तैयार है दक्षता और सुचारू मल्टीटास्किंग और गेमिंग अनुभव सुनिश्चित करना। रियलमी 13 सीरीज़ 5जी अपने डिज़ाइन में गति और प्रदर्शन का प्रतीक है। रेसिंग गेम्स से प्रेरणा लेती है, जिसमें एक गतिशील, स्पीडी कर्व शामिल है, के नीचे तत्व कैमरा मॉड्यूल. रेसट्रैक जैसा दिखने वाला यह डिज़ाइन विकल्प, गति और गति की भावना को और अधिक जागृत करता है गतिशील रंग विकल्पों पर जोर दिया गया। डिज़ाइन, विस्तारित गेमिंग सत्र के दौरान भी आरामदायक संचालन सुनिश्चित करना।

शेन वार्न के निधन से लगा कि जैसे परिवार का कोई सदस्य खो दिया: कुलदीप यादव

मेलबर्न। भारत के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव ने खुलासा किया है कि दो साल पहले ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज शेन वार्न के निधन से उन्हें लगा कि जैसे उन्होने अपने परिवार का कोई सदस्य खो दिया क्योंकि उनका हमेशा मानना था कि उनके बीच एक मजबूत रिश्ता था। ऑस्ट्रेलिया की संक्षिप्त पारिवारिक यात्रा पर आए कुलदीप ने अपने आदर्श क्रिकेटर के घरेलू मैदान प्रतिष्ठित मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) का दौरा किया, जहां उन्होने स्टेडियम के बाहर वार्न की प्रतिमा के साथ फोटो खिंचवाई। कुलदीप ने कहा, शेन वार्न मेरे आदर्श थे और मेरा उनके साथ बहुत गहरा रिश्ता था। जब भी मै वार्न के बारे मे सोचता हूं तो मै भावुक हो जाता हूं। ऐसा लगता है जैसे मैने अपने परिवार से किसी को खो दिया है। उन्होंने हालांकि ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज लेग स्पिनर के साथ अपने संबंधो के बारे मे विस्तार से नही बताया। वार्न का 2022 मे थाईलैंड मे छुट्टियां बिताने के दौरान दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था। टी20 विश्व कप विजेता भारतीय टीम के सदस्य रहे कुलदीप की यह यात्रा 22 नवंबर को पर्थ मे शुरू होने वाली बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी से कुछ महीने पहले हो रही है।

टेस्ट क्रिकेट को बचाने के लिए अलग से कोष तैयार करने पर विचार कर रहा है आईसीसी

सिडनी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) टेस्ट क्रिकेट के लिए कम से कम 150 लाख अमेरिकी डॉलर का अलग से कोष तैयार करने पर विचार कर रहा है जिससे खिलाड़ियों की मैच फीस बढ़ाने मे मदद मिलेगी और उन्हे केवल आकर्षक टी20 फ्रेंचाइजी लीग पर ध्यान केंद्रित करने से रोका जा सकेगा। सिडनी मार्निंग हेराल्ड की रिपोर्ट के अनुसार क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने इस तरह का प्रस्ताव रखा है जिसे भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह और इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) का समर्थन हासिल है। शाह अभी आईसीसी अध्यक्ष बनने की दौड़ मे सबसे आगे है। इस कोष से टेस्ट क्रिकेटरों की न्यूनतम मैच फीस मे बढ़ोतरी होगी और यह विदेशी दौरों पर टीमों को भेजने की लागत को कवर करेगा। इससे वेस्टइंडीज जैसे क्रिकेट बोर्ड को मदद मिलेगी जिसके खिलाड़ी के टेस्ट क्रिकेट के बजाय वैश्विक टी20 प्रतियोगिताओ में खेलने को प्राथमिकता दे रहे है।

भारत के खिलाफ श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहते हैं कैमरन ग्रीन

सिडनी। न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने बल्लेबाजी प्रदर्शन से उत्साहित ऑस्ट्रेलिया के ऑल राउंडर कैमरन ग्रीन भारत के खिलाफ 22 नवंबर से उनके घरेलू मैदान पर्थ मे शुरू होने वाली पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला मे बल्ले और गेंद दोनो से महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहते है। ऑस्ट्रेलिया 2014-15 के बाद पहली बार बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी जीतने की कवायद में है। भारत ने पिछली चार श्रृंखलाएं जीती है। उसने इस बीच 2018-19 और 2020-21 मे ऑस्ट्रेलिया को उसकी धरती पर हराया था। यह दोनो देश पिछले तीन दशक मे पहली बार पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला खेलेंगे।ग्रीन ने क्रिकेट.कॉम.एयू से कहा, निश्चित रूप से इस समय मै जितना संभव हो उतना अधिक योगदान देकर खुश हूं। मै ऐसा करने के लिए शारीरिक रूप से वास्तव मे बहुत अच्छी स्थिति मे हूं। मै और मिच (मार्श) हमेशा इस बात को लेकर हंसी मजाक करते है कि 70वें और 80वें ओवर के बीच जब गेंद कुछ नही कर रही होती है तो उन ओवरों मे कौन गेंदबाजी करेगा।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी–33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोनः 0522–4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादकः शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।